केन्द्रीय विद्यालय संगठन

पटना संभाग

कक्षा - दशम

हिन्दी

अध्ययन सामग्री 2023 – 24

सी0 बी0 एस0 ई0 के नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित

संरक्षक

श्री अनुराग भटनागर

उपायुक्त, के० वि० संगठन पटना संभाग

हमारे प्रेरक

श्रीमती सोमा घोष
सहायक आयुक्त ,
के० वि० सं0 पटना संभाग

श्री मनीष कुमार प्रभात
सहायक आयुक्त ,
के० वि० सं0 पटना संभाग

श्री पूर्णेंदु मण्डल
सहायक आयुक्त ,
के० वि० सं0 पटना संभाग

संयोजक

श्री बी. राम

प्राचार्य , के० वि० मोतिहारी

संसाधक

क्र.सं.	शिक्षक / शिक्षिका का नाम	पद	केन्द्रीय विद्यालय का नाम
1	श्री पंकज कुमार	प्र.स्ना.शि. (हिन्दी)	दरभंगा नं.–2 (आई.टी.आई)
2	श्री पी0 के0 सिंह	प्र.स्ना.शि. (हिन्दी)	गया नं0 –1
3	श्री अभिषेक कुमार	प्र.स्ना.शि. (हिन्दी)	खगौल
4	श्रीमती वर्षा शालनी	प्र.स्ना.शि. (हिन्दी)	मुजफ्फरपुर (प्रथम पाली)
5	श्री ओम प्रकाश ओम	प्र.स्ना.शि. (हिन्दी)	पटना नं0–1 कंकड़बाग (द्वितीय पाली)

विषय सूची

क्र0 सं0	पाठ	पेज सं0
	क्षितिज भाग- 2	
1.	सूरदास	1--6
2.	तुलसीदास (राम- लक्ष्मण – परशुराम संवाद)	7-14
3.	जयशंकर प्रसाद (आत्मकथ्य)	15-17
4.	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (उत्साह) (अट नही रही है)	 18-19 20-21
5.	नागार्जुन (यह दन्तुरित मुस्कान) (फसल)	 22-23 24-27
6.	मंगलेश डबराल (संगतकार)	28-31
7.	स्वयं प्रकाश (नेता जी का चश्मा)	32-36
8.	रामवृक्ष बेनीपुरी (बाल गोविन भगत)	37-44
9.	यशपाल (लखनवी अंदाज)	45-51
10.	मन्नू भंडारी (एक कहानी यह भी)	52-60
11.	यतीन्द्र मिश्र (नौबतखाने में इबादत)	61-66
12.	भदंत आनंद कौशल्यायन (संस्कृति)	67-70
	कृतिका भाग – 2	
13.	शिवपूजन सहाय (माता का अंचल)	71-72
14.	मधु कांकरिया (साना -साना हाथ जोडि.)	73-75
15.	अज्ञेय (मैं क्यों लिखता हूँ)	76-79
16.	लेखन खण्ड	80-110
17.	व्याकरण	111-139
18.	प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र एवं अंक योजना (02 सेट)	141-178

क्षितिज – भाग 2

काव्य खण्ड

1- पद (सूरदास)

पाठ का सारांश

भक्तिकाल के कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि सूरदास द्वारा रचित 'सूरसागर' ग्रंथ के 'भ्रमरगीत' से चार पद पाठ में लिए गए हैं। श्री कृष्ण ने मथुरा जाकर गोपियों को कोई संदेश नहीं भेजा, जिस कारण गोपियों की विरह-वेदना और बढ़ गई। श्री कृष्ण ने अपने मित्र उद्धव के माध्यम से गोपियों के पास निर्गुण ब्रह्म एवं योग का संदेश भेजा ताकि गोपियों की पीड़ा को काम किया जा सके। गोपियाँ ज्ञानमार्ग की वजह प्रेममार्ग को पसंद करती थी। इस कारण उन्हें उद्धव का शुष्क संदेश पसंद नहीं आया तभी वहां एक भ्रमर आ जाता है गोपियों ने व्यंग्य (कटाक्ष) के द्वारा उद्धव से अपने मन की बातें कहीं इसलिए उद्धव और गोपियों का संवाद 'भ्रमरगीत' नाम से प्रसिद्ध है।

पहले पद में जहां गोपियाँ उद्धव को 'बड़भागी' कहकर व्यंग्य करती हैं कि वह कृष्ण के प्रेम से अछूते ही रहे हैं। यदि कृष्ण के प्रेम रूपी धागे से बंधते तो गोपियों की पीड़ा समझते। दूसरे पद में गोपियों रहती हैं कि उनके मन की इच्छा मन में ही है। गोपियों को इस बात की पूरी आशा थी कि कृष्ण ब्रज लौटकर एक दिन अवश्य आएंगे लेकिन कृष्ण ने स्वयं ना आकर ऊधो के साथ ज्ञान का संदेश भेज दिया। ऊधो के आने से उनकी सारी आशा निराशा में बदल गई। तीसरे पद में गोपियों कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम प्रकट करते हुए कृष्ण के कृष्ण को हारिल की लकड़ी बताती हैं जिन्हें मन, कर्म वचन से पकड़कर रखा है। चौथे पद में गोपियों उद्योग को ताना मारती है कि कृष्णा पहले ही चतुर थे और अब बड़े ग्रंथ पढ़ कर उनकी बुद्धि और भी बढ़ गई है। अतः अंत में सूरदास जी गोपियों के माध्यम से राजा का धर्म भी बताया है।

पठित काव्यांश

प्रश्न-1 नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर वैकल्पिक प्रश्नों का उत्तर दीजिए-

ऊधो, तुम हो अति बड़भागी।

अपरस रहत स्नेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।

पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।

ज्यों जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।

प्रीति-नदी में पाँव बोरयौ, दृष्टि में रूप पराग।

सूरदास अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यों पागी।।

1-प्रस्तुत काव्यांश में उद्धव के व्यवहार की तुलना किस की गई है?

क) कमल का पत्ता

ख) गुड़ और चींटी

ग) प्रीति नदी

घ) स्नेह का धागा

2- काव्यांश में बड़भागी कहकर किस पर व्यंग्य किया गया है?

क) गोपियाँ

ख) कृष्ण

ग) उद्धव

घ) सूरदास

3-'प्रीति नदी में पाँऊ न बोरयौ' पंक्ति में निहित अलंकार है?

क) अनुप्रास

ख) रूपक

ग) श्लेष

घ) मानवीकरण

4-'गुर चाँटी ज्यों पागी' में गुड़ किसे बताया है?

क) गोपियाँ

ख)उद्धव

ग)श्रीकृष्ण

घ)तेल का घड़ा

5-प्रस्तुत काव्यांश की भाषा कौन सी है?

क) हिंदी

ख) अवधी

ग) संस्कृत

घ) ब्रज

बहुविकल्पीय प्रश्न

पद-दो

प्रश्न-1 'मन की मन ही माँझ रही' का क्या अर्थ है?

क) मन की दृढ़ता

ख) मन की बात मन में ही रहना

ग) मन का भेद

घ) मन का पाप

प्रश्न-2 गोपियाँ कौन-सी बात किसे बताना चाहती थी? क)अपने मन की बात श्री कृष्ण को

ख) अपने मन की बात उद्धव को

ग) संसार के व्यवहार की बात अक्रूर को

घ) समाज की बात नंद को

प्रश्न-3 उद्धव गोपियों को कौन सा संदेश देता है?

क) प्रेम का

ख) योग का

ग) मोक्ष-प्राप्ति का

घ) भक्ति का

प्रश्न-4 योग संदेश का गोपियों पर क्या प्रभाव पड़ा?

क) गोपियाँ प्रसन्न हो गई

ख) वे खिन्न हो उठीं

ग) उन्हें कृष्ण का प्रेम मिल गया

घ) वे विरह से व्यथित हो उठीं

प्रश्न-5 किसने प्रेम की मर्यादा का उल्लंघन किया है?

क)गोपियों ने

ख)उद्धव ने

ग)राजा ने

घ)कृष्ण ने

बहुविकल्पीय प्रश्न

पद-तीन

प्रश्न-1 'मन चकरी' से क्या अभिप्राय है?

क) मन की चालाकी

ख) मन का चक्र

ग) मन की अस्थिरता

घ) मन की स्थिरता

प्रश्न-2 गोपियों ने हरि (श्री कृष्ण) की तुलना किस की है?

क)गिद्ध से

ख)बाज से

ग)हारिल से

घ)कबूतर से

प्रश्न-3 सोते जागते रात दिन किसका ध्यान करती हैं? क)श्री कृष्ण का

ख)उद्धव का

ग)कंस का

घ)बलराम का

प्रश्न-4 गोपियाँ 'कड़वी-ककरी' किसे कहती हैं?

क)ककड़ी को

ख)श्री कृष्ण को

ग)यशोदा को

घ)उद्धव द्वारा दिए गए योग संदेश को

प्रश्न-5 योग का संदेश किन्हें बुरा लगता है?

क)उद्धव को

ख)कृष्ण को

ग)यशोदा को

घ)गोपियों को

बहुविकल्पीय

पद-चार

प्रश्न-1 पुराने जमाने के लोगों को भला क्यों कहा गया है?

क)दूसरों की भलाई करने के कारण

ख) स्वार्थ के कारण

ग)चालाकी के कारण

घ)संभाव रहने के कारण

प्रश्न-2 गोपियों के अनुसार पहले ही चतुर कौन था?

क)बलराम

ख)श्री कृष्ण

ग)कंस

घ)उद्धव

प्रश्न-3 गोपियों के अनुसार राज-धर्म क्या है?

क) प्रजा को परेशान करना

ख)राजा प्रजा से कोई मतलब न रखें

ग)प्रजा को नहीं सतना

घ)प्रजा का ध्यान न रखना

प्रश्न-4 चौथे पद में किस पर व्यंग्य किया गया है ?

क) बलराम

ख) श्री कृष्ण

ग) कंस

घ उद्धव

प्रश्न-5 'मधुकर' शब्द का क्या अर्थ है?

क)बलराम ख)भंवरा

ग)कृष्ण घ)उद्धव

वर्णनात्मक प्रश्न-उत्तर

प्रश्न-1 सूरदास के पद के अनुसार गोपियाँ के जीने का क्या आधार था?

उत्तर- गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम था। उनके विरह से गोपियाँ अत्यंत व्याकुल थीं। कृष्ण के वृंदावन आने की आशा ही उनके जीवन का आधार था।

प्रश्न-2 पठित पाठ के आधार पर सूर्य की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए?

उत्तर-गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम था उनके मथुरा चले जाने से गोपिया अत्यंत व्याकुल थी कृष्ण के वृंदावन लौटने की आशा ही उनके जीवन का एकमात्र आधार था।

प्रश्न-3 गोपियों ने अपने लिए कृष्ण को हारिल की लकड़ी के समान क्यों बताया?

उत्तर-गोपिया ने अपने लिए कृष्ण को हारिल की लकड़ी के समान इसलिए बताया है क्योंकि जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पंजे में दबी लकड़ी को आधार मानकर उड़ता है, उसी प्रकार गोपियों ने अपने जीवन का आधार कृष्ण को मान रखा है।

प्रश्न-4 ऐसी कौन सी बात थी जिसे गोपियों को अपने मन में दबे रहने के लिए विवश होना पड़ा?

उत्तर- गोपिया चाहती थी कि श्री कृष्ण के दर्शन करें और अपने प्रेम की अभिव्यक्ति उनसे करें। वह इन बातों को उद्धव से नहीं कर सकती थी। यही बात उनके मन में दबी रह गई।

प्रश्न-5 कमल के पत्ते और तेल की गागरी की क्या विशेषता होती है?

उत्तर-कमल का पत्ता इतना चिकना होता है कि पानी की बूंद उसे पर ठहर नहीं सकती है इसलिए कमल का पत्ता पानी में रहने पर भी गिला नहीं होता इसी प्रकार तेल लगी गागर को मुझसे पानी में डुबाया जाता है तो उससे भी अपनी छू नहीं पाता है और वह सूखी की सूखी रह जाती है।

प्रश्न-6 गोपियों ने स्वयं को अबला और भोली कहा है। आपकी दृष्टि से उनका ऐसा कहना कितना उपयुक्त है? उत्तर-गोपियों ने स्वयं को अबला और भोली कहा है पर मेरी दृष्टि में ऐसा नहीं है। गोपिया कृष्ण से दूर रहकर भी उनके प्यार में अनुरक्त हैं। वे स्वयं को कृष्ण के प्रेम बंधन में बंधी पाती हैं जिसे कृष्ण से इस तरह का प्रेम मिल रहा हो वह अबला और भोली नहीं हो सकती हैं।

प्रश्न-7 प्रीति नदी में पाँव न बोरयो का आशय स्पष्ट कीजिए। ऐसा किसके लिए कहा गया है?

उत्तर- प्रीति नदी में पावना बोरयो का आशय है प्रेम रूपी नदी में पर न डूबाना अर्थात किसी से प्रेम न करना और प्रेम का महत्व न समझना ऐसा उद्धव के लिए कहा गया है जो कृष्ण के पास रहकर भी उनके प्रेम से अछूते बने रहें।

प्रश्न-8 गोपियाँ किस आधार पर विरह व्यथा सह रही थीं?

मथुरा जाते समय श्रीकृष्ण ने गोपियों से एक निश्चित समय सीमा की ओर संकेत करके कहा था कि इतने समय बाद ब्रज वापस आ जाएंगे। उसी आने की अवधि को आधार बनाकर गोपिया तन और मन की विरह सा रही थीं।

प्रश्न 9 गोपियों को मदद मिलने की आशा कहां लगी थी? उनकी यह आशा निराशा में कैसे बदल गई ?

उत्तर-गोपिया जो विरह व्यथा में जी लेने को विवश थी, क्योंकि श्री कृष्ण की ओर से दर्शन और प्रेम संदेश के रूप में मदद मिलने की आशा लगी थी पर जब कृष्ण ने उद्धव के हाथों योग का संदेश भिजवाया तो उनकी यह आशा निराशा में बदल गई।

प्रश्न 10 गोपियाँ अब धैर्य क्यों नहीं धारण रखना चाहती हैं ?

उत्तर-गोपियों को कृष्ण की ओर प्रेम के प्रतिदान और शीघ्र आकर दर्शन देने की आशा लगी थी। उन्होंने कृष्ण का प्रेम पाने के लिए सामाजिक मर्यादा की परवाह नहीं की।इसके विपरीत श्री कृष्ण ने प्रेम की मर्यादा का निर्वाह नहीं किया। इस कारण उद्धव गोपियों के पास जिस उद्देश्य से आए, उसमें सफल नहीं हो सके और गोपियों देर नहीं धारण करना चाहती हैं।

2. तुलसीदास

राम-लक्ष्मण-परशुराम-संवाद

कवि-परिचय

साहित्य के भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि **गोस्वामी तुलसीदास** को हिंदी साहित्य का 'सूर्य' कहा जाता है। इनका जन्म सन 1532 में उत्तर-प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर नामक गाँव में हुआ था। तुलसी जी के काव्य का विषय मर्यादा पुरुषोत्तम राम की भक्ति है। अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं पर इनका समान अधिकार है। 'श्रीरामचरितमानस' अवधी में तथा 'विनय पत्रिका' एवं 'कवितावली' ब्रजभाषा में रचित है। प्रबंध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यों का उत्कृष्ट रूप इनकी रचनाओं में मिलता है। 'गीतावली', 'कवितावली', 'विनयपत्रिका', 'बरवै रामायण', 'हनुमान-बाहुक', 'वैराग्य संदीपनी' आदि इनकी मुख्य रचनाएँ हैं।

पाठ-परिचय

'राम-लक्ष्मण-परशुराम-संवाद' नामक यह पाठ श्रीरामचरितमानस के बालकांड से लिया गया है। राजा जनक द्वारा आयोजित सीता-स्वयंवर में श्री राम शिव धनुष तोड़ देते हैं। जब परशुराम को यह समाचार मिलता है, तो वे आग बबूला हो जाते हैं। सभा में आकर शिव-धनुष तोड़ने वाले को मार डालने की धमकी देते हैं। श्रीराम की विनम्रता तथा गुरु विश्वामित्र के समझाने पर वे शांत हो जाते हैं। राम-लक्ष्मण और परशुराम के बीच जो संवाद हुआ, उसी प्रसंग को यहाँ प्रस्तुत किया गया है। क्रोधित परशुराम के कटु वचनों का उत्तर लक्ष्मण व्यंग्य बाणों से देते हैं, जिससे परशुराम का क्रोध और बढ़ जाता है। अंत में ऋषि विश्वामित्र के द्वारा परशुराम को समझाने तथा श्री राम के शीतल वचनों से परशुराम का क्रोध शांत हो जाता है।

संभावित प्रश्न और उनके उत्तर

1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

अथवा,

लक्ष्मण ने धनुष टूटने के किन कारणों की संभावना व्यक्त करते हुए राम को निर्दोष बताया ?

उत्तर: धनुष के टूट जाने पर लक्ष्मण ने तर्क देते हुए कहा कि ऐसे धनुष तो बचपन में हमने कई तोड़े हैं। इस धनुष पर आपकी ममता किस कारण से है ? पुराने धनुष को तोड़ने से क्या लाभ-हानि ? श्रीराम ने तो इसे नए के भ्रम से देखा था, यह तो छूते ही टूट गया। इसमें भ्राता श्रीराम का कोई दोष नहीं।

2. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुई, उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: श्रीराम के स्वभाव की विशेषताएँ-

- श्रीराम विनयी तथा विनम्र हैं।
- वे स्वयं को परशुराम का दास बताते हैं।
- वे बहुत कम बोलते हैं तथा शांत स्वभाव के हैं। वे लक्ष्मण को भी शांत रहने के लिए कहते हैं।
- वे ऋषि-मुनियों का सम्मान करते हैं।

लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ-

- लक्ष्मण उग्र स्वभाव के हैं।
- वे वीर एवं साहसी हैं।
- वे परशुराम के क्रोध और फरसे से नहीं डरते।
- उनकी भाषा व्यंग्यपूर्ण है।
- वे किसी भी प्रकार के अन्याय को सहन नहीं कर पाते।
- वे स्वभाव से तर्कशील हैं।

3. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई? अथवा, लक्ष्मण ने शूरवीरों के क्या गुण बताए हैं?

उत्तर: लक्ष्मण ने परशुराम जी से कहा कि वीर योद्धा व्यर्थ ही अपनी वीरता की डींगें नहीं मारते, बल्कि कुछ कर दिखाते हैं। वीर वीरता के व्रत को धारण करने वाले धैर्यवान और क्षोभ रहित होते हैं। वे शत्रु को सामने पाकर अपनी प्रशंसा स्वयं न करके अपनी वीरता का प्रदर्शन करते हैं।

4. साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो, तो बेहतर है। 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' की पृष्ठभूमि में इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: यह कथन पूर्णतः सत्य है। साहस और शक्ति 'विनम्रता' के अभाव में व्यर्थ है। परशुराम शक्तिशाली तथा साहसी हैं। धरती को क्षत्रिय राजाओं से रहित करना निःसंदेह शक्तिशाली का ही काम हो सकता है, पर स्वभाव में विनम्रता न होने के कारण वे सम्मानीय नहीं बन पाते। उनका बाल- ब्रह्मचारी रूप तथा महापराक्रमी योद्धा होना भी हृदय को प्रभावित नहीं कर पाता। इसी प्रकार लक्ष्मण वीर हैं। परशुराम के फरसे से न डरना उनके साहस को ही दर्शाता है, किंतु भरी सभा में परशुराम से तर्क करके वे सभी को अपनी आलोचना करने के लिए विवश करते हैं। इन दोनों के विपरीत श्रीराम साहस व शक्ति के भंडार हैं, किंतु कहीं भी विनम्रता नहीं खोते। अंततः उनकी विनम्र वाणी ही परशुराम की क्रोधाग्नि को खत्म करने में 'जल' का कार्य करती है। वस्तुतः राम के हाथ में धनुष तथा वाणी में विनम्रता यही सिद्ध करते हैं कि साहस और शक्ति के साथ विनम्रता होना बेहतर है।

5. पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा-सौंदर्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

उत्तर: तुलसी का भाषा-सौंदर्य-

• प्रस्तुत प्रसंग शुद्ध साहित्यिक अवधी भाषा में रचित है। दोहा-चौपाई छंद शैली अपनाई गई है।

• वीर रस की प्रधानता है।

• व्यंग्योक्तियाँ और व्यंजना शैली की सरस अभिव्यक्ति हैं।

• अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है- 'सकल संसार', 'हसि हमरे', 'काज करिअ कत', 'सठ सुनेहि सुभाउ', 'बालकु बोलि बधौं', 'जड़ जानहि', 'बाल ब्रह्मचारी' तथा 'भुजवल भूमि भूप' आदि।

• 'सहस्रबाहु सम सो रिपु मोरा', 'धनुही सम त्रिपुरारिधनु' तथा 'बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु' में

उपमा अलंकार है।

• 'रघुकुल भानु' में रूपक अलंकार है।

. 'पुनि-पुनि' तथा 'बार-बार' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

• 'सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

6. इस पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है। उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ के पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है, जो लक्ष्मण के वचनों के माध्यम से प्रकट किया गया है।

- जब शिव-धनुष के टूटने पर परशुराम क्रोधित होते हैं, लक्ष्मण कहते हैं कि उन्होंने बचपन में ऐसी बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ डालीं, तब मुनिवर ने क्रोध नहीं किया, फिर अब क्रोध क्यों करते हैं। यहाँ लक्ष्मण उनके शिवजी के धनुष को साधारण धनुष कहकर उन्हें क्रोध करने के लिए उकसाते हैं।
- परशुराम की शक्ति पर व्यंग्य करते हुए लक्ष्मण जी कहते हैं। कि वे फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं, जो कि संभव नहीं है। वे यह भी कहते हैं कि भ्राता श्रीराम और वे स्वयं काशीफल के कच्चे फूल की तरह कमजोर नहीं हैं, जो तर्जनी को देखते ही मुरझा जाएँ।

- परशुराम के बड़बोलेपन पर व्यंग्य करते हुए लक्ष्मण कहते कि वे अपनी प्रशंसा अपने आप ही कर रहे हैं, जबकि वीर अपनी प्रशंसा कभी नहीं करते। परशुराम अपनी वीरता का बखान स्वयं ही कर रहे हैं, जबकि वीर पुरुष वीरता के कामों से अपना परिचय देते हैं।
- परशुराम का कभी वीर योद्धाओं से नहीं हुआ इसलिए वे अपने घर में ही श्रेष्ठ हैं।

7. "सामाजिक जीवन में क्रोध की ज़रूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो, तो मनुष्य दूसरे के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत-से कष्टों की चिर-निवृत्ति का उपाय ही न कर सके।" आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का यह कथन इस बात को पुष्टि करता है कि क्रोध हमेशा नकारात्मक भाव के लिए नहीं होता, बल्कि कभी-कभी सकारात्मक भी होता है। इसके पक्ष या विपक्ष में अपना मत प्रकट कीजिए।

उत्तर: पक्ष- जीवन में अपने अधिकारों की माँग के लिए क्रोध बहुत जरूरी है। इससे अन्याय का मुकाबला किया जा सकता है। क्रोध भी एक भाव है, जिसका उचित अवसर पर प्रयोग सकारात्मक होता है। किसी के प्रति अन्याय को रोकना या अपने अधिकार के लिए क्रोध करना क्रोध का सकारात्मक रूप है।

विपक्ष- ज़रूरी नहीं कि क्रोध धारण कर के ही अपने अधिकारों की माँग पूरी होती हो। कभी-कभी शांत भी व्यक्ति को उसके अधिकार दिलाने में सहायक होता है। क्रोध एक अवगुण यह विवेक के नाश का कारण माना जाता है। क्रोध एक ऐसा शत्रु है, जो मनुष्य के विवेक को नष्ट कर देता है। यह शरीर और मन को बुरा बना देता है। क्रोध में आकर व्यक्ति अन्याय भी कर देता है। क्रोध मनुष्य को अहंकारी बना देता है।

8. परशुराम के प्रति लक्ष्मण के व्यवहार पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: परशुराम ने सभा में जो किया, वह अनुचित था, क्योंकि उन्होंने जो भी कहा, वह अहंकार वश क्रोध में कहा था। इसलिए लक्ष्मण का व्यवहार भी उचित ही था, हाँ उन्हें थोड़ी विनम्रता व कोमल शब्दों का प्रयोग करना चाहिए था। लक्ष्मण ने स्वाभिमान में ठीक परशुराम के में ही प्रत्युत्तर दिया।

9. 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ के आधार पर बताइए कि सभा ने किस बात को अनुचित कहा और क्यों ?

उत्तर: सभा ने लक्ष्मण के द्वारा परशुराम का उपहास उड़ाने तथा उन्हें कटुवचन कहने को अनुचित कहा। क्रुद्ध लक्ष्मण ने उन्हें गुरु ऋण चुकाने का ताना दिया तथा उन पर यह व्यंग्य भी किया कि आप अपने घर में ही श्रेष्ठ होंगे, आपका किसी अच्छे योद्धा से मुकाबला नहीं हुआ होगा और मैं आपको ब्राह्मण समझकर छोड़ रहा हूँ। लक्ष्मण की अपरिपक्व तीखी बातें सभा में उपस्थित जनों को अनुचित लगीं, क्योंकि किसी बड़े व्यक्ति का इस प्रकार अपमान करना कदापि शोभनीय नहीं होता।

10. परशुराम श्रीराम को अपना सेवक मानने से इंकार क्यों करते हैं?

उत्तर: परशुराम जी के अनुसार सेवा संबंधी कार्य करने वाला ही सेवक है। श्रीराम ने उनके इष्टदेव शिव का धनुष तोड़ने का अपराध किया है। ऐसा करना शत्रुतापूर्ण कार्य है। ऐसे कार्य सेवा की श्रेणी में नहीं आते, अतः वे श्रीराम को सेवक मानने से इंकार करते हैं।

11. 'इहाँ कुम्हड़बतियाँ कोउ नाहीं' की उक्ति के द्वारा लक्ष्मण परशुराम से क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर: परशुराम जी द्वारा बार-बार लक्ष्मण का वध करने की बात कहने पर लक्ष्मण कहते हैं कि यहाँ कोई कुम्हड़े का कच्चा (छोटा) फल नहीं है, जिसे तर्जनी उँगली दिखाकर मारा जा सकता है। कुम्हड़े का छोटा कच्चा फल तर्जनी के दिखाने पर मुरझाकर नष्ट हो जाता है। लक्ष्मण कहते हैं कि वे भी सूर्यवंशी और वीर हैं, कुठार को देख डरने वालों में से नहीं हैं।

12. परशुराम के अत्यंत क्रोधित होने का कारण क्या था?

उत्तर: सीता स्वयंवर में श्रीराम ने शिव-धनुष को तोड़ दिया। परशुराम शिवभक्त थे और शिव को अपना आराध्य मानते थे। उन्हें लगा शिव-धनुष को तोड़कर राम ने उनके आराध्य का अपमान किया है। पहले तो वे केवल क्रोधित थे, पर लक्ष्मण की व्यंग्योक्तियाँ सुन उनके क्रोध की सीमा न रही।

13. परशुराम की क्रोधाग्नि को देखकर विश्वामित्र मन ही मन क्या सोच रहे थे? काव्यांश के आधार पर लिखिए।

उत्तर: परशुराम लक्ष्मण के कटुवचनों से क्रोधित होकर विश्वामित्र को कहने लगे कि उसके अपराधों को बालक समझकर क्षमा कर रहे हैं और विश्वामित्र के विनम्र स्वभाव के कारण उसे जीवित छोड़ रहे हैं। परशुराम के वचन सुनकर विश्वामित्र मन-ही-मन हँसकर यह सोचने लगे कि मुनि परशुराम अब तक अनेक क्षत्रियों को पराजित करने के कारण सबको एक समान समझ रहे हैं। श्रावण माह में हुए अंधे की तरह मुनि को सब हरा-ही-हरा दिख रहा है। लोहे से बनी खड्ग को वे गन्ने से बनी खाँड़ समझकर अपनी नासमझी प्रदर्शित कर रहे हैं।

14. परशुराम का क्रोध कैसे शांत हुआ?

उत्तर: रघुकुल के सूर्य, श्रीराम के वचन जल के समान शांत करने वाले थे, उन्होंने आँखों से ही लक्ष्मण को कटुवचन बोलने से रोक दिया। इस प्रकार राम के शीतल वचनों से मुनि का क्रोध शांत हुआ।

15. सभा में परशुराम जी ने अपने विषय में क्या कहा?

उत्तर: उन्होंने कहा कि वे बाल-ब्रह्मचारी व अत्यधिक क्रोधी स्वभाव के हैं। संसार जानता है कि वे क्षत्रियों के द्रोही हैं। अपनी इन्हीं भुजाओं के बल पर कई बार धरती को राजाओं से रहित कर चुके हैं। उनका फरसा इतना भयानक है, जो गर्भस्थ शिशुओं का भी नाश कर देता है।

16. लक्ष्मण द्वारा 'परशुराम के शील के संसार में प्रसिद्ध होने' की बात में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर लक्ष्मण ने परशुराम जी को व्यंग्यात्मक वाणी में कहा कि आप का शील तो संसार में प्रसिद्ध है। आप कभी क्रोध भी नहीं करते, जबकि सभी जानते हैं कि परशुराम जी क्रोधी स्वभाव के तथा धैर्यहीन थे।

17. परशुराम जी श्रीराम को सहस्रबाहु के समान शत्रु क्यों मानते थे?

उत्तर: परशुराम जी पितृभक्त और मातृभक्त थे, लेकिन सहस्रबाहु द्वारा पिता की कामधेनु का अपहरण करने व उनका वध करने के कारण परशुराम सहस्रबाहु के शत्रु बने। शिव का धनुष तोड़ने के कारण वे श्रीराम को अपना शत्रु समझने लगे। गुरुभक्त परशुराम की नज़र में राम का यह अपराध अक्षम्य है।

18. आप की नजर में परशुराम का क्रोध करना उचित था या अनुचित ?

उत्तर: श्रीराम के शील स्वभाव व स्वयं को 'दास' कहकर परशुराम जी के समक्ष झुक जाने पर भी उनका क्रोध करना ठीक नहीं है। कारण को बिना जाने क्रोध करना भी अनुचित ही कहा जाएगा। राम द्वारा किन परिस्थितियों में शिवधनुष तोड़ा गया, परशुराम जी द्वारा यह जानना आवश्यक था।

19.. क्रोधित होने पर भी वे लक्ष्मण को छोड़ क्यों देते हैं?

उत्तर: लक्ष्मण की व्यंग्योक्तियाँ सुन अत्यधिक क्रोधित होने पर भी परशुराम लक्ष्मण को छोड़ देते हैं, क्योंकि वे विश्वामित्र जी की विनम्रता और शील स्वभाव से काफ़ी प्रभावित थे। साथ ही वे बाल-हत्या का अपराध भी अपने सिर नहीं लेना चाहते थे।

20. परशुराम जी ने अपने फरसे की क्या विशेषताएँ बताई ?

उत्तर: उनके फरसे ने सहस्रबाहु की भुजाएँ काटीं और धरती को क्षत्रिय से रहित किया। उनका फरसा गर्भस्थ शिशु का भी नाश कर सकने में समर्थ है।

21. परशुराम द्वारा कुठार दिखाने पर लक्ष्मण ने क्या व्यंग्योक्तियाँ कहीं ?

उत्तर: परशुराम द्वारा कुठार दिखाने पर लक्ष्मण ने व्यंग्य भाषा का प्रयोग करते हुए कहा कि आपका बार-बार कुठार दिखाकर मुझे डराना, फूँक मारकर पहाड़ उड़ाने का व्यर्थ प्रयास करना है। हम कोई कुम्हड़े के छोटे फल नहीं हैं, जो तर्जनी मर जाएँगे।

22. लक्ष्मण के क्षमा माँगने पर भी परशुराम का क्रोध क्यों नहीं शांत हुआ?

उत्तर: परशुराम का क्रोध इसलिए शांत नहीं हुआ, क्योंकि लक्ष्मण की क्षमा-याचना में भी व्यंग्य का भाव था, पश्चाताप का नहीं। लक्ष्मण ने ब्राह्मण, गाय, हरिजन और देवता पर हाथ न उठाने की बात कहकर

परशुराम जी के अहं को चोट पहुँचाई, साथ ही उनके वचनों को करोड़ों वज्रों के समान बताकर उनके क्रोध को और अधिक भड़का दिया।

23. लक्ष्मण ने परशुराम जी से किस प्रकार क्षमा-याचना की और क्यों ?

उत्तर: लक्ष्मण ने उन्हें ब्राह्मण और भृगुवंशी जानकर उनसे क्षमा- याचना करना ही उचित समझा। उन्होंने कहा कि यदि आप मारें, तो भी आपके पाँव ही पड़ना चाहिए। लक्ष्मण की क्षमा-याचना में भी व्यंग्य भाव था। उनके अनुसार आपके वचन आपके कुठार से अधिक तेज़ हैं अर्थात आपके वचन करोड़ों वज्रों के समान कठोर हैं।

24. प्रस्तुत काव्यांशों के आधार पर लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: लक्ष्मण उग्र स्वभाव के हैं पर वीर और साहसी हैं। अन्याय सहन नहीं कर सकते इसलिए व्यंग्यात्मक वाणी का प्रयोग करते हैं। वे परशुराम के क्रोध व फरसे से नहीं डरते।

25. पठित पाठ के आधार पर लक्ष्मण के चरित्र की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: लक्ष्मण में वाक्पटुता कूट-कूट कर भरी हुई थी। वे अपने कथनों में ऐसे व्यंग्य बाण छोड़ते हैं कि परशुराम के लिए उनके व्यंग्य असहनीय हो जाते हैं। परशुराम की हर बात तथा उनके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर तर्कशीलता के साथ देना लक्ष्मण के प्रत्येक कथन में दृष्टिगोचर होता है। लक्ष्मण निर्भीक तथा वीर थे। परशुराम के क्रोध तथा बार-बार उनके द्वारा फरसा दिखाकर डराने से भी लक्ष्मण का पौरुष नहीं डिगा। वे निर्भीकता से परशुराम के हर बार का सामना करते रहे। उन्होंने पराक्रमी एवं कायर का अंतर परशुराम को बताकर अपनी निर्भीकता का परिचय दिया।

26. शिव के धनुष को तोड़ने वाले के विरुद्ध परशुराम ने किस प्रकार के व्यवहार का संकल्प व्यक्त किया?

उत्तर: परशुराम जी ने कहा धनुष को तोड़ने वाला सहस्रबाहु के समान उनका शत्रु है। वह इस समाज को छोड़कर अलग हो जाए, नहीं तो वे सभी राजाओं को मार डालेंगे।

27. गाधिसूनु किसे कहा गया है? वे मुनि की किस बात पर मन-ही-मन मुस्कुरा रहे थे?

उत्तर: गाधिसून विश्वामित्र जी को कहा गया है। परशुराम के अभिमान भरे कथन-'कठोर कुठार से राम-लक्ष्मण को काटकर अपने गुरु के ऋण से उऋण हो गया होता।' को सुनकर वे मन-ही-मन मुस्कुरा रहे थे। परशुराम जी श्रीराम और लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय रहे थे। वे नहीं जानते कि श्रीराम-लक्ष्मण अत्यंत शक्तिशाली हैं।

28. स्वयंवर स्थल पर शिवधनुष तोड़ने वाले को परशुराम ने किस प्रकार धमकाया ?

उत्तर: स्वयंवर स्थल पर शिवधनुष तोड़ने वाले श्रीराम को परशुराम ने सहस्रबाहु के समान शत्रु कहकर धमकाया। परशुराम ने धमकी देते हुए कहा कि यदि शिवधनुष तोड़ने वाला राज-समाज से अलग नहीं हुआ, तो वे सभी राजाओं का वध कर डालेंगे।

29. परशुराम की स्वभावगत विशेषताएँ क्या हैं? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर: परशुराम बाल ब्रह्मचारी, अत्यंत क्रोधी, क्षत्रिय कुल के शत्रु, योद्धा तथा ब्राह्मणों के पक्षधर एवं दानी हैं। परशुराम अत्यंत क्रोधी थे। लक्ष्मण को 'रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा' कहा, इससे स्पष्ट होता है कि वे क्रोधी और बड़बोले थे। परशुराम ब्राह्मण कुल के समर्थक तथा दानी थे। धरती को क्षत्रिय राजाओं से विहीन करके उन्होंने जीती हुई भूमि का सुख स्वयं नहीं भोगा, बल्कि उसे ब्राह्मणों को दान में दे दिया।

30. 'क्रोध से बात और अधिक बिगड़ जाती है।' 'राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद' कविता के आलोक में इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर: क्रोध से बात और अधिक बिगड़ने की संभावना रहती है। क्रोधी व्यक्ति की वाणी पर नियंत्रण नहीं होता। प्रत्युत्तर में विपक्षी भी कटु व व्यंग्य वचन सुनाता है। पाठ में भी परशुराम जी के क्रोध करने के कारण लक्ष्मण जी ने भी उनकी अवस्था व पद का ध्यान न रखकर उन्हें कठोर उत्तर दिए, यदि श्रीराम की विनम्रता बीच में न होती, तो न जाने परिणाम क्या हो सकता था ?

सामान्य बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'द्विजदेवता घरहि के बाढ़े'-पंक्ति का क्या आशय है?

(क) परशुराम अपने घर में ही बड़े हुए हैं।

(ख) परशुराम का किसी पराक्रमी योद्धा से पाला नहीं पड़ा है तथा उनको अपनी शक्ति पर अभिमान हो गया है।

(ग) बाहूमण देवता अपने घर में रहकर वीर हो जाते हैं।

(घ) परशुराम अपने घर के लोगों की ही बात समझते हैं।

उत्तर: (ख) परशुराम का किसी पराक्रमी योद्धा से पाला नहीं पड़ा है तथा उनको अपनी शक्ति पर अभिमान हो गया है।

2. श्रीराम के वचनों को किसके समान कहा गया है?

(क) आहुति के समान (ख) जल के समान

(ग) कुठार के समान (घ) फरसे के समान

उत्तर: (ख) जल के समान

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

3. नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई ||
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥

(i) प्रस्तुत पद्यांश में श्रीराम ने दास शब्द किनके लिए प्रयोग किया है?

(क) लक्ष्मण के लिए (ख) विश्वामित्र के लिए

(ग) स्वयं के लिए (घ) परशुराम के लिए

उत्तर: (ग) स्वयं के लिए

(ii) परशुराम के क्रोध का कारण क्या था?

(क) परशुराम का अपमान (ख) शिव-धनुष का टूटना

(ग) लक्ष्मण का व्यंग्य-वाण (घ) विश्वामित्र को समझाना

उत्तर: (ख) शिव-धनुष का टूटना

(iii) परशुराम जी ने धनुष तोड़ने वाले को क्या माना?

(क) सेवक (ख) शत्रु

(ग) योद्धा (घ) मित्र

उत्तर: (ख) शत्रु

(iv) सहस्रबाहु का क्या अर्थ है ?

(क) सौ भुजाओं वाला (ख) हजार भुजाओं वाला

(ग) लाख भुजाओं वाला (घ) साठ भुजाओं वाला

उत्तर: (क) सौ भुजाओं वाला

(v) प्रस्तुत पद्यांश में स्वयं को दास कहना वक्ता के किस गुण की ओर संकेत करता है?

(क) विनम्रता (ग) कायरता

(ख) अहंकार (घ) वीरता

उत्तर: (क) विनम्रता

4. बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी ॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारू ॥
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥

देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना ||

(i) उपर्युक्त पद्यांश किसकी उक्ति है ?

(क) परशुराम की (ख) श्रीराम की

(ग) लक्ष्मण की (घ) विश्वामित्र की

उत्तर: (ग) लक्ष्मण की

(ii) अपने आप को बहुत बड़ा योद्धा कौन समझता है?

(क) श्रीराम (ख) लक्ष्मण

(ग) विश्वामित्र (घ) परशुराम

उत्तर: (घ) परशुराम

(iii) परशुराम बार-बार क्या दिखा रहे थे?

(क) धनुष-बाण (ख) गदा

(ग) फरसा (घ) तलवार

उत्तर: (ग) फरसा

(iv) इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं - इसका क्या आशय है?

(क) यहाँ कोई सबल नहीं है। (ख) यहाँ कोई छोटा-सा फल नहीं है।

(ग) यहाँ कोई दुर्बल नहीं है। (घ) यहाँ कोई कुम्हार नहीं है।

उत्तर: (ग) यहाँ कोई दुर्बल नहीं है।

(v) लक्ष्मण के अभिमान का कारण क्या था?

(क) परशुराम द्वारा क्रोध करना (ख) परशुराम द्वारा कड़वे वचन कहना

(ग) परशुराम द्वारा कुम्हड़बतिया कहना (घ) परशुराम द्वारा फरसा और धनुष-बाण दिखाना

उत्तर: (घ) परशुराम द्वारा फरसा और धनुष-बाण दिखाना

5. कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू॥
खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही॥
उतर देह छोड़ौं बिनु मारे। केवल कौसिक सील तुम्हारे ||
न त येहि काटि कुठार कठोरे। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरे॥

(i) उपर्युक्त अंतिम तीन पंक्तियाँ किसने किससे कही ?

(क) विश्वामित्र ने परशुराम से (ख) परशुराम ने विश्वामित्र से

(ग) लक्ष्मण ने विश्वामित्र से (घ) लक्ष्मण ने विश्वामित्र से

उत्तर: (ख) परशुराम ने विश्वामित्र से

(ii) परशुराम ने लक्ष्मण को छोड़ने का क्या कारण बताया?

(क) श्रीराम का कोमल व्यवहार (ख) विश्वामित्र का शील स्वभाव व विनम्र वाणी

(ग) लक्ष्मण द्वारा क्षमा याचना (घ) सभा का विरोध

उत्तर: (ख) विश्वामित्र का शील स्वभाव व विनम्र वाणी

(iii) परशुराम के नजर में लक्ष्मण क्या थे?

(क) बालक (ग) अपराधी

(ख) गुरुद्रोही (घ) (ख) और (ग) दोनों

उत्तर: (घ) (ख) और (ग) दोनों

(iv) परशुराम गुरु से उऋण होने के लिए क्या करते?

(क) श्रीराम का वध करते (ख) राम-लक्ष्मण का वध करते

(ग) विश्वामित्र का वध करते (घ) अपना प्राण त्याग देते

उत्तर: (ख) राम-लक्ष्मण का वध करते

(v) उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर परशुराम का स्वभाव कैसा था?

(क) दयालु व विनम्र (ख) अहंकारी

(ग) दयारहित व क्रोधी (घ) (क) और (ख)

उत्तर: (ग) दयारहित व क्रोधी

6. दोनों सुनि कटु कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा ॥
भृगुबर परसु देखाबहु मोही। बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही ॥
मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े ॥
अनुचित कहि सब लोग पुकारे। सयनहि लखनु नेवारे ॥
लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु ॥

(i) उपर्युक्त काव्यांश किस मूल ग्रंथ से लिया गया हैं?

(क) रामचरितमानस (ख) सूरसागर

(ग) गीतावली (घ) कवितावली

उत्तर: (क) रामचरितमानस

(ii) 'हाय-हाय सब सभा पुकारा- पंक्ति में सभाजनों के मन में कौन-सा भाव है?

(क) उल्लास के भाव (ख) शोक के भाव

(ग) आश्चर्य के भाव (घ) भय के भाव

उत्तर: (घ) भय के भाव

(iii) काव्यांश में लक्ष्मण ने परशुराम को किन-किन शब्दों से संबोधित किया है?

(क) कुठार, परसु, रघुपति, द्विज-देवता (ख) परसु, सुभट, लखनु, विप्र

(ग) भृगुबर, बिप्र, द्विज-देवता (घ) भृगुबर, सरिस, भानु, विप्र

उत्तर: (ग) भृगुबर, बिप्र, द्विज-देवता

(iv) 'लखन उतर आहुति सरिस में अलंकार है-

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) अतिशयोक्ति

उत्तर: (घ) श्रीराम को

(v) 'रघुकुल भानु' किसे कहा गया है?

(क) लक्ष्मण को (ख) परशुराम को

(ग) विश्वामित्र को (घ) श्रीराम को

उत्तर: (घ) श्रीराम को

3. जयशंकर प्रसाद

आत्मकथ्य

सारांश

कवि कहता है ,कि मुझे वह सुख नहीं मिला जिसे प्राप्त करने के लिए मैं सुख का स्वप्न देखकर सोते हुए जाग गया था। वह सुख ऐसा था जो मेरे आलिंगन में आते-आते मुस्कुरा कर भाग गया। अर्थात मैं उसे पकड़ नहीं सकता। कवि स्मरण करता है कि उसकी प्रेयसी के लाल गालो की सुंदर मतवाली छाया में अनुरागी उषा भी अपना सुहाग देखती थी।

अर्थात जिसके गालों की लालिमा ने मानो उषा की लालिमा और भी मधुर रूप को धारण कर लेती थी।

कवि कहता है कि आज के जीवन में उन क्षणों की स्मृति ही जीवन के संभल हैं।

तुम मेरे जीवन की कथा की परतें खोल कर भला क्या पाओगे।

कवि अपने जीवन को अत्यंत छोटा बता कर उसकी कहानी नहीं सुनना चाहता। वह दूसरों की बातें सुनना और स्वयं चुप रहना चाहता है। उसका कहना है कि अभी अपने जीवन की कथा को कहने का समय नहीं आया है।

उसकी व्यथा , कथा को शांत ही रहने दो उसे कुरेदने का प्रयास मत करो।

विशेष

अनुप्रास एवं उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग है

निष्कर्ष –

जयशंकर प्रसाद छायावादी कवियों में से एक थे उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से जनचेतना का कार्य किया था। प्रेमचंद के विशेष आग्रह पर कि वह अपनी आत्मकथा लिखें उस पर उन्होंने आत्मकथ्य कविता की रचना की। अपने जीवन में घटित दुख के क्षणों को प्रकट करने की कोशिश की।

बताना चाहा कि वह आत्मकथ्य क्यों लिखें जबकि उनके जीवन में केवल दुख ही दुख हाथ लगा।

जैसा कि साहित्य का अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जयशंकर प्रसाद जी के परिवार में एकाएक सभी सदस्यों की मृत्यु होती रही। उन्हें पिता, माता, भाई, बहन या पत्नी का सुख अधिक समय के लिए नहीं मिल पाया था। इस कहानी में उस दुख का भाव प्रकट होता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. आत्मकथ्य पाठ के लेखक का नाम बताये?
   क. जयशंकर प्रसाद ख. सुमित्रानंदन पन्त ग. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला घ. महादेवी वर्मा
2. स्मृति को पाथेय बनाने से कवि का क्या आशय है?
   क. सुखी जीवन की यादें ख. दुखी जीवन की यादें
   ख. कल्पना की उड़ान घ. इनमे से कोई नहीं
3. जयशंकर प्रसाद किस काल के कवि है?
   क. छायावाद ख. भक्तिकाल ग. आधुनिक काल घ. आदिकाल
4. मधुप शब्द का क्या अर्थ है?

क. भौंरा ख. गुलाब ग. आकाश घ. पक्षी

5. हंस पत्रिका के सम्पादक का नाम क्या है?

क. प्रेमचंद ख. निराला ग. महादेवी वर्मा घ. केदारनाथ सिंह

<u>लघुत्तरिये प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न1. कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहते हैं?

उत्तर: आत्मकथा लिखने के लिए अपने मन की दुर्बलताओं और कमियों का उल्लेख करना पड़ता है। कवि का स्वभाव बहुत सरल है और अपनी इस सरलता के कारण उन्होंने कई बार धोखा भी खाया है। उनके जीवन में बहुत सारी पीड़ादायक घटनाएं हुई हैं जिन्हें वह फिर से याद नहीं करना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि उनकी आत्मकथा में कुछ रोचक और प्रेरक नहीं है।

प्रश्न 2. आत्मकथा सुनने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कभी ऐसा क्यों कहता है?

उत्तर: कवि को लगता है कि आत्मकथा लिखने का अभी उचित समय नहीं हुआ है क्योंकि उनका जीवन संघर्षों से भरा पड़ा है और उनके अनुसार अब तक उन्होंने कोई बड़ी उपलब्धि प्राप्त नहीं की है। वे अपने अभावग्रस्त जीवन के दुखों को खुद तक ही सीमित रखना चाहते हैं इसलिए वे कहते हैं की आत्मकथा लिखने का समय अभी नहीं हुआ है।

प्रश्न3. स्मृति को ' पाथेय ' बनाने से कवि का क्या आशय है?

उत्तर: ' पाथेय ' अर्थात रास्ते का सहारा। कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था, वह उसे कभी प्राप्त नहीं हुआ। जिस प्रकार ' पाथेय ' यात्रा में यात्री को सहारा देता है ठीक उसी प्रकार स्वप्न में उनके द्वारा देखी हुए सुख की स्मृति भी उनको जीवन मार्ग में आगे बढ़ने का सहारा देती है।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।

आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग नया।

उत्तर: कभी कहना चाहता है कि जिस प्रेम का कवि सपने देख रहा था वह उसे कभी प्राप्त नहीं हुआ। सुख हमेशा उनके करीब आते-आते रह गया और उनका जीवन हमेशा सुख से वंचित रहा।

(ख) जिसके अन कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में। अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।

उत्तर: इन पंक्तियों में कभी अपनी प्रेयसी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि उनकी प्रियसी के गालों की लालीमा इतनी अधिक है की भोर वेला भी अपनी मधुर लालिमा उनके गालों से लिया करती थी। कवि की प्रेयसी की लालिमा के सामने उषा की लालिमा भी फीकी है।

प्रश्न 5. 'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की'- कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर: कवि कहना चाहता है, कि अपनी प्रेयसी के साथ चांदनी रातों में बिताए हुए वो सुखदायक पल उनके लिए किसी उज्जवल गाथा की तरह है जिसने उनके अंधकार में जीवन में उन्हें आगे बढ़ने का

एकमात्र सहारा दिया। कवि को डर है की इन स्मृतियों का दूसरों को पता चलता है तो वह उनका मजाक उड़ाएंगे इसलिए वह इन स्मृतियों को अपने तक ही सीमित रखना चाहते हैं।

प्रश्न 6. 'आत्मकथ्य ' कविता की काव्य भाषा की विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर: 'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित कविता 'आत्मकथ्य' की विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

१. इस कविता में खड़ी बोली भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है।

जैसे: जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।

२. अलंकारों के प्रयोग से काव्य सौंदर्य और बढ़ गया है।

उदाहरस्वरूप: पुनरुक्ति अलंकार: खिल-खिलाकर।

अरुण-कपोलों में रूपक अलंकार है।

३. इसमें तत्सम शब्दों का प्रयोग भी किया गया है।

जैसे: इस गंभीर अनंत नीलिमा में असंख्य जीवन इतिहास।

प्रश्न 7. कवि ने जो मुख का स्वप्न देखा था उसे कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है?

उत्तर: कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसको उन्होंने अपनी प्रेयसी नायिका के माध्यम से व्यक्त किया है। कवि कहता है चांदनी रात में प्रेयसी के साथ हुई बातें उनके लिए सदा के लिए दुख में तब्दील हो गई है, क्योंकि उनकी प्रेयसी उनके आलिंगन में आने से पूर्व ही उनसे दूर चली गई है।

प्रश्न8. इस कविता के माध्यम से प्रसाद जी के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: इस कविता को पढ़कर प्रशाद जी के व्यक्तित्व की ये विशेषताएं हमारे सामने आती हैं कि प्रसाद जी एक सीधे-सादे व्यक्तित्व के इंसान थे। उनके जीवन में दिखावा बिलकुल भी नहीं था। वे अपने जीवन के सुख-दुख को कभी भी लोगों से व्यक्त नहीं करना चाहते थे। और अपनी दुर्बलताओं को अपने तक ही सीमित रखना चाहते थे क्यूंकि अपनी दुर्बलताओं को समाज में प्रस्तुत कर वे स्वयं को हँसी का पात्र बनाना नहीं चाहते थे। प्रशाद जी स्वयं को दुर्बलताओं से भरा मानते थे। जिसके कारण वे स्वयं को श्रेष्ठ कवि मानने से इनकार करते हैं।

4. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

उत्साह

सारांश

सूर्यकांत त्रपाठी निराला जी ने उत्साह कविता के अंतर्गत बादलो को एक ओर तो लोगो की आकांक्षा को पूरा करने वाला बताया है, तथा दूसरी ओर उन्हें विध्वंस और क्रांति चेतना के प्रतीक के रूप में बताया है| कवि निराला इस कविता के माध्यम से सामाजिक क्रांति एवं बदलाव लाना चाहते है|

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. उत्साह कविता के कवि का नाम क्या हैं?
   क. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ख. जयशंकर प्रसाद
   ख. ग. महादेवी वर्मा घ. तुलसीदास
2. उत्साह कविता हिंदी के किस काल की है?
   क. छायावाद ख. भक्तिकाल ग. आधुनिक काल घ. आदिकाल
3. कविता में, बादल किसके प्रतीक के रूप में आया है?
   क. वर्षा ख. सामाजिक क्रांति ग. क एवं ख दोनों घ. कोई नहीं
4. विकल शब्द का अर्थ क्या है?
   क. बेचैन ख. उदास ग. गर्मी घ. कोई नहीं
5. उत्साह कविता में बादल का रूप कैसा दर्शाया गया है?
   क. काले एवं घुंघराले ख. सफ़ेद एवं घुंघराले ग. लम्बे घ. कोई नहीं

लघुत्तरिये प्रश्नोत्तर

प्रश्न - 1

कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों?

उत्तर: 1

कवि ने बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के लिए नहीं कहता बल्कि 'गरजने' के लिए कहा है; क्योंकि कवि बादलों को क्रांति का सूत्रधार मानता है। 'गरजना' विद्रोह का प्रतीक है। कवि बादलों से पौरुष दिखाने की कामना करता है। कवि ने बादल के गरजने के माध्यम से कविता में नूतन विद्रोह का आह्वान किया है।

प्रश्न - 2

कविता का शीर्षक उत्साह क्यों रखा गया है ?

उत्तर: 2

कवि क्रांति लाने के लिए लोगों को उत्साहित करना चाहते हैं। बादलों में भीषण गति होती है उसी से वह संसार के ताप हरता है। कवि ऐसी ही गति, ऐसी ही भावना और शक्ति चाहता है। बादल का गरजना लोगों के मन में उत्साह भर देता है। इसलिए कविता का शीर्षक उत्साहरखा गया है।

प्रश्न - 3

कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है ?

उत्तर: 3

'उत्साह' कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है –

1. जल बरसाने वाली शक्ति है।

2. बादल पीड़ित-प्यासे जन की आकाँक्षा को पूरा करने वाला है।

3. बादल कवि में उत्साह और संघर्ष भर कविता में नया जीवन लाने में सक्रिय है।

प्रश्न - 4

शब्दों का ऐसा प्रयोग जिससे कविता के किसी खास भाव या दृश्य में ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हो, नाद-सौंदर्य कहलाता है। उत्साह कवितामें ऐसे कौन-से शब्द हैं जिनमें नाद-सौंदर्य मौजूद है, छाँटकर लिखें।

उत्तर: 4

1. "घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!

2. ललित ललित, काले घुँघराले,

   बाल कल्पना के-से पाले

3. "विद्युत-छवि उर में" कविता की इन पंक्तियों में नाद-सौंदर्य मौजूद है।

प्रश्न - 5

जैसे बादल उमड़-घुमड़कर बारिश करते हैं वैसे ही कवि के अंतर्मन में भी भावों के बादल उमड़-घुमड़कर कविता के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। ऐसे ही किसी प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर अपने उमड़ते भावों को कविता में उतारिए।

उत्तर: 5

दूर आसमानों में बादलों की छवि देख,

जगी मेरे मन में भी आस

प्यास के मारों को मिली राहत की साँस

तड़पती विरहणी की प्रेमी से मिलन की वजह खास

धरती को भी मिली तृप्ति की आस

मोर भी करने लगा प्रीतम को मिलने का प्रयास

किसान के आँखों में भी जगी एक चमक खास

देखो बादल आया अपने साथ कितनी आस।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

अट नहीं रही है

सारांश

इस कविता में कवि ने फागुन के सौन्दर्य एवं उल्लास को दर्शाया है| फागुन मास की शोभा सम्पूर्ण वातावरण में बिखरी हुई है|

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. अट नहीं रही कविता के कवि का नाम बताए?
   क. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ख. जयशंकर प्रसाद ग. तुलसीदास घ. इनमे से कोई नहीं
2. अट नहीं रही कविता में किस माह के सौंदर्य का वर्णन हैं?
   क. चैत्र ख. वैशाख ग. फागुन घ. इनमे से कोई नहीं
3. फागुन मास में कौन सी ऋतु होती है?
   क. गर्मी ख. बसन्त ग. वर्षा घ. शीत
4. आभा शब्द के क्या अर्थ है?
   क. सौन्दर्य ख. कुरूप ग. श्री घ. क एवं ग दोनों
5. शोभा श्री का क्या अर्थ है?
   क. सौन्दर्य ख. माला ग. पुष्प माला घ. कोई नहीं

लघुत्तरिये प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

छायावाद की एक खास विशेषता है अन्तर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। कविता की किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है?लिखिए।

उत्तर –

कविता के निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है कि प्रस्तुत कविता में अन्तर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाया गया है :

कहीं साँस लेते हो,

घर घर भर देते हो,

उड़ने को नभ में तुम,

पर पर कर देते हो।

प्रश्न 2.

कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?

उत्तर –

फागुन का मौसम तथा दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है। चारों तरफ का दृश्य अत्यंत स्वच्छ तथा हरा-भरा दिखाई दे रहा है। पेड़ों पर कहीं हरी तो कही लाल पत्तियाँ हैं, फूलों की मंद-मंद खुशबू हृदय को मुग्ध कर लेती है। इसीलिए कवि की आँख फागुन की सुंदरता से हट नहीं रही है।

प्रश्न 3. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है ?

उत्तर-

प्रस्तुत कविता 'अट नहीं रही है' में कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी ने फागुन के सर्वव्यापक सौन्दर्य और मादक रूप के प्रभाव को दर्शाया है।पेड़-पौधे नए-नए पत्तों,फल और फूलों से अटे पड़े हैं,हवा सुगन्धित हो उठी है,प्रकृति के कण-कण में सौन्दर्य भर गया है। खेत-खलिहानों, बाग़-बगीचों, जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों एवं चौक-चौबारों में फ़ागुन का उल्लास सहज ही दिखता है।

प्रश्न 4. फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है ?

उत्तर-

फागुन में सर्वत्र मादकता मादकता छाई रहती है। प्राकृतिक शोभा अपने पूर्ण यौवन पर होती है। पेड़-पौधें नए पत्तों, फल और फूलों से लद जाते हैं, हवा सुगन्धित हो उठती है। आकाश साफ-स्वच्छ होता है। पक्षियों के समूह आकाश में विहार करते दिखाई देते हैं। बाग-बगीचों और पक्षियों में उल्लास भर जाता हैं। इस तरह फागुन का सौंदर्य बाकी ऋतुओं से भिन्न है।

प्रश्न 5.

इन कविताओं के आधार पर निराला के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ बताएँ।

उत्तर-महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी छायावाद के प्रमुख कवि माने जाते हैं। छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ हैं- प्रकृति चित्रण और प्राकृतिक उपादानों का मानवीकरण।'उत्साह' और 'अट नहीं रही है' दोनों ही कविताओं में प्राकृतिक उपादानों का चित्रण और मानवीकरण हुआ है। काव्य के दो पक्ष हुआ करते हैं-अनुभूति पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष अर्थात् भाव पक्ष और शिल्प पक्ष ।इस दृष्टि से दोनों कविताएँ सराह्य हैं। छायावाद की अन्य विशेषताएँ जैसे गेयता , प्रवाहमयता , अलंकार योजना और संगीतात्मकता आदि भी विद्यमान है।'निराला' जी की भाषा एक ओर जहाँ संस्कृतनिष्ठ, सामासिक और आलंकारिक है तो वहीं दूसरी ओर ठेठ ग्रामीण शब्द का प्रयोग भी पठनीय है। अतुकांत शैली में रचित कविताओं में क्राँति का स्वर , मादकता एवम् मोहकता भरी है। भाषा सरल, सहज, सुबोध और प्रवाहमयी है।

प्रश्न 6

होली के आसपास प्रकृति में जो परिवर्तन दिखाई देते हैं, उन्हें लिखिए।

उत्तर:-

होली का त्यौहार फागुन मास में आता है। इस समय चारों ओर मादक हवाएँ चलती है। होली के समय चारों तरफ़ का वातावरण रंगों से भर जाता है। चारों तरफ़ रंग ही रंग बिखरे होते हैं। प्रकृति भी उस समय रंगों से वंचित नहीं रह पाती है। प्रकृति के हरे भरे वृक्ष तथा रंग-बिरंगे फूल होली के महत्व को और अधिक बढ़ा देते हैं। वृक्ष चारों ओर मंद सुगंध बिखेर देते है। लोगों के मन उमंग और आनंद से भर जाते है।

5. नागार्जुन

छायावादोत्तर दौर के प्रमुख कवि नागार्जुन का जन्म बिहार के दरभंगा जिले के सतलखा गाँव में हुआ | लोकजीवन के प्रति गहरा लगाव रखने के कारण इन्होंने भ्रष्टाचार, राजनैतिक स्वार्थ और पतनशील समाज की स्थितियों को अपने साहित्य में सजगता से अंकित किया है | 'यह दन्तुरित मुस्कान' कविता में कवि ने एक प्रवासी पिता के माध्यम से उसके शिशु के दुधमुंही मुस्कान का मनोहारी व् हृदयस्पर्शी चित्रण किया है| 'फसल' कविता द्वारा कवि ने यह दर्शाया है कि कैसे इसका सृजन में प्रकृति के साथ मानवीय सहयोग पर निर्भर है |

यह दंतुरित मुस्कान

1. बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। उसकी मुसकान मनभावन है। उसे देखकर कवि को लगता है कि मानो उसके मृतक शरीर में प्राणों का संचार हो गया हो। कवि के मन में बच्चे की माँ के प्रति कृतज्ञता का भाव उत्पन्न होता है, क्योंकि उसी के माध्यम से वह बच्चे की दंतुरित मुसकान को देख पाया है। यह मुसकान कठोर से कठोर हृदय को भी पिघला देती है। कवि को लगता है कि मानो कमल तालाब छोड़कर उसकी झोंपड़ी में खिल उठे हैं। पत्थर हृदय पिघलकर जलधारा में बदल गया हो और बबूल या बाँस के वृक्षों से शेफालिका के फूल झरने लगे हों।

2. बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?

उत्तर: बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में बहुत अंतर होता है। बच्चे की मुसकान बहुत भोली, सरल व निश्छल होती है, जबकि बड़े व्यक्ति की मुसकान में दिखावटीपन व स्वार्थ निहित होता है। बच्चे की मुसकान तन-मन में उमंग, उत्साह व नव-जीवन का संचार करती है। बड़ों की मुसकान रहस्यमयी, कृत्रिम तथा व्यंग्य से भरी भी हो सकती है। बच्चा मुसकान में भेदभाव नहीं करता, किंतु बड़ा व्यक्ति मुसकान की मात्रा संबंधों के अनुसार तय करता है। बच्चे के लिए मुसकान सहज व स्वाभाविक क्रिया है, किंतु बड़ों के लिए यह मात्र शिष्टाचार निभाना है।

3. कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को किन-किन विधों के माध्यम से व्यक्त किया है?

उत्तर: कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य की निम्नलिखित बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है-

(i) बच्चे की मुसकान से मृतक में भी जान डाल देने संबंधी बिंब द्वारा।
(ii) तालाब छोड़कर झोंपड़ी में कमल के खिलने संबंधी बिंब द्वारा।
(iii) कठोर पत्थर पिघल कर जलधारा बनने संबंधी बिंब द्वारा।
(iv) बाँस या बबूल के वृक्षों से शेफालिका के फूल झरने संबंधी बिंब द्वारा।

4. मुसकान और क्रोध भिन्न-भिन्न भाव हैं। इनकी उपस्थिति से बने वातावरण की भिन्नता का चित्रण कीजिए।

उत्तर: मुसकान और क्रोध सर्वथा भिन्न भाव हैं। 'मुसकान' सबका मन मोह लेती है तथा सभी को अपनी ओर आकर्षित कर अपना बना लेती है, जिससे वातावरण सुखद हो जाता है। 'क्रोध' मन की उग्रता को दर्शाने वाला भाव है। क्रोध वातावरण को दूषित और बोझिल बना देता है, व्यक्तियों में दूरी पैदा करता है। क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति या बच्चों को कोई पसंद नहीं करता।

5. 'दंतुरित मुसकान' से बच्चे की उम्र का अनुमान लगाइए और तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: बच्चे की उम्र लगभग 5 या 6 महीने की है, क्योंकि इसी उम्र में बच्चों के दाँत निकलते हैं। जब उसके ऊपर के या नीचे के दो दाँत निकलते हैं और उस समय जब वह बच्चा हँसता है, तो बहुत सुंदर लगता है।

उसकी सुंदरता अद्वितीय हो जाती है। शिशु के सौंदर्य से कठोर हृदय व्यक्ति भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। निर्जीव हृदय में भी जीवन का संचार होने लगता है।

6. बच्चे से कवि की मुलाकात का जो शब्द-चित्र उपस्थित हुआ है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: बच्चे से मुलाकात कर कवि को जो सुखद अनुभूति हुई, वह उसे कहीं और नहीं मिल सकती। शिशु की दूधिया मुसकान कवि को नीरस जीवन में प्राणों का संचार करने वाली लगी। कवि को शिशु का धूल-धूसरित शरीर देखकर ऐसा लगा कि जैसे कमल के फूल तालाब छोड़कर उसकी झोंपड़ी में खिल रहे हों। नन्हे बच्चे के कोमल शरीर को छूने से पत्थर भी जलधारा बन गया हो। कठोर, नीरस और शुष्क लोग भी शेफालिका के फूल के समान झरते हुए अर्थात प्रफुल्लित लगते हैं। अपलक निहारने के कारण बच्चे की आँखें थक न जाएँ इसलिए कवि अपनी आँखें फेरने की अनुमति चाहते हैं। माँ के माध्यम से कवि का परिचय बच्चे से हुआ और वह बच्चे की दंतुरित मुसकान देख पाया इसलिए वह माँ के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करता है। लंबे समय से प्रवासी होने के कारण बच्चे से उसका संपर्क नहीं रहा। वह माँ से ही परिचित है क्योंकि माँ ही उस पर ममता लुटाती रही है। कवि से आँखें चार होने पर उसकी दंतुरित मुसकान और भी सुंदर लगने लगती है।

7. शिशु के धूलि धूसरित शरीर को देखकर कवि नागार्जुन ने क्या कल्पना की?

अथवा,

"धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात ....

छोड़कर तालाब मेरी झोपड़ी में खिल रहे जलजात" 'तुम्हारी ये दंतुरित मुसकान' से ली गई उपर्युक्त पंक्तियों में

प्रयुक्त बिंब को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: धूल से धूसरित शरीर को देखकर कवि को ऐसा लग रहा था मानो कमल तालाब को छोड़कर उसकी झोंपड़ी में आ गया हो। उसने शिशु को कमल के समान कहा, जिस प्रकार कमल कीचड़ में खिलता है, उसी प्रकार शिशु का शरीर भी धूल से सना हुआ है, जो अत्यधिक सुंदर लग रहा है।

8. कवि ने शिशु और उसकी माँ को धन्य क्यों कहा है? 'यह दंतुरित मुसकान' कविता के आधार पर बताइए|

उत्तर: कवि ने शिशु और उसकी माँ को धन्य इसलिए कहा है, क्योंकि ये दोनों कवि के जीवन में सुखद क्षण देने वाले हैं। कवि के जीवन में शिशु की नए-नए दाँतों वाली भोली, सरल एवं निश्छल मुसकान एक नई ऊर्जा एवं प्राणों का संचार वाली है। इसलिए वह धन्य है और धन्य उसकी माँ भी है, क्योंकि यदि बच्चे की माँ नहीं होती, तो कवि बच्चे की मंद-मंद मुसकाती छोटे-छोटे दाँतों से युक्त छवि नहीं देख पाता एवं न उसे जान पाता।

9. 'तुम मुझे पाए नहीं पहचान'- कवि ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर: नन्हा बच्चा अनजान व्यक्ति को सामने पाकर उसे टकटकी लगाकर देखने लगा। बच्चे की आँखों में उत्सुकता और अजनबीपन का भाव था। बच्चे के इस भाव को देख कवि ने ये शब्द कहे।

10. 'मधुपर्क' से क्या तात्पर्य है ? कविता में इसका प्रयोग किसलिए हुआ ?

उत्तर: साधारण भाषा में मधुपर्क दही, घी, शहद, जल और दूध का मिश्रण होता है, पर काव्यांश में मधुपर्क का प्रयोग माँ के उस प्यार के लिए किया गया है, जो बच्चे को जीवन देने वाली आत्मीयता की मिठास से भरपूर है।

11. 'दंतुरित मुसकान' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर: 'दंतुरित मुसकान' से तात्पर्य है- बच्चों के नए-नए दाँतों से अर्थात दुधमुँहे दाँतों से झलकती लुभावनी मुसकान।

12. प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देता है?

उत्तर: बच्चे की मनोहारी मुसकान में ही जीवन का संदेश है। इसकी सुंदरता कठोर से कठोर मन को भी पिघला देती है। मृतक में भी नव-जीवन का संचार करती है। दंतुरित मुसकान बहुत भोली, सरल व निश्छल होती है।

13. कवि ने स्वयं को क्या माना है?

उत्तर: कवि ने स्वयं को 'चिर-प्रवासी' कहा है। कवि अपनी घुमक्कड़ प्रवृत्ति के कारण अनेक बार भारत भ्रमण हेतु गए। यात्राओं में व्यस्त रहने के कारण लंबे समय तक घर से बाहर रहे।

फ़सल

1. कवि के अनुसार फ़सल क्या है? फ़सल क्या है? इसको लेकर फ़सल के बारे में कवि ने क्या-क्या संभावनाएँ व्यक्त की हैं?

उत्तर: कवि नागार्जुन फ़सल को प्रकृति व मनुष्य के श्रम का प्रतिफल मानते हैं। फ़सल कोई एक या दो नदियों के जल से नहीं, अपितु अनेकानेक नदियों के जल से उत्पन्न होती है। फ़सल को उगाने में धरती की मिट्टी का गुण-धर्म तथा नदियों का जल अपना-अपना सहयोग देते हैं। इसमें सूरज की किरणों की ऊष्मा तथा वायु की थिरकन समाई हुई होती है। साथ ही इसमें किसानों का कठोर परिश्रम भी सम्मिलित होता है।

2. कविता में फ़सल उपजाने के लिए आवश्यक तत्वों की बात कही गई है। वे आवश्यक तत्व कौन-कौन से हैं?

उत्तर: फ़सल को उगाने में प्राकृतिक तत्व जैसे नदियों का जल, खेतों की भूरी, काली, संदली मिट्टी, सूर्य की किरणें, हवा तथा मानवीय संपर्क (जैसे हाथों का स्पर्श और कठोर परिश्रम आदि) आवश्यक तत्व हैं।

3. फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर: 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' कहकर कवि यह व्यक्त करना चाहता है कि फ़सल के फलने-फूलने में एक-दो लोगों का नहीं, अपितु लाखों-करोड़ों लोगों के हाथों का स्पर्श इसे गरिमा प्रदान करता है अर्थात करोड़ों श्रमिकों के श्रम का परिणाम है-फ़सल। कवि श्रम और श्रमिक को महत्ता प्रदान करना चाहता है इसलिए उनके परिश्रमी हाथों की महानता का गौरवगान गाता है।

4. भाव स्पष्ट कीजिए-

'रूपांतर है सूरज की किरणों का सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!'

उत्तर: पंक्तियों का भाव है कि फ़सल के उगने में सूरज की किरणों अर्थात ताप तथा हवा की थिरकन अर्थात आनुपातिक नमी का भी योगदान है। सूरज की किरणों का रूपांतरण ही भोजन के रूप में फ़सल बनकर संचित होता है। इसी से वे बढ़ती हैं, विकसित होती हैं। इसी प्रकार हवा के स्पर्श से फसलें अपना संकोच त्यागकर फलने-फूलने लगती हैं।

5. कवि ने फ़सल को हजार-हजार खेतों की मिट्टी का गुण-धर्म कहा है-

(क) मिट्टी के गुण-धर्म को आप किस तरह परिभाषित करेंगे?

उत्तर: मिट्टी का गुण-धर्म है-उसमें मिले हुए खनिज पदार्थ, प्राकृतिक तत्व, उसकी उपजाऊ शक्ति और उसके ये विशेष गुण, जो मिट्टी को उर्वरा बनाते हैं और फसल उगाने में सक्षम होते हैं।

(ख) वर्तमान जीवन-शैली मिट्टी के गुण-धर्म को किस-किस तरह प्रभावित करती है?

उत्तर: (i) खेती के समय रासायनिक व कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से मिट्टी के गुण-धर्म में लगातार गिरावट आ रही है।

(ii) मिट्टी के गुणों के अनुरूप फसल न उगाकर या एक ही प्रकार की फसल बार-बार उगाने से उसकी उर्वरा शक्ति कम हो जाती है।

(iii) प्लास्टिक की थैलियाँ तथा विषैले रसायनों की धरती पर गिराने से धरती की सृजनात्मकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उपर्युक्त कारणों से मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम होने लगती है और वह अपने गुण-धर्म छोड़कर विकृत होती जाती है।

(ग) मिट्टी द्वारा अपना गुण-धर्म छोड़ने की स्थिति में क्या किसी भी प्रकार के जीवन की कल्पना की जा सकती है?

उत्तर: मिट्टी द्वारा गुण-धर्म छोड़ने पर मानव-जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती, क्योंकि इस कल्पना में भी जीवन का स्वरूप इतना विकृत होगा कि उसे शब्दबद्ध ही नहीं किया जा सकता।

(घ) मिट्टी के गुण-धर्म को पोषित करने में हमारी क्या भूमिका हो सकती है?

उत्तर: मिट्टी के गुण-धर्म को पोषित करने में हमारी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकती है, जैसे-

(i) सर्वप्रथम हम मिट्टी के गुण-धर्म को जानें और उसकी जानकारी अपने से जुड़े लोगों की भी दें। (ii) हम खेतों में गोबर की खाद का प्रयोग करें।

(iii) कुछ समय के लिए धरती को खाली छोड़ दें, ताकि उसकी उर्वरा शक्ति बनी रहे।

(iv) प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग बंद कर दें।

6. फसल के उत्पन्न एवं फलदायी होने में मनुष्य के हाथों की क्या महिमा है?

उत्तर: कवि ने फसल को परिश्रमी किसानों और मज़दूरों के हाथों के स्पर्श की गरिमा कहा है, क्योंकि किसान के श्रम से ही धरती पर फसल उगती है और श्रमिकवर्ग के परिश्रम की महत्ता प्रतिपादित होती है। साथ ही कवि यह भी बताता है कि मानव और प्रकृति के आपसी सहयोग से ही सृजन संभव है।

7. कवि ने फ़सल को नदियों के पानी का जादू क्यों कहा?

उत्तर: धरती की कोख में डाला गया बीज नदियों के जल का स्पर्श पाकर ही अंकुर बनकर फूटता है और फ़सल बनकर लहलहाने लगता है। कवि को देखने में यह जादू जैसा लगता है, इसलिए कवि ने फसल को नदियों के पानी का जादू कहा है

8. 'फ़सल' क्या है?

उत्तर: कवि फसल को प्रकृति व मनुष्य के श्रम का प्रतिफल मानते हैं। फसल कोई एक या दो नदियों के जल से नहीं, अपितु अनेकानेक नदियों के जल से उत्पन्न होती है। फ़सल को उगाने में धरती की मिट्टी का गुण-धर्म तथा नदियों का जल अपना-अपना सहयोग देते हैं।

9. 'फसल' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं ?

उत्तर: 'फ़सल' कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहते हैं कि मानव और प्रकृति के सहयोग से ही सृजन संभव है। फ़सल का नाम सुनते ही लहलहाती फसल और श्रमिक का श्रम आँखों के समक्ष डोलने लगता है।

10. "मिट्टी के गुण-धर्म को सुरक्षित कैसे रखा जा सकता है?" 'फसल' कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर: मिट्टी के गुण-धर्म को सुरक्षित रखने के लिए कई कदम उठाने होंगे जैसे-मिट्टी के गुण-धर्म को पहचाने और उसकी जानकारी अपने से जुड़े लोगों को भी दें। भूमि प्रदूषण के कारणों को रोकने के लिए लोगों में जागरूकता फैलाएँ। प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग बंद कर दें। खेतों में गोबर की खाद या जैविक खाद का प्रयोग करें।

सामान्य बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कवि ने 'बाँस' और 'बबूल' को किसका प्रतीक बताया है?

(क) कोमल, निस्वार्थी और मधुर स्वभाव वाले लोगों के

(ख) दृढ़ निश्चयी, मस्त रहने वाले लोगों के

(ग) नीरस, शुष्क और कठोर स्वभाव वाले लोगों के

(घ) शिष्ट, मधुर तथा नम्र स्वभाव वाले लोगों के

2. कवि से आँखें चार होने पर शिशु क्या करता?
(क) शिशु माँ से चिपक जाता है।
(ख) शिशु के दुधमुँहे दाँतों वाले मुख से मुसकान झलकने लगती है।
(ग) शिशु माँ को चूमने लगता है।
(घ) शिशु कवि के पास आना चाहता है।

3. बच्चे की दंतुरित मुसकान किसमें जान डाल देती है?
(क) कवि के शरीर में
(ख) जंगलों में
(ग) मृतकों के शरीर में
(घ) वृद्धों में

4. बच्चे की मुसकान कैसी है?
(क) मनोहारी
(ख) जीवनदायिनी
(ग) ईर्ष्या से भरी
(घ) (क) और (ख) दोनों

5. फ़सलों का सृजन संभव है-
(क) केवल नदियों के जल से
(ख) केवल प्रकृति के पोषण से
(ग) केवल मानव के प्रयासों से
(घ) मानव और प्रकृति के आपसी सहयोग से

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

6. फ़सल क्या है?
और तो कुछ नहीं है वह
नदियों के पानी का जादू है
वह हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुण धर्म है।
रूपांतर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

(i) पद्यांश के अनुसार फ़सल क्या है?
(क) मज़दूरों के हाथों के स्पर्श की महिमा
(ख) नदियों के पानी का जादू
(ग) मिट्टी का गुण-धर्म
(घ) ये सभी

(ii) रूपांतरण किसका है?
(क) तारों की किरणों का
(ख) सूरज की किरणों का
(ग) चाँद की किरणों का
(घ) ये सभी

(iii) पद्यांश में हवा के थिरकन को क्या बताया गया है?
(क) सरसराहट
(ख) शीतलतापूर्ण
(ग) सिमटा हुआ संकोच
(घ) गुनगुनाता हुआ

(iv) हवा के स्पर्श से फ़सलों में क्या परिवर्तन होता है?
(क) पत्तियाँ झड़ने लगती हैं।
(ख) फूल गिरने लगते हैं।
(ग) फ़सल फलने-फूलने लगती हैं।
(घ) फल पकने लगते हैं।

(v) उपर्युक्त पदयांश के आधार पर कहा जा सकता है कि कविता में-
(क) ग्रामीण परिवेश की झाँकी मिलती हैं।
(ख) शहरी परिवेश की झाँकी मिलती हैं।
(ग) किसानों की दशा का चित्रण मिलता है।
(घ) मजदूरों की दशा का चित्रण मिलता है।

7. तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान
मृतक में भी डाल देगी जान

धूलि धूसर तुम्हारे ये गात....
छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात
परस पाकर तुम्हारा ही प्राण,
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण
छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल
बाँस था कि बबूल ?

(i) बच्चे की दंतुरित मुसकान किसमें जान डाल देती है?

(क) कवि के शरीर में (ख) जंगलों में
(ग) मृतकों के शरीर में (घ) वृद्धों में

(ii) कवि ने बच्चे के धूल में सने शरीर की तुलना किससे की है?

(क) कमल के फूल (ख) बबूल से
(ग) पत्थर से (घ) तालाब से

(iii) कवि ने बाँस और बबूल को किसके प्रतीक के रूप में बताया है?

(क) नम्र, प्रेमी और सुहृदय लोगों के (ख) नीरस, शुष्क और कठोर स्वभाव वाले लोगों के
(ग) मोटे लोगों के (घ) काले और लंबें लोगों के

(iv) बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर निम्न में से क्या प्रभाव पड़ा ?

(क) उसके मृतक शरीर में प्राणों का संचार हो गया।
(ख) उसका शरीर मृतप्राय हो गया।
(ग) उसका मन घृणा से भर गया।
(घ) उसके हृदय में अहंकार की भावना घर कर गई।

(v) बच्चे की मुसकान कैसी है?

(क) मृत्यु के समान (ख) बबूल के काँटों के समान
(ग) ईर्ष्या से भरी (घ) मनोहारी एवं जीवनदायिनी

उपरोक्त लघुत्तरीय प्रश्नों में से कुछ को ऐसे भी पूछा जा सकता है-

1. दंतुरित मुसकान का सौंदर्य दुगना क्यों हो जाता है?
2. कवि ने फसल के द्वारा किन-किन के आपसी सहयोग का भाव व्यक्त किया है?
3. 'रूपांतर है सूरज की किरणों का, है सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का।' -पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।
4. बच्चे की मुसकान मृतक में भी जान कैसे डाल देती है?
5. 'यह दंतुरित मुसकान' पाठ में बाल मनोविज्ञान की छवियाँ बड़ी अनुपम हैं।" कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
6. 'हाथों के स्पर्श की महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहते हैं?
7. 'पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण।' यह पंक्ति किस कविता से ली गई है और इसके माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

6. मंगलेश डबराल

संगतकार

कविता का सार...

संगतकार कविता गायन में मुख्य गायक का साथ देनेवाले संगतकार की भूमिका के महत्त्व पर विचार करती है। दृश्य माध्यम की प्रस्तुतियों; जैसे-नाटक, फ़िल्म, संगीत, नृत्य के बारे में तो यह सही है ही; हम समाज और इतिहास में भी ऐसे अनेक प्रसंगों को देख सकते हैं जहाँ नायक की सफलता में अनेक लोगों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। कविता हममें यह संवेदनशीलता विकसित करती है कि उनमें से प्रत्येक का अपना-अपना महत्त्व है और उनका सामने न आना उनकी कमज़ोरी नहीं मानवीयता है। संगीत की सूक्ष्म समझ और कविता की दृश्यात्मकता इस कविता को ऐसी गति देती है मानो हम इसे अपने सामने घटित होता देख रहे हों।

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

1 मुख्य गायक के भटके हुए स्वरों को कौन सँभालता है?

(क) कवि (ख) संगतकार (ग) पुजारी (घ) दर्शक

2 संगतकार की आवाज मुख्य गायक की अपेक्षा कैसी होती है?

(क) सुंदर (ख) कमज़ोर (ग) काँपती हुई (घ) उपर्युक्त सभी

3 संगतकार का महत्व कब सामने आता है?

(क) जब मुख्य गायक संगीत की कठिन तानों में भटक जाता है।

(ख) जब मुख्य गायक संगतकार के पीछे गाने लगता है।

(ग) जब संगतकार राग, लय, ताल से खुद गाने लगता है।

(घ) इनमें से कोई भी नहीं।

4 कवि के अनुसार संगतकार कौन हो सकता है?

(क) गायक को छोटा भाई या शिष्य

(ख) दूर का कोई रिश्तेदार

(ग) संगीत सीखने का कोई इच्छुक

(घ) उपर्युक्त सभी

5 इस पद में नौसिखिया किसे कहा गया है?

(क) कवि को, (ख) संगतकार को, (ग) मुख्य गायक को, (घ) उपर्युक्त तीनों को.

*6*मुख्य गायक द्वारा उच्च स्वर में गाने से क्या होता है?

(क) ऊँची आवाज़ के कारण गला बैठने लगता है।

(ख) आवाज़ भर्राने लग जाती है।

(ग) उसका उत्साह कम होने लगता है।

(घ) उपर्युक्त सभी।

7 मुख्य गायक को ढाँढस कौन बँधाता है?

(क) कवि

(ख) संगतकार

(ग) भाई

(घ) रिश्तेदार

8 तारसप्तक का क्या अर्थ है?

(क) सांत्वना देना

(ख) सर्वोच्च स्वर में गायन

(ग) संगीत के स्वर

(घ) मानवीय गुण

9 कवि संगतकार द्वारा अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से कम रखने को क्या मानता है?

(क) ईमानदारी (ख) चालाकी (ग) मनुष्यता (घ) समझदारी

10 मुख्य गायक से अधिक ऊँचे स्वर में गाना किसके लक्ष्य के विरुद्ध है?

(क) श्रोताओं के (ख) पंडित के (ग) दर्शक के (घ) संगतकार के

11 संगतकार पाठ के अनुसार संगतकार की मुख्य विशेषता क्या होती है?

(क) उसकी मानवीयता

(ख) उसकी कलात्मक श्रेष्ठता

(ग) उसकी प्रतिभा प्रदर्शन की आकांक्षा

(घ) उसकी आत्म मुग्धता

12संगतकार मुख्य गायक को ढाँढस कब बँधाता है?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए निम्नलिखित कथनों को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए-

कथन-

(क) जब उसका गला बैठने लगता है।

(ख) जब वह निरुत्साहित होने लगता है। (ग) जब उसकी आवाज़ मंद पड़ने लगती है।

विकल्पः

(a) केवल (क)

(b) केवल (ग)

(c) (क), (ख) और (ग)

(d) (क) और (ग)

उत्तरः—1. (ख),2. (घ),3. (क),4. (घ),5. (ग), 6 (घ),7. (ख),8. (ख), 9 (ग),10 (घ), 11-[क],12—[C]

प्रश्न-अभ्यास

[1] संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तरः- कवि संगतकार के माध्यम से उन व्यक्तियों की ओर संकेत कर रहा है जिनकी दीवार की नींव की तरह अपनी तो कोई पहचान नहीं होती किंतु वे दूसरे के अस्तित्व के लिए अपना अस्तित्व दाँव पर लगा देते हैं। उनके नीचे दबे पड़े रहते हैं। ऐसे अनाम व्यक्ति दूसरे लोगों की सफलता में पूरा सहयोग देते हैं।

[2] संगतकार किन-किन रूपों में मुख्यगायक-गायिकाओं की मदद करते हैं?

उत्तरः- संगतकार मुख्य गायिकाओं की मदद इस प्रकार करते हैं-

(क) मुख्य गायक/गायिका के स्वर में अपना स्वर मिलाकर स्वर को प्रभावपूर्ण करते हैं।

(ख) मुख्य गायक/गायिका के भटक जाने पर स्थायी पंक्ति को बार-बार गाकर उसे सँभलने का अवसर देते हैं।

(ग) उनके स्वर में स्वर मिलाकर मुख्य गायक/गायिका को यह अनुभूति कराने में सफल होते हैं कि वह अकेला नहीं है।

(घ) मुख्य गायक/गायिका के तारसप्तक में चले जाने पर अपने स्वर से उसे सँभाल लेते हैं।

(ड़) संगतकार मुख्य गायक/गायिका के प्रभाव को बनाए रखने के लिए पूर्णतः तत्पर रहते हैं।

[3] कभी-कभी तारसप्तक की ऊँचाई पर पहुँचकर मुख्य गायक का स्वर बिखरता नज़र आता है उस समय संगतकार उसे बिखरने से बचा लेता है। इस कथन के आलोक में संगतकार की विशेष भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- मुख्य गायक अपनी आवाज को ऊँची करते हुए तारसप्तक तक ले जाता है तो कभी-कभी उसकी आवाज बिखरने लगती है, उसका स्वर बैठने लगता है। स्थिति बिगड़ती हुई नज़र आती है। संगतकार मुख्य गायक की इस स्थिति को समझता है। निराश हुए मुख्य गायक को सहारा देने के लिए संगीत की स्थायी पंक्ति को गाकर उसे निराश होने से और स्वर को बिखरने से बचा लेने की भूमिका का निर्वाह करता है।

[4] संगतकार की आवाज में एक हिचक-सी क्यों प्रतीत होती है?

उत्तर:- संगतकार मुख्य गायक का सम्मान करता है। वह मुख्य गायक के गायन को अपने गायन से प्रभावहीन नहीं बनाना चाहता है तथा अपने स्वर को वह चाहकर भी ऊँचा नहीं उठाता है, इसलिए उसके गायन में एक हिचक-सी सुनाई देती है।

[5] 'संगतकार' कविता में कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर:- 'संगतकार' कविता के माध्यम से कवि ने यह संदेश दिया है कि मुख्य गायक की गायिकी को सफल बनाने के लिए संगतकार द्वारा अपनी आवाज़ को ऊँचा न उठाना उसकी कमजोरी या असफलता नहीं मानना चाहिए। यह उसकी मानवता ही है जो अपना अस्तित्व छिपाकर दूसरे की सफलता का पथ प्रशस्त करता है। अर्थात् दूसरों की भलाई के लिए हमें त्याग करने से पीछे नहीं हटना चाहिए।

[6] मुख्य गायक एवं संगतकार के मध्य जुड़ी कड़ी अगर टूट जाए तो उसके क्या परिणाम हो सकते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:-संगतकार की परोपकार और त्याग की भावना मुख्य गायक को ऊँचाई तक ले जाती है। संगतकार मुख्य गायक का साथ नहीं छोड़ता है। साथ-साथ बने रहने में दोनों के मध्य में जो भाव होता है वह अपनत्व का होता है। यदि 'अपनत्व' की भावना समाप्त हो जाती है तो परोपकार और त्याग की भावना भी स्वाभाविक रूप से समाप्त हो जाती है। अपनत्व समाप्त होने पर साथ-साथ रहना विवशता हो सकती है। इससे तारतम्य बिगड़ जाता है। तारतम्य बिगड़ने पर मुख्य गायक की सफलता खटाई में पड़ जाती है।

अतः मुख्य गायक और संगतकार के मध्य अपनत्व की भावना जितनी मजबूत होती है उतना ही परिणाम भी श्रेयस्कर होता है अन्यथा सब कुछ बिखर कर रह जाता है।

[7] संगतकार की मनुष्यता किसे कहा गया है? वह मनुष्यता कैसे बनाए रखता है?

उत्तर:- मुख्य गायक के महत्व/गरिमा को बनाए रखना ही संगतकार की मनुष्यता है। इसके लिए वह मुख्य गायक के स्वर से अपना स्वर कभी ऊँचा नहीं करता है।

गद्य खण्ड

स्वयं प्रकाश

नेता जी का चश्मा

सारांश

देशभक्ति का सन्देश देने वाला यह पाठ स्पष्ट करता है कि देशभक्ति केवल किसी विशेष भू-भाग से प्रेम करना नहीं, अपितु देश के प्रत्येक नागरिक, प्रकृति, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, पर्वत, पहाड़, झरने आदि सभी से प्रेम करना एवं उनकी रक्षा करना है| लेखक ने चश्मे बेचने वाले कैप्टेन के माध्यम से एक ऐसे साधारण व्यक्ति के कार्य का वर्णन किया है, जो अभावग्रस्त जिन्दगी व्यतीत करते हुए भी देशभक्ति की भावना रखता है|

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. नेताजी की मूर्ति किससे बनी थी?
क. पत्थर की
ख. संगमरमर की
ग. लोहे की
घ. लकड़ी की
उत्तर = संगमरमर की

2. पहली बार कस्बे से गुजरने पर हालदार साहब मूर्ति पर क्या देखकर चौंके?
क. टोपी
ख. छाता
ग. चश्मा
घ. इनमें से कोई नहीं
उत्तर= चश्मा

3. कस्बे से जाने के बाद भी हालदार साहब किसके बारे में सोचते रहे?
क. पानवाले के
ख. चश्मेवाले के
ग. मूर्ति के
घ. कस्बे के
उत्तर= मूर्ति के

4. नेताजी की बगैर चश्मे वाली मूर्ति किसे बुरी लगती थी?
क. हालदार साहब को
ख. कस्बेवालों को
ग. पानवाले को
घ. चश्मे वाले को
उत्तर= चश्मे वाले को

5. लोग चश्मे वाले को किस नाम से बुलाते थे?

क. सिपाही
ख. कैप्टन
ग. पुलिस
घ. थानेदार
उत्तर= कैप्टन

6. एक बार कस्बे से गुजरते समय हालदार साहब को मूर्ति में क्या अंतर दिखाई दिया?
क. मूर्ति पर चश्मा नहीं था
ख. मूर्ति टूटी हुई थी
ग. मूर्ति गंदी थी
घ. इनमें से कोई नहीं
उत्तर= मूर्ति पर चश्मा नहीं था

7. हालदार साहब को किसका मजाक उड़ाना अच्छा नहीं लगा?
क. मूर्ति का
ख. पानवाले का
ग. चश्मेवाले का
घ. देश का
उत्तर= चश्मेवाले का

8. चश्मेवाले को पानवाला क्या समझता था?
क. कैप्टन
ख. पागल
ग. ईमानदार
घ. गरीब
उत्तर= पागल

9. नेताजी की मूर्ति की ऊँचाई कितनी थी?
क. 4 फुट
ख. 3 फुट
ग. 5 फुट
घ. 2 फुट
उत्तर = 2 फुट

10. किसे देखकर हालदार साहब के चेहरे पर कौतुकभरी मुस्कान फ़ैल गई?
क. पानवाले को
ख. बच्चे को
ग. मूर्ति के चेहरे को
घ. इनमें से कोई नहीं
उत्तर= मूर्ति के चेहरे को

<u>लघुत्तरिये प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न - 1

सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे ?

उत्तर : 1

चश्मेवाला कभी सेनानी नहीं रहा परन्तु चश्मेवाला एक देशभक्त नागरिक था। उसके हृदय में देश के वीर जवानों के प्रति सम्मान था। वह अपनी ओर से एक चश्मा नेताजी की मूर्ति पर अवश्य लगाता था उसकी इसी भावना को देखकर लोग उसे कैप्टन कहते थे।

प्रश्न -2 – क

हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा - हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे ?

उत्तर 2 – क

हालदार साहब इसलिए मायूस हो गए कि कैप्टन अब मर चुके हैं और उसके समान अब देश प्रेमी कोई बचा न था। नेताजी जैसे देशभक्त के लिए उसके मन में सम्मान की भावना थी। उसके मर जाने के बाद हालदार साहब को लगा कि अब समाज में किसी के भी मन में नेताजी या देशभक्तों के प्रति सम्मान की भावना नहीं है।

प्रश्न - 2 – ख

हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा - मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है ?

उत्तर: 2 – ख

मूर्ति पर लगे सरकंडे का चश्मा इस बात का प्रतीक है कि आज भी देश की आने वाली पीढ़ी के मन में देशभक्तों के लिए सम्मान की भावना है। भले ही उनके पास साधन न हो परन्तु फिर भी सच्चे हृदय से बना वह सरकंडे का चश्मा भी भावनात्मक दृष्टि से मूल्यवान है। अतः उम्मीद है कि बच्चे गरीबी और साधनों के बिना भी देश के लिए कार्य करते रहेंगे।

प्रश्न - 2 – ग

हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा - हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे?

उत्तर: 2 – ग

उचित साधन न होते हुए भी किसी बच्चे ने अपनी क्षमता के अनुसार नेताजी को सरकंडे का चश्मा पहनाया। यह बात उनके मन में आशा जगाती है कि आज भी देश में देश-भक्ति जीवित है भले ही बड़े लोगों के मन में देशभक्ति का अभाव हो परन्तु वही देशभक्ति सरकंडे केचश्मे के माध्यम से एक बच्चे के मन में देखकर हालदार साहब भावुक हो गए।

प्रश्न - 3 आशय स्पष्ट कीजिए - "बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है औरअपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।"

उत्तर: 3 देशभक्तों ने देश को आज़ादी दिलाने के लिए अपना सर्वस्व देश के प्रति समर्पित कर दिया। आज जो हम स्वत्रंत देश में आज़ादी की साँस ले रहे है यह उन्हीं के कारण संभव हो पाया है, उन्हीं के

कारण आज़ाद हुआ है। परन्तु यदि किसी के मन में ऐसे देशभक्तों के लिए सम्मान की भावना नहीं है, वे उनकी देशभक्ति पर हँसते हैं तो यह बड़े ही दु:ख की बात है। ऐसे लोग सिर्फ़ अपने बारे में सोचते हैं, वे केवल स्वार्थी होते हैं। लेखक ऐसे लोगों पर अपना गुस्सा व्यक्त किया है।

प्रश्न - 4

पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर 4

पानवाला पूरी की पूरी पान की दुकान है, सड़क के चौराहे के किनारे उसकी पान की दुकान है। वह काला तथा मोटा है, उसकी तोंद भी निकली हुई है, उसके सिर पर गिने-चुने बाल ही बचे हैं। वह एक तरफ़ ग्राहक के लिए पान बना रहा है, वहीं दूसरी ओर उसका मुँह पान से भरा है। पान खाने के कारण उसके होंठ लाल तथा कहीं-कहीं काले पड़ गए हैं। स्वभाव से वह मजाकिया है। वह बातें बनाने में माहिर है।

Q 5

"वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल!" कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

उत्तर: 5

पानवाले ने कैप्टन को लँगड़ा तथा पागल कहा है। जो कि अति गैर जिम्मेदाराना और दुर्भाग्यपूर्ण वक्तव्य है। कैप्टन में एक सच्चेदेशभक्त के वे सभी गुण मौजूद हैं जो कि पानवाले में या समाज के अन्य किसी वर्ग में नहीं है। वह भले ही लँगड़ा है पर उसमें इतनी शक्ति है कि वह कभी भी नेताजी को बग़ैर चश्मे के नहीं रहने देता है। अत: कैप्टन पानवाले से अधिक सक्रिय, विवेकशील तथा देशभक्त है।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न -6 – क

निम्नलिखित वाक्य पात्रों की कौन-सी विशेषता की ओर संकेत करते हैं -हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को निहारते।

उत्तर: 6 – क

यहाँ पर हमें हालदार साहब की निम्न विशेषताओं के बारे में पता चलता है –

नेताजी के रोज़ बदलते चश्मे को देखने के लिए वे उत्सुक रहते थे।

नेताजी को पहनाए गए चश्मे के माध्यम से वे कैप्टन की देशभक्ति देखकर खुश होते थे क्योंकि वे स्वयं देशभक्त थे।

कैप्टन के प्रति उनके मन में श्रद्धा थी।

प्रश्न - 6 – ख

निम्नलिखित वाक्य पात्रों की कौन-सी विशेषता की ओर संकेत करते हैं -पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला -साहब ! कैप्टन मर गया।

उत्तर: 6 – ख

यहाँ पर हमें पानवाले की निम्न विशेषताओं के बारे में पता चलता है –

पानवाला भावुक तथा संवेदनशील था। कैप्टन के मर जाने से वह दु:खी था।

कैप्टन के लिए उसके मन में स्नेह था। भले ही कैप्टन के जीते-जी उसने उसका मजाक उड़ाया था।

कहीं न कहीं वह भी कैप्टन की देशभक्ति पर मुग्ध था। कैप्टन याद आने पर उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

प्रश्न - 6 – ग

निम्नलिखित वाक्य पात्रों की कौन-सी विशेषता की ओर संकेत करते हैं –

कैप्टन बार-बार मूर्ति पर चश्मा लगा देता था।

उत्तर: 6 – ग

यहाँ पर हमें कैप्टन की निम्न विशेषताओं के बारे में पता चलता है - वह देशभक्त था। नेताजी के लिए उसके मन में सम्मान की भावना थी। इसलिए नेताजी को बग़ैर चश्मे के देखना उसे अच्छा नहीं लगता था।

आर्थिक विपन्नता के कारण वह नेताजी को स्थाई रुप से चश्मा नहीं पहना पाता था। इसलिए वह अपनी ओर से कोई न कोई चश्मा उनकी आँखों पर लगा ही देता था।

रामवृक्ष बेनीपुरी

बालगोविन भगत

पाठ का सारांश

यह पाठ रेखाचित्र शैली में रचित है। इसमें लेखक ने एक वैश्य वर्ग से संबंधित बालगोबिन भगत के व्यवहार और जीवन को सच्चा सन्यासी माना है। लेखक स्वयं ब्राह्मण वर्ग से है जो समाज के प्रथम सोपान पर आसीन है। उसका सिर उस वैश्य के समक्ष स्वयं ही झुक जाता है।

बाल गोबिन भगत मझोले कद के गोरे-चिट्टे आदमी थे, उम्र साठ से ऊपर की थी, बाल सफेद हो गए थे। उनका चेहरा सफेद बालों से जगमग रहता था। कमर में लंगोटी तथा सिर पर कबीरपंथियों को कनटोपी पहने रहते थे। सर्दियों में वे काला कंबल ओढ़ लेते थे। उनके मस्तक पर चंदन तथा गले में तुलसी की माला शोभायमान रहता था। वे साधु नहीं थे। लेखक ने उनके बेटे-बहू को भी नजदीक से देखा था। भगत जी की थोड़ी खेती-बाड़ी भी थी और एक साफ सुथरा मकान भी था। बालगोविन साधु की सभी परिभाषाओं परखरे उतरते थे। वे कबीरपंथी मे अतः उन्हीं के भजन गाते रहते थे। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे और व्यवहार खरा रखते थे। ये बिना पूछे कभी किसी का कोई सामान नहीं लेते थे। वे अपने खेत में उत्पादित वस्तु को घर से चार कोस दूर स्थित एक कबीरपंथी मठ में ले जाते थे। वहाँ से जो प्रसाद स्वरूप उन्हें प्राप्त होता। उस से ही वे अपना घर चलाते थे।

आषाढ़ के दिनों में वे स्वयं कीचड़ से लथपथ हो रोपनी करते भादों की अंधियारी में उनकी खजडी बज उठती थी। सारा संसार सोता परंतु उनका संगीत जागता रहता था। कार्तिक मास आते ही उनकी प्रभातियों (प्रातः काल में गाया जाने वाला गीत) प्रातः काल में ही आरंभ हो जाती है। माघ मास में जब ठंड अपने चरम पर होती है उस समय उनकी अँगुलियाँ खेजड़ी पर चलना आरंभ कर देती हैं और गाते-गाते वह इतने जोश में आ जाते है कि उनके मस्तक पर श्रम बिंदु अर्थात पसीने की बूँद चमक पड़ती। वे गाना गाते-गाते नृत्य भी करने लगते थे। बालगोबिन भगत का चरित्र सुख-दुख से ऊपर था। बालगोबिन भगत की संगीत साधना का चरमोत्कर्ष उस दिन देखने को मिला जब उन्होंने अपने पुत्र की मौत को उत्सव का माहौल दिया क्योंकि ये इसे आत्मा परमात्मा का मिलन बता रहे थे। उनके अनुसार इसका शोक मनाना उचित नहीं था। भगत जी अपने पुत्र के शव को सफेद कपड़े से ढंककर उस पर तुलसीदल और कुछ फूल बिखेर कर सिरहाने एक चिराग जलाकर आसन जमाकर गीत गा रहे थे। अपने पतोहू से भी शोक त्याग कर उत्सव मनाने को प्रेरित कर रहे थे। बालगोबिन भगत समाज सुधारक नहीं थे परंतु उन्होंने तत्कालीन बहुत-सी प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध काम | किया। उन्होंने अपने पतोहू से बेटे की मुखाग्नि दिलवाई। श्राद्ध की अवधि पूरी होने पर पतोहू के भाई को बुलाकर उसके पुनर्विवाह का आदेश दिया। बालगोबिन भगत की मृत्यु भी उनकी व्यक्तित्व के अनुरूप शांतिप्रिय ढंग से हुई। वे लगभग तीस कोस चलकर गंगा स्नान को गए और वहाँ साधु-संन्यासियों की संगत में जमे रहे। वहाँ से लौटकर आए तो उन्हें ज्वर (बुखार) ने घेर लिया परंतु वे अपने नित्य कर्म में लगे रहे और उसी स्थिति में लगे लगे एक दिन सुबह वे स्वर्ग सिधार गए।

गद्यांश के आधार पर बहुविकल्पीय प्रश्न

ऊपर की तसवीर से यह नहीं माना जाए कि बालगोबिन भगत साधु थे। नहीं, बिलकुल गृहस्थ उनकी गृहिणी की तो मुझे याद नहीं, उनके बेटे और पतोहू को तो मैंने देखा था। थोड़ी खेतीबारी भी थी, एक

अच्छा साफ-सुथरा मकान भी था। किंतु, खेतीबारी करते, परिवार रखते भी, बालगोविन भगत साधु थे- साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरनेवाले कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते। किसी से भी दो-टूकबात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखाह झगड़ा मोल लेते। किसी की चीज नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते। इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले आते कि लोगों को कुतूहल होता – कभी वह दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते। वह गृहस्थ थे, लेकिन उनकी सब चीज 'साहब' की थी। जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते जो उनके घर से चार कोस दूर पर था एक कबीरपंथी मठ से मतलब! वह दरबार में 'भेंट' रूप रख लिया जा 'प्रसाद' रूप में जो उन्हें मिलता, उसे घर लाते और उसी से गुज़र चलाते।

(क)बालगोविन भगत साहब मानते थे-

(i)अपने बेटे को। (ii) अपनी बहू को

(iii) संत कबीर को। (iv) लेखक को

(ख)बालगोविन भगत थे-

(i)किसान (iii)गृहस्थ

(ii) कबीर के उपासक (iv)उपरोक्त सभी

(ग)भगत किसका आदेश मानते थे ?

(i)गांववालों का (iii) पतोहू का

(iii)मठ का (iv)कबीर का

(घ)निम्न में बालगोविन भगत की विशेषता है-

(i)झूठ नहीं बोलते (ii) खरा व्यवहार रखते

(iii)किसी से दो टूक बात करते (iv)उपरोक्त सभी

(ङ)बालगोविन भगत अपने खेत का उपज देते थे-

(i)अपने बेटे को (ii) अपनी बहू को

(iii)गाँव में बाँट देते थे। (iv)कबीरपंथी मठ को

उत्तर: (क) (iii), (ख) (iv), (ग) (iv), (घ) (iv), (ङ) (iv) 1

आसमान बादल से घिरा धूप का नाम नहीं। ठंडी पुरवाई चल रही ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर तरंग झंकार-सी कर उठी। यह क्या है- यह कौन है। यह पूछना न पड़ेगा। बालगोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथडे, अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं। उनकी अँगुली एक-एक धान के पौधे को पंक्तिबद्ध खेत में बिठा रही है। उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ को ऊपर, स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगों के कानों की ओर। बच्चे खेलते हुए झूम उठते हैं; मेड़ पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते हैं, वे गुनगुनाने लगती हैं; हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते हैं; रोपनी करनेवालों की अंगुलियों एक अजीब क्रम से चलने लगती है। बालगोबिन भगत का यह संगीत है या जादू।।

(क)बालगोविन भगत रोपनी करते समय क्या करते थे?

(i)रोते थे (ii)भगवान का नाम लेते थे।

(iii)गाते थे (iv)सोते थे

(ख)बालगोविन भगत का संगीत था-

(i)जादू (ii)कर्णप्रिय

(iii)मंत्र मुग्ध करने वाला (iv)उपरोक्त सभी

(ग)बालगोविन भगत अपने खेत में किस चीज की खेती करते थे?

(i)गेहूँ (ii) जौ

(iii)धान (iv)ज्वार

(घ)गद्यांश में किस ऋतु का वर्णन है ?

(i) ग्रीष्म (ज्येष्ठ)। (ii) आषाढ़

(iii) श्रावण (iv) कार्तिक

(ङ) काव्यांश में जादू कहा गया है-

(i)खेत की हरियाली को। (ii)मठ की महानता को

(iii)बालगोबिन के संगीत को (iv)बालगोबिन के व्यवहार को

उत्तर: (क) (iii), (ख) (iv), (ग) (iii), (घ) (ii), (ङ) (iii) |

भादो की वह अँधेरी अधरतिया। अभी, थोड़ी ही देर पहले मुसलधार वर्षा खत्म हुई है। बादलों की गरज, बिजली की तड़प में आपने कुछ नहीं सुना हो, किंतु अब झिल्ली की झंकार या दादुरों की टर्र-टर्र बालगोबिन भगत के संगीत को अपने कोलाहल में डुबो नहीं सकतीं। उनकी खँजड़ी डिमक डिमक बज रही है और वे गा रहे हैं- "गोदी में पियवा चमक उठे सखिया, चिहुँक उठे ना!" हाँ, पिया तो गोद में ही है, किंतु वह समझती है, वह अकेली है, चमक उठती है, चिहुँक उठती है। उसी भरे बादलों वाले भादो की आधी रात में उनका यह गाना अँधेरे में अकस्मात कौंध उठने वाली बिजली की तरह किसे न चौंका देता? अरे, अब सारा संसार निस्तब्धता में सोया है, बालगोबिन भगत का संगीत जाग रहा है, जगा रहा है- तेरी गठरी में लागा चोर, मुसाफिर जाग जरा!

(क)गद्यांश में किस ऋतु का वर्णन है ?

(i)ज्येष्ठ (ii)आषाढ़

(iii)श्रावण (iv)भादो

(ख)बालगोविन भगत के पास वाद्ययंत्र था-

(i)हारमोनियम (ii)ढोलक

(iii)खंजड़ी (iv)तबला

(ग)जब सारा संसार सोया था उस समय कौन जाग रहा था?

(i)बालगोबिन का संगीत। (ii)गाँव के कुत्ते

(iii)मठाधीश (iv) किसान।

(घ)रात के अँधियारे में आधी रात को बालगोविन भगत निम्न में कौन गीत गा रहे हैं?

(i)गठरी में लागा चोर। (ii)गोदी में पियवा ... चिहुँक उठे

(iii)उपर्युक्त दोनो। (iv)राम-राम गुण गाए जा, बेड़ा पार लगाए जा

(ङ)भगत जी रात को क्यों गा रहे थे?

(i)उन्हें संगीत साधना में 'रात-दिन' का भान नहीं था

(ii) वे रात की शांति में ही गाते थे।

(iii)कबीरपंथी रात को ही गाते हैं।

(iv)साधु-संत रात-दिन नहीं देखते

उत्तर: (क) (iv), (ख) (iii), (ग) (i), (घ) (iii), (ङ) (i) |

गद्य-पाठों पर आधारित उच्च चिंतन एवं मनन वाले प्रश्नोत्तर

NCERT **पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर**

प्रश्न:1 खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोविन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?

उत्तर: खेतीबारी से जुड़े होते हुए भी गृहस्थ बालगोबिन भगत संन्यासी थे। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ उनके सच्चा संन्यासी होने की ओर संकेत करती हैं। वे कबीर को 'साहब' मानते थे। कबीर के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों के अनुसार आचरण करते थे। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे। सबके साथ भला व्यवहार करते। किसी की चीज को न तो छूते और न ही व्यवहार में लाते। वे गृहस्थ थे, उनका परिवार था, किंतु वे सब चीज 'साहब' की हैं ऐसा मानते थे। जो कुछ उनके खेत में पैदा होता उसे सिर पर लादकर पहले साहब के दरबार में ले जाते। जब दरबार में उसमें से भेंट स्वरूप रख लिया जाता तथा उसमें से प्रसाद स्वरूप जो मिलता उसे अपने घर ले आते थे। उसी में अपनी गुजर चलाते थे। इस प्रकार बालगोबिन भगत का व्यक्तित्व गृहस्थ होते हुए भी सच्चे संन्यासी का है।

प्रश्न 2. भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी ?

उत्तर : भगत की पुत्रवधू बालगोबिन भगत को बुढ़ापे में अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी क्योंकि पुत्र की मृत्यु के पश्चात् वे बिल्कुल अकेले पड़ गए थे। उनकी सेवा करके वह अपने वैधव्य के दिन बिताना चाहती थी। भगत जी बूढ़े थे। पुत्रवधू को उनकी भोजन की चिंता थी तथा बीमार पड़ने पर उनकी दवा-दारू और सेवा कौन करेगा? वह सब सोचकर वह भगत जी को अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी।

प्रश्न 3. भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं?

उत्तर: जब बालगोबिन भगत का इकलौता बेटा मरा तो उसने उसे आँगन में एक चटाई पर लिटाया और सफेद कपड़े से ढाँक दिया। उसके ऊपर फूल और तुलसी बिखेर दी। सिरहाने एक दीपक जला दिया। उसके सामने जमीन पर बैठ कर भगत जी अपने पुराने स्वर और तल्लीनता के भाव से गीत गाते रहे। गाते-गाते वे बीच में कहते कि यह रोने का नहीं उत्सव मनाने का समय है। आत्मा और परमात्मा का मिलन हुआ है, विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली है, सबसे बड़ा आनंद का समय यही है।

प्रश्न 4. भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर: बालगोबिन भगत एक संत स्वभाव के व्यक्ति थे। जैसा भी मिला उसे पाकर संतोष धारण कर लिया। वे सामान्य कद के गोरे- चिट्टे व्यक्ति थे। लगभग साठ वर्ष से ऊपर की आयु होने के कारण बाल सफेद हो गए थे। वे दाढ़ी या जटाएँ नहीं रखते थे। वे नाम मात्र के कपड़े पहनते थे जिनमें एक लँगोटी और सिर पर कबीरपंथियों जैसी कनफटी टोपी थी। सर्दी में एक कंबल ले लेते थे। माथे पर रामानंदी चंदन का टीका लगाते थे और गले में तुलसी की जड़ों की बेडौल माला पहने रहते थे।

प्रश्न 5. बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी ?

उत्तर: बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण थी क्योंकि यद्यपि वे संन्यासी नहीं थे किंतु उनकी वेशभूषा कबीरपंथियों के समान थी। वे परिवार में रहते हुए साधु धर्म का निर्वाह कर रहे थे। न तो वे बिल्कुल साधु थे और न ही पूरे गृहस्थ वे गृहस्थ होते. हुए साधु-का-सा जीवनयापन कर रहे थे। उनका बेटा और पुत्रवधू थी, जिनका वह खेती-बाड़ी करके पालन-पोषण करते थे। कबीर के पदों को

मस्तीपूर्वक गाते हुए अपनी दिनचर्या करते। उनके व्यवहार में साधुओं जैसा संत स्वभाव था। वे हर वस्तु को 'साहब' की मानते थे। यहाँ तक कि पुत्र की मृत्यु पर रोने की बजाय गीत गाकर उत्सव मनाने लगे। वे यह मानते थे कि आत्मा परमात्मा से मिल चुकी है अतः हमें आनंद मनाना चाहिए। उन्होंने अपनी पुत्रवधू को अपनेपुत्र की मृत्यु के बाद वैधव्यपूर्ण जीवनयापन करने की बजाय दुबारा शादी करने का सुझाव दिया। बालगोबिन भगत का गृहस्थ होते हुए साधुओं जैसा व्यवहार सभी लोगों के लिए अचरज का कारण था।

प्रश्न 6. पाठ के आधार पर बालगोविन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: बालगोबिन भगत कबीरदास के गीतों को गाते थे। कबीरदास के सीधे-सादे पद उनके कंठ से निकलकर सजीव हो उठते थे। उनको स्वर अत्यंत मधुर था जिसे सुनकर बच्चे खेलते हुए झूम उठते थे, मेड़ पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते थे। वे घर को गुनगुनाने लगती थी। हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते थे। उनका मधुर गान ऐसा लगता था जैसे वे एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ को ऊपर स्वर्ग की ओर भेज रहे हैं और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगों के कानों की ओर।

प्रश्न 7. कुछ मार्मिक प्रसंगों के आधार पर यह दिखाई देता है कि बालगोविन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: पाठ बालगोबिन भगत में ऐसे कई प्रसंग आए है जिससे पता चलता है कि बालगोविन भगत तत्कालीन सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। कुछ प्रमुख प्रसंग निम्नलिखित है।

(i) वे घर छोड़कर साधु बन जाने में विश्वास नहीं करते थे वे साधु भी थे और गृहस्थ भी घर में रहकर वे साधु जैसा जीवन व्यतीत करते थे।

(ii) वे किसी की मृत्यु पर विचलित नहीं होते थे। वे मृत्यु को आत्मा-परमात्मा का मिलन मानते थे और आनंद की बात कहते थे। यहाँ तक कि अपने पुत्र की मृत्यु पर भी सहज बने रहे।

(iii) वे वैधव्य जीवन के खिलाफ थे। अपनी जवान विधवा बहू को पुनर्विवाह करने का आदेश दिया।

(iv) उन्होंने अपने पुत्र की चिता को अग्नि अपनी पुत्रवधू से दिलवाई। सामान्यतः भारतीय समाज में स्त्रियाँ यह कार्य नहीं करती।

प्रश्न 8. धान की रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत की स्वर लहरियाँ किस तरह चमत्कृत कर देती थीं? उस माहौल का शब्द चित्र प्रस्तुत कीजिए। उत्तरः खेतों में धान की रोपाई चल रही थी बालगोबिन भगत भी अंगुली से एक-एक धान के पौधों को पंक्तिबद्ध करके रोप रहे थे। तभी उन्होंने मस्ती भरी तान छेड़ी। उनके गीत का स्वर इतना मनमोहक, ऊँचा और आरोही था कि वह सीधे आकाश में स्थित परमात्मा को डेरता प्रतीत होता था। उसे सुनकर खेतों में उछल-कूद मचाते बच्चों में एक मस्ती आ जाती थी। मेड़ों पर बैठी औरतों के होठ गाने के लिए बेचैन हो उठते थे। किसानों की अंगुलियों में भी एक क्रमिक लय आ जाती थी। हल चलाने वाले किसानों के पैर संगीत की थाप पर चलने लगते। इस प्रकार उनके संगीत का जादू सारे वातावरण पर छा जाता।

प्रश्न 9. पाठ के आधार पर बताएँ कि बालगोविन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है?

उत्तर: प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बालगोबिन भगत के मन में कबीर के प्रति सच्ची श्रद्धा की भावना थी। बालगोबिन भगत ने गृहस्थ रहते हुए साधु जैसा जीवनयापन किया। कबीरपंथियों के समान परमात्मा को 'साहब' मानकर हर वस्तु को साहब की माना। कबीरपंथियों जैसा

संत स्वभाव, वेशभूषा, काली कमली धारण करना आदि विशेषताएँ भगत जी की कबीर के प्रति श्रद्धा व्यक्त करती हैं। बालगोबिन भगत के मन में कबीर जी द्वारा चलाए गए कबीर पंथ, आडंबरों का विरोध, परमात्मा को कण-कण में विद्यमान मानना, मनुष्य का परमात्मा का अंश होना, संत स्वभाव धारण करना आदि रूपों में श्रद्धा व्यक्त हुई है।

प्रश्न 10 आपकी दृष्टि में भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे?

उत्तर: भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के अनेक कारण थे, यथा- कबीर समाज में प्रचलित रूढ़िवादी सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। वे भगवान के निराकार रूप को मानते थे जिसमें मनुष्य के अंत समय में आत्मा से परमात्मा का मिलन होता है। वे गृहस्थी होते हुए भी व्यवहार से साधु थे। इसी प्रकार कबीर जीवन और जीवन की वस्तुओं में ईश्वर की कृपा मानते थे। बालगोबिन भगत कबीर के जीवन की इन विशेषताओं के कारण ही उनके प्रति अगाध श्रद्धा रखते होंगे।

प्रश्न 11. गाँव का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश आषाढ़ चढ़ते ही उल्लास से क्यों भर जाता है?

उत्तर: गाँव में किसानों की संख्या अधिक होती है। उनका मुख्य धंधा खेती होता है। ज्येष्ठ की तपती गर्मी के पश्चात् आषाढ़ मास में बादल उमड़कर वर्षा करने के लिए आ जाते हैं। इससे किसानों के हृदय में प्रसन्नता का भाव भर जाता है। वर्षा की रिमझिम आरंभ हो जाती है। किसान धान की रोपाई का काम आरंभ कर देते हैं। गाँव के लोग खेतों में काम पर लग जाते हैं।

प्रश्न 12. ऊपर की तस्वीर से यह नहीं माना जाए कि वालगोविन भगत साधु थे।" क्या 'साधु' की पहचान पहनावे के आधार पर की जानी चाहिए? आप किन आधारों पर यह सुनिश्चित करेंगे कि अमुक व्यक्ति 'साधु' है?

उत्तर: लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी बालगोविन भगत के बाह्य रूप का जो वर्णन करते हैं वह पूर्णतः साधु का है। परंतु किसी को वेषभूषा के आधार पर साधु मानना उपयुक्त नहीं है। साधु की पहचान उसके आचार-विचार तथा व्यवहार से होती है। किसी को साधु कहने से पहले उसमें निम्नलिखित गुण अवश्य देखना चाहूँगा:

(i)परोपकारी (ii) राग द्वेष से राहत (iii) स्वार्थ भावना रहित (iv) नियमित दिनचर्या (v) ज्ञान का स्तर।

प्रश्न 13. पोह और प्रेम में अंतर होता है। भगत के जीवन की किस घटना के आधार पर इस कथन का सच सिद्ध करेंगे?

'उत्तर: मोह और प्रेम दो ध्रुव हैं क्योंकि दोनों एक दूसरे से अलग हैं। मोह में अग्रता का भाव होता है। जबकि प्रेम सात्विकता भाव से ओत प्रोत होता है। भगत के जीवन की निम्न घटना में इसे भलीभाँति समझा जा सकता है। भगत का इकलौता पुत्र जो सुस्त और बोदा-सा था परंतु भगत उससे विशेष लगाव रखते थे। उनका मानना था कि कमजोर व्यक्ति ज्यादा देखभाल और प्रेम का हकदार होता है। उनकी पुत्रवधू भी सुशील थी। पुत्र मरने पर भगत उसे सहन रूप में लेते हैं और वे इसे आनंद का उत्सव बताते हैं। पुत्र के मृत्युपरांत वे पुत्रवधू को दूसरी शादी करने का आदेश देकर उसके भाई के साथ भेज देते हैं। वे उसे विधवा रूप में नहीं देखना चाहते हैं।

परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. बालगोविन की मृत्यु को गौरवशाली मृत्यु कैसे कहेंगे?

उत्तर: बालगोबिन को मृत्यु को हम गौरवशाली मृत्यु कहेंगे। वह अपनी अंतिम साँस तक प्रभु भक्ति में लीन रहे। वह नियमित दिनचर्या का पालन करते रहे। अपने जीवन को सत्कर्म में लगाए रहे। न किसी से छल-कपट किया, न किसी से कुछ माँगा।

वह गाते-गाते जिए और गाते-गाते मरे। जीवन में सभी को अपना संगीत बाँटकर गए। इसलिए हम इसे गौरवशाली मृत्यु की संज्ञा देंगे।

प्रश्न 2. बालगोविन के गीत-संगीत को आप संगीत साधना कहेंगे या भक्ति भावना ?

उत्तर: बालगोबिन का गीत-संगीत केवल मनोरंजन या शांति का उपाय नहीं था। वह उनकी आत्मा को परमात्मा से मिलाने का साधन था। तभी संगीत के स्वर उनकी आत्मा की गहराइयों से उठते थे तथा अन्य सभी को झंकृत कर देते थे। इसलिए हम इसे भक्ति भावना का प्रसाद कहेंगे, कोरी संगीत-साधना नहीं।

प्रश्न 3 कार्तिक मास से फाल्गुन मास तक बालगोविन भगत सुबह के समय क्या करते थे ?

उत्तर: कार्तिक मास में बालगोबिन भगत की प्रभाती शुरू हो जाती थी यह प्रभाती कार्तिक मास से शुरू होकर फाल्गुन मास तक चलती थी। वे सुबह अँधेरे में उठते गाँव से दो मील नदी पर स्नान करने जाते थे। वापसी में गाँव के पोखर के ऊंचे भिंडे पर अपनी खेजड़ी बजाते हुए गीत गाते थे। वे गीत गाते समय आस-पास के वातावरण को भूल जाते थे। उनमें माघ की सर्दी में भी गीत गाते समय इतनी उत्तेजना आ जाती थी कि उन्हें पसीना आने लगता था, जबकि उस समय सुनने वालों का शरीर ठंड के कारण कँपकँपा रहा होता था।

प्रश्न 4. बालगोविन भगत की मृत्यु किस प्रकार हुई ?

उत्तर: बालगोबिन भगत हर वर्ष की तरह गंगा स्नान गए थे। अब वे बूढ़े हो गए थे परंतु अपने नियम पर अडिग रहते थे। वहीं पूरे रास्ते गाते-बजाते गए और कुछ नहीं खाया। जब वे गंगा स्नान से लौटे तो उनकी तबीयत खराब थी। धीरे-धीरे उनकी तबीयत बिगड़ने लगी थी परंतु अपने नियम व्रतों में ढील नहीं आने दी। वही दोनों समय गाना, स्नान ध्यान करना और खेती-बाड़ी की देखभाल करना वे अपने सभी कार्य स्वयं करते थे। लोगों की आराम करने की सलाह को हंसी में टाल देते थे। एक शाम गीत गाकर सोए थे, उसी रात जीवन की माला टूट गई थी। लोगों को सुबह पता चला कि बालगोबिन भगत नहीं रहे।

प्रश्न 5. गीत गाते समय वालगोविन भगत क्या कर रहे थे? उनके काम करने का तरीका कैसा था?

उत्तर: गीत गाते समय बालगोबिन भगत अपने खेत में धान की रोपनी कर रहे थे। उस समय उनका पूरा शरीर कीचड़ में सना हुआ है। वे अपनी सधी हुई अंगुलियों से धान के एक-एक पौधे को पंक्तिबद्ध रूप में खेत में लगा रहे हैं।

प्रश्न 6. कौन-सी स्वर-तरंग लोगों के कानों में झंकार उत्पन्न कर देती है?

उत्तर: आसमान में बादल घिर आने पर ठंडी पुरवाई के बीच जब बालगोबिन भगत गीत गाने लगते हैं, तब उनके गीतों की स्वर-तरंग लोगों के कानों में झंकार उत्पन्न कर देती है।

यशपाल

लखनवी अंदाज

पाठ का सारांश

लेखक को बहुत दूर नहीं जाना था परंतु उसने रेलवे के सेकंड क्लास में टिकट ले लिया क्योंकि भीड़-भाड़ से अलग उन्हें नई कहानी के विषय के बारे में सोचना था। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि वह रेल की खिड़की से प्रकृति के मनोरम दृश्यों को निहारकर कुछ नया सोचें। दुर्भाग्यवश जिस डिब्बे में लेखक चढ़ा, उसी में पहले से ही एक नवाब साहब पालची मारे बैठे हुए थे। उनके ठीक सामने दो ताजे खीरे तौलिए पर रखे हुए थे। लेखक को उस डिब्बे में देखकर नवाब साहब ने कोई उत्साह नहीं दिखाया। लेखक ने भी उनके सामने की बर्थ पर बैठकर आत्मसम्मान दिखाते हुए आँखें चुरा ली और नवाब साहब की असुविधा और संकोच के बारे में अनुमान लगाने लगा। यह संभव था कि नवाब साहब में बिल्कुल अकेले यात्रा करने के ख्याल में किफायत के विचार से सेकंड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब उन्हें यह अच्छा न लगा हो कि शहर का कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफर करते देखे। अकेले सफर का वक्त काटने के लिए खीरे खरीदे होंगे और अब किसी सफेदपोश के सामने खीरे कैसे खाएं? यह उलझन उनके मन में रही होगी। लेखक कनखियों से नवाब साहब की ओर देख रहे थे। नवाब साहब भी गाड़ी की खिड़की से बाहर देखकर स्थिति पर गौर करते रहे। इसके बाद नवाब साहब ने लेखक को संबोधित कर खीर खाने का आग्रह किया। लेखक को नवाब साहब का अचानक भाव-परिवर्तन करना अच्छा नहीं लगा। उन्हें लगा कि नवाब साहब शराफत दिखाने के लिए ऐसा कह रहे हैं। अतः शुक्रिया कहकर मना कर दिया। फिर नवाब साहब ने खीरों के नीचे रखा तौलिया झाड़कर सामने बिछा दिया। खीरों को पानी से धोया और तौलिए से पोंछ लिया। जेब से चाकू निकालकर खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला। फिर खीरों को छीलकर तौलिए पर सजाया। इसके बाद नवाब साहब ने बहुत करीने से खीरे के फाँकों पर जीरा मिला नमक और लाल मिर्च की सुख बुरक दी। लेखक यह सब देखकर सोच रहे थे कि मियाँ बनते तो रईस है, पर लोगों की नजरों से बच सकने के ख्याल से अपनी असलियत पर उतर आए हैं। नवाब साहब ने एक बार फिर लेखक से कहा- "शौक फरमाइए, लखनऊ का बालम खीरा है।" खीरों को देखकर लेखक के मुँह में पानी आ रहा था लेकिन एक बार इनकार कर चुके थे। अतः आत्मसम्मान को बनाए रखना जरूरी था। अतः वे बोले- शुक्रिया, इस वक्त मन नहीं है, मेदा भी जरा कमजोर है, आप शौक फरमाएँ।

नवाब साहब ने खीरे की फाँक को उठाया, मुँह तक ले गए, उसे सूघा और स्वाद के आनंद में उनकी पलकें मुँद गई। नवाब साहब ने फॉक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। वे खीरे की फाँकों को नाक के पास ले जाकर खिड़की के बाहर फेंकते रहे। इस प्रकार खीरे की सब फाँकों को फेंककर तौलिए से हाथ और होंठ पोंछ लिए और गर्व से लेखक की ओर देखने लगे मानो कह रहे हो- 'यह है खानदानी रईसों का तरीका।'

नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए। लेखक गौर कर रहे थे कि खीरा इस्तेमाल करने के इस तरीके को खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होने का सूक्ष्म और नफीस तरीका जरूर कहा जा सकता है परंतु क्या इस तरीके से पेट भरा जा सकता है? नवाब साहब की ओर से भरे पेट की 'डकार का शब्द सुनाई दिया। नवाब साहब ने लेखक की ओर देखकर कह दिया कि खीरा लजीज होता है, पर मेदे पर बोझ डाल देता है। यह सुनकर लेखक के ज्ञान-चक्षु खुल गए। लेखक को नई कहानी लिखने का विचार मिल गया। जब खीरे की सुगंध और स्वाद मात्र से पेट भर जाने की

डकार आ सकती है तो बिना विचार, घटना और पात्रों से, लेखक की इच्छा मात्र से 'नई कहानी' भी बन सकती है।

गद्यांश के आधार पर बहुविकल्पीय प्रश्न

गाड़ी छूट रही थी। सेकंड क्लास के एक छोटे डिब्बे को खाली समझकर, जरा दौड़कर उसमें चढ़ गए। अनुमान के प्रतिकूल डिब्बा निर्जन नहीं था। एक बर्थ पर लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सफ़ेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे। सामने दो ता जे चिकने खीरे तौलिए पर रखे थे। डिब्बे में हमारे सहसा कूद जाने से सज्जन की आँखों में एकांत चितन में विघ्न का असंतोष दिखाई दिया। सोचा, हो सकता है, यह भी कहानी के लिए सूझ की चिंता में हो या खोरे-जैसी अपदार्थ वस्तु का शौक करते देखे जाने के संकोच में हो।

नवाब साहब ने संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया। हमने भी उनके सामने की बर्थ पर बैठकर आत्मसम्मान में आँखें चुरा लीं।

(क) लेखक स्टेशन कब पहुँचा ?

(i)गाड़ी छूटने से एक घंटा पहले

(ii)गाड़ी के समय पर

(iii)जब गाड़ी छूट रही थी

(iv)जब गाड़ी छूट गई

(ख) लेखक क्या सोचकर डिब्बे में चढ़ा ?

(i)डिब्बा खाली होगा

(ii)डिब्बे में नवाब होंगे

(iii)डिब्बा साफ होगा

(iv)डिब्बा में बैठने को मिलेगा

(ग) डिब्बे में पहले से कौन बैठा था ?

(i)लेखक का मित्र

(ii) एक और लेखक

(iii)एक लखनवी नवाब

(iv) खीरे वाला

(घ) नवाब के समाने क्या रखा था?

(i)खीरा

(ii)ब्रीफकेस

(iii)तकिया

(iv)पानी की बोतल

(ङ) लेखक से किसने संगति का उत्साह नहीं दिखाया ?

(i)टी० टी० ने

(ii)नवाब साहब ने

(iii) मित्र के पिताजी ने

(iv) कुली ने

उत्तर: (क) (iii), (ख) (i), (ग) (iii), (घ) (i), (ङ) (ii) |

ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे। संभव है, नवाब साहब ने बिलकुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफायत के विचार से सेकंड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गवारा न हो कि शहर का कोई सफ़ेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफ़र करता देखे।... अकेले सफर का वक्त काटने के लिए ही खोरे खरीदे होंगे और अब किसी सफ़ेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ?

(क)ठाली बैठने से क्या अभिप्राय है?

(i)खाली बैठना

(ii)बिना कार्य के बैठना

(iii)उपरोक्त दोनो

(iv)व्यस्त रहना

(ख)नवाब साहब की असुविधा का आकलन कौन करने लगा ?

(i) रेल के कर्मचारियों ने

(ii) लेखक ने

(iii) पुलिस ने

(iv) उपरोक्त सभी ने

(ग) लेखक के अनुसार नवाव की असुविधा का कारण था-

(i) लेखक की उपस्थिति

(ii) खीरा

(iii) ट्रेन की गर्मी

(iv) ट्रेन का किराया

(घ) नवाव खीरि नहीं खा रहा था क्योंकि-

(i)वह खीरि को तुच्छ समझता था

(ii) किसी के सामने खीरा खाना अपनी बेइज्जती मानते थे

(iii)उपरोक्त दोनों

(iv)खीरि को पेट के लिए ठीक नहीं समझते थे

(ङ) लेखक का नवाबों के बारे में धारणा था-

(i)वे स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानते थे

(ii)वे अपने बारे में बढ़ा-चढ़ा कर बोलते थे

(iii)स्वयं को औरों से उच्च मानते थे

(iv)उपरोक्त सभी

उत्तर: (क) (iii), (ख) (ii), (ग) (i), (घ) (iii), (ङ) (iv)।

गद्य-पाठों पर आधारित उच्च चिंतन एवं मनन वाले प्रश्नोत्तर

NCERT पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लेखक को नवाब साहब के किन हाव भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

उत्तर: लेखक को नवाब साहब के हाव-भावों से यह महसूस हुआ कि वे लेखक से तनिक भी बातचीत करने के लिए उत्सुक नहीं हैं। क्योंकि जब लेखक पैसेंजर ट्रेन में सेकंड क्लास में एक छोटे डिब्बे को खाली समझकर, दौड़कर उसमें चढ़ गया तो वहाँ एक बर्थ पर लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सफेदपोश सज्जन जो बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे। डिब्बे में सहसा लेखक के कूद जाने से सज्जन की आँखों में एकांत चिंतन में विघ्न का असंतोष साफ दिखाई दिया। अकेले यात्रा के चक्कर में ही लेखक को लगा कि नवाब साहब ने खीरे खरीदे होंगे। लेखक को देखकर नवाब साहब असुविधा और संकोच का अनुभव करने लगे थे।

प्रश्न 2. नवाव साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंततः सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके किस स्वभाव को इंगित करता है?

उत्तर: नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंततः सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया, संभवत:लेखक को नीचा दिखाने और अपनी खानदानी रईसी का परिचय देने के लिए किया होगा। उसका ऐसा करना उसके अभिमान से युक्त स्वभाव को इंगित करता है।

प्रश्न 3. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर : बिना विचार, घटना और पात्रों के भी कहानी लिखी जा सकती हैं। यशपाल के इस विचार से हम पूरी तरह सहमत है। कई बार कोई ऐसी बात स्वतः ही होती चली जाती है। जिसके विषय में न तो हमने कभी सोचा होता है और न ही विचार किया होता है। वह बात बढ़ते-बढ़ते एक कहानी का आकार ले लेती है और घटना न होते हुए भी घटित हो जाती है। देखने में तो वह एक मामूली सी बात होती है लेकिन वह एक महान कथा का रूप धारण कर लेती है।

प्रश्न 4. आप इस निबंध को और क्या नाम देना चाहेंगे?

उत्तर: मैं इस निबंध को 'लखनवी नवाब' या 'नवाबी' शीर्षक देना चाहूँगा।

प्रश्न 5. (क) नवाब साहब द्वारा खीरा खाने की तैयारी करने का एक चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : नवाब साहब ने खीरों को एक-एक कर लोटे के पानी से धोया। खीरे धोने के उपरांत उसे तौलिये से अच्छी तरह से साफ कर अपनी जेब से चाकू को निकाल कर दोनों खीरों के सिरे काटकर उन्हें अच्छी तरह गोदकर झाग निकाला। अब खीरों को छीलकर खीरे की एक जैसी फाँकों को काटकर उन्हें अत्यंत करीने से तौलिए पर सजा दिया। जीरा मिला नमक और पिसी हुई लाल मिर्च को पुड़िया से निकालकर बारी-बारी खीरों की फाँकों पर छिड़का। अब खीरों की फाँके नवाब साहब के खाने के लिए तैयार हो गई।

(ख) किन-किन चीज़ों का रसास्वादन करने के लिए आप किस प्रकार की तैयारी करते हैं?

उत्तर: बिना तैयारी के कुछ भी खाना असंभव है। साधारण चावल भी खाना हो तो उसके लिए थाली में निकालेंगे उसके साथ खाने के लिए दाल, सब्जी, आचार, पापड, घी इत्यादि जुटाएँगे, टेबल साफ-सफाई करके उस पर खाने की प्लेटें सजाएंगे तब चम्मच लेकर उसे खाना प्रारंभ करेंगे। ऐसे ही सभी व्यंजन है जिन्हें खाने से पहले तैयारी करना पड़ता है।

प्रश्न 6. खीरे के संबंध में नवाब साहब के व्यवहार को उनकी सनक कहा जा सकता है। आपने नवाबों की और भी सनकों और शौक के बारे में पढ़ा-सुना होगा। किसी एक के बारे में लिखिए।

उत्तर: पाठ में नवाब के व्यवहार को उनकी सनक ही कहा जा सकता है मैं बचपन से लखनवी नवाबों के बारे में सुनते-पढ़ते आ रहा हूँ। नवाब फिजूलखर्च होते हैं। वे अपने दिखावे और झूठी शान को बनाए रखने के लिए अनावश्यक खर्च करते हैं और अंदर से खोखले होते जाते हैं। ये नवाब अय्याशों की जिंदगी

जीते हैं। उन्हें नृत्य, गीत, मुजरा, शराब आदि जैसी चीजों का विशेष शौक होता है इसके पीछे वे दिवाने होते हैं।

प्रश्न 7. क्या सनक का कोई सकारात्मक रूप हो सकता है? यदि हाँ तो ऐसी सनकों का उल्लेख कीजिए।.

उत्तर: बेशक, सनक का सकारात्मक रूप संभव है। विद्यार्थियों में पढ़ने का सनक, योद्धाओं में लड़ने का सनक, समाजसेवियों में सेवा की सनक तथा किसी देश के नागरिकों में देशभक्ति की सनक आ जाए तो क्या कहना। सब कुछ बदल जाएगा, सनक के बिना कोई भी कार्य पूर्ण नहीं हो सकता।

परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लेखक नवाब साहब को देखते ही उनके प्रति व्यंग्य से क्यों भर जाता है ?

उत्तर: क्योंकि लेखक के मन में लखनवी नवाबों के प्रति पूर्वधारणा है कि वे अपनी आन-बान-शान को बहुत महत्त्व देते हैं। वे हर चीज़ में नजाकत दिखाते हैं तथा स्वयं को औरों से अधिक शिष्ट, शालीन और कुलीन सिद्ध करना चाहते हैं। इस धारणा के कारण उसे नवाब के हर कार्य में नवाबी शान दिखाई दी। उसे नहीं पता कि नवाब साहब सेकंड क्लास में यात्रा क्यों कर रहे हैं, फिर भी वह उसमें खोट देखता है। उसका नवाब को 'लखनऊ' की नवाबी का सफेदपोश सज्जन कहना ही उसकी पूर्वधारणा. का प्रमाण है।

प्रश्न 2. लेखक के सामने नवाब साहब ने खीरा खाने का कौन-सा खानदानी रईस तरीका अपनाया ?

उत्तर: नवाब साहब दूसरों के सामने साधारण-सा खाद्य खीरा खाना नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने खीरे को किसी कीमती वस्तु की तरह तैयार किया। उस लजीज खीरे को देखकर लेखक के मुँह में पानी आ गया था। अब नवाब साहब की इज्जत का सवाल था इसलिए उन्होंने खीरे की फाँक को उठाया नाक तक ले जाकर पाखरे की महक से उनके मुँह में पानी आ गया। उन्होंने उस पानी को गटका और खीरे की फाँक को खिड़की से बाहर फेंक दिया। इस तरह उन्होंने सारा खीरा बाहर फेंक दिया। सारा खीरा फेंक कर लेखक को गर्व से देखा। उनके चेहरे से ऐसा लग रहा था जैसे वह लेखक से कह रहे हो कि नवाबों के खीरा खाने का यह खानदानी रईसी तरीका है।

प्रश्न 3:नवाब ने अपनी नवाबी का परिचय किस प्रकार दिया?

उत्तर: नवाब ने खीरों को पहले पानी से धोया फिर उन्हें तौलिए से पोंछा फिर जेब से चाकू निकालकर उनके सिरे काटे और छीलकर उनकी फाँके काट-काटकर तौलिए पर रखी और उन पर नमक मिर्च का मिश्रण छिड़का। फिर लेखक को भी खीरे खाने का निमंत्रण दिया। अंत में एक एक फाँक को खाने को अपेक्षा सूप सूँघकर खिड़की से बाहर फेंक दिया। उसने ऐसा दिखावा किया कि उसे सुगंध से ही बहुत तृप्ति मिल गई।

प्रश्न 4. खीरा खाने की इच्छा होने पर भी लेखक ने इंकार क्यों कर दिया?

उत्तर: खीरा खाने की इच्छा होने पर भी लेखक ने इसलिए इंकार कर दिया, क्योंकि पहले जब नवाब साहब ने उससे खीरा खाने का आग्रह किया था, तब उसने मना कर दिया था। लेखक ने सोचा कि यदि मैं अब खीरा खाने के अनुरोध को स्वीकार करता है, तो नवाब साहब के मन में मेरे प्रति सम्मान की भावना नहीं रहेगी। इस प्रकार अपना आत्म सम्मान बनाए रखने के उद्देश्य से उसने खीरा खाने से इंकार कर दिया।

प्रश्न 5. नवाव साहब को खीरा काटकर नमक मिर्च लगाते हुए देखकर लेखक क्या सोच रहा था?

उत्तर: नवाब साहब को खीरा काटकर नमक मिर्च लगाते हुए देखकर लेखक यह सोच रहा था कि नवाब साहब दुनिया के सामने तो धनवान बनते हैं। परंतु यह सोचकर कि मैं लोगों की नजरों से बच जाऊँगा, अब अपनी वास्तविकता पर आ गए हैं। इस प्रकार लेखक यह अनुभव कर रहा था कि नवाब साहब धनी होने का केवल दिखावा कर रहे हैं, परंतु वास्तव में ऐसा नहीं है।

प्रश्न 6. नवाब साहब की भाव-भंगिमा से क्या प्रतीत हो रहा था ?

उत्तर: नवाब साहब को भाव-भंगिमा से ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे खीरे की फाँको पर जीरा मिला नमक और लाल मिर्च लगाते समय उसके रसास्वादन की कल्पना कर रहे हो और उस कल्पना से उनका मुँह भर रहा हो।

प्रश्न 7. नवाव साहव द्वारा खीरा खाने का आग्रह करने पर लेखक ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?

उत्तर: नवाब साहब ने जब लेखक से खीरा खाने का आग्रह किया, तब लेखक ने उनका धन्यवाद करते हुए कहा कि इस समय आवश्यकता नहीं महसूस हो रही, साथ ही पाचन शक्ति भी अच्छी नहीं है।

प्रश्न 8. लेखक ने नवाब साहब की असुविधा के कारण के बारे में क्या अनुमान लगाया है

उत्तर: लेखक ने यह अनुमान लगाया कि नवाब साहब ने पैसे की बचत करने के उद्देश्य से सेकंड क्लास का टिकट खरीद लिया होगा। उस समय उन्होंने यह सोचा होगा कि उस डिब्बे में और कोई यात्री नहीं होगा और वे अकेले यात्रा करेंगे। इस कारण शहर का कोई भी भद्र व्यक्ति उन्हें नहीं देख सकेगा। परंतु लेखक के आ जाने से उन्हें अपनी वास्तविकता के प्रकट हो जाने का भय सताने लगा होगा। इसी कारण नवाब साहब असुविधा और संकोच का अनुभव कर रहे होंगे।

प्रश्न 9. लेखक द्वारा नवाब साहब की ओर से नजरें हटा लेने का क्या कारण था?

उत्तर: ट्रेन में लेखक के साथ के लिए नवाब साहब ने कोई उत्साह प्रकट नहीं किया। इस कारण लेखक ने यह महसूस किया कि यदि वे मुझे महत्त्व नहीं देते और मैं अपनी ओर से उनके साथ के लिए पहल करूँ, तो उनकी दृष्टि में मेरा सम्मान कम हो आएगा। इसी कारण लेखक ने नवाब साहब की ओर से नजरें हटा ली

प्रश्न 10. लेखक किस बात का अनुमान लगाने लगा और क्यों?

उत्तर: लेखक इस बात का अनुमान लगाने लगा कि उसी डिब्बे में उसके आ जाने से नवाब साहब को किस प्रकार को असुविधा और संकोच का सामना करना पड़ रहा है? साथ ही ऐसी असुविधा और संकोच का क्या कारण हो सकता है ? लेखक इस बात का अनुमान इसलिए लगाने लगा क्योंकि खाली बैठे-बैठे कल्पना करते रहने की उसकी पुरानी आदत थी।

प्रश्न 11. नवाब साहब द्वारा खीरा खरीदने और उसे न खाने का क्या कारण रहा होगा?

उत्तर: नवाब साहब ने इसलिए खीरा खरीदा होगा, ताकि यात्रा का समय व्यतीत हो जाए। परंतु जब उन्होंने अपने सामने शहर के ही एक अन्य भद्र व्यक्ति को देख लिया तब उन्होंने यह सोचकर खीरा नहीं खाया होगा कि एक नवाब होते हुए खीरे जैसी साधारण वस्तु खाने पर इस व्यक्ति की नजर में मेरा सम्मान कम हो जाएगा।।

मन्नू भंडारी

एक कहानी यह भी

पाठ-परिचय

'एक कहानी यह भी' आत्मकथ्य में लेखिका मन्नू भंडारी जी ने उन व्यक्तियों और घटनाओं के बारे में लिखा, जिन्होंने उनके जीवन तथा व्यक्तित्व को प्रभावित किया। प्रस्तुत अंश में मन्नू जी के किशोर मन से जुड़ी घटनाओं के साथ उनके पिताजी और उनकी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का व्यक्तित्व भी उभर कर आया है। दोनों ने ही उनके लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेखिका ने बहुत प्रभावशाली ढंग से साधारण लड़की के असाधारण बनने के विभिन्न पड़ावों को प्रकट किया है। सन् 1946-47 की आज़ादी की आँधी ने भी इनके व्यक्तित्व को प्रभावित किया। छोटे शहर की युवा होती मन्नू जी ने आज़ादी की लड़ाई में सक्रिय भागीदारी निभाई। उसमें उनका उत्साह, ओज, संगठन-क्षमता और विरोध करने का तरीका देखते ही बनता है।

पात्र परिचय

पिता भंडारी जी
- महत्वाकांक्षी
- यश और प्रतिष्ठा के प्रति सजग
- धुन के पक्के
- अति क्रोधी
- शक्की
- बच्चों की शिक्षा के प्रति सजग
- परोपकारी

लेखिका की माँ
- धैर्यवती
- घरेलू महिला
- त्याग और सहिष्णुता की मूर्ति
- अनपढ़
- सबकी ज़रूरतों को पूरा करने वाली
- स्नेह और ममत्व से भरपूर

प्राध्यापिका शीला अग्रवाल
- हिंदी की अध्यापिका
- निडर
- हिंदी साहित्य के प्रति बच्चों को प्रेरित करने वाली
- लेखिका को जीवन में संघर्ष करने की शिक्षा दी।

सुशीला
- लेखिका की बड़ी बहन
- खूब गोरी
- स्वस्थ और हँसमुख

मन्नू भंडारी
- निडर
- श्रेष्ठ वक्ता
- काले रंग वाली
- हीनभावना से ग्रस्त
- उच्चकोटि की साहित्यकार
- देश-प्रेमी
- आत्मनिर्भर
- मरियल व दुबली

डॉ० अंबालाल
- भंडारी जी के घनिष्ठ मित्र
- अजमेर के प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्ति
- लेखिका के भाषण को सुन प्रशंसा करना

महत्वपूर्ण प्रश्न एवं उत्तर

1. लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?

उत्तर: लेखिका के व्यक्तित्व पर दो लोगों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा- एक तो लेखिका के पिता तथा दूसरी उनकी कॉलेज की हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल । पिता के अनजाने-अनचाहे व्यवहार ने लेखिका के मन में हीन भावना उत्पन्न कर दी। लेखिका काली थीं और उनके पिता जी को गोरे रंग वाले पसंद थे। हीन भावना के कारण लेखिका को अपनी किसी उपलब्धि पर विश्वास नहीं होता था। पिता जी शक्की स्वभाव के थे, इसी कारण लेखिका के व्यक्तित्व में शक्की स्वभाव की झलक दिखाई देती है । बाद में जी लेखिका के राजनैतिक गतिविधियों में हिस्सा लेने से बहुत खुश हुए। समय-समय पर वे लेखिका को राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। हिंदी की प्राध्यापिका

शीला अग्रवाल ने लेखिका की रुचि उच्च साहित्य की ओर उन्मुख की तथा साहित्य-रचनाओं को पढ़ने के लिए प्रेरित किया उन पर विचार-विमर्श भी किया। उन्होंने लेखिका को साहित्य को समझकर परखने की दृष्टि प्रदान की। उन्हें राजनैतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया तथा साहसी और निडर बनाया।

2. इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?
उत्तर: लड़कियों को जिस उम्र में स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुबड़ गृहिणी और कुशल पाकशास्त्री बनाने के गुण सिखाए जाते थे। उसी उम्र में लेखिका के पिता चाहते थे कि वे रसोई से दूर ही रहें। वे रसोईघर को 'भटियारखाना' कहते थे। उनके अनुसार रसोईघर में रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्टी में झोंकना था। वे मन्नू जी को रसोईघर के कार्यों से दूर रखना चाहते थे, ताकि वह आम स्त्री से भिन्न होकर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके।

3. वह कौन-सी घटना थी, जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?
उत्तर: एक बार लेखिका के कॉलेज से पत्र आया कि वहाँ की प्रिंसिपल ने लेखिका के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करने के संबंध में उनके पिता जी को बुलाया है। यह जानकर पिता जी क्रुद्ध हो गए। कॉलेज में जाकर पता चला कि उनकी बेटी सबकी चहेती नेत्री है। सारा कॉलेज उसके इशारों पर चलता है। इसलिए प्रिंसिपल के लिए कॉलेज चलाना मुश्किल हो गया है। पिता जी गर्व से प्रिंसिपल को कहकर आए कि यह तो पूरे देश की पुकार है, इस पर कोई कैसे रोक लगा सकता है? घर आकर पिता जी खुश होकर ये बातें बताते रहे और लेखिका आश्चर्यचकित होकर सुनती रहीं।

4. लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।
अथवा
मन्नू भंडारी का अपने पिता से जो वैचारिक मतभेद था, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर: वैचारिक भिन्नता ही टकराहट का कारण बनती है। लेखिका तथा उनके पिता में वैचारिक मतभेद निम्नलिखित रूपों में था-
(i) लेखिका के पिता अहंकारी, क्रोधी, शक्की तथा सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रति सजग रहने वाले। लेखिका उनके व्यक्तित्व की इन खामियों पर झल्लाती थीं।
(ii) वे लेखिका को घर-गृहस्थी के कार्यों से दूर रखकर जागरूक नागरिक बनाना चाहते थे। घर में राजनैतिक जमावड़ों में भाग लेने की सीख देकर उनके भीतर विद्रोह तथा नव-जागृति के स्वर भरना चाहते थे, किंतु घर से बाहर सक्रिय भागीदारी के विरुद्ध थे और लेखिका उनकी सीमित आज़ादी के दायरे में नहीं रह सकती थीं। इस कारण पिता जी की इच्छा के विरुद्ध जाकर उन्होंने स्वाधीनता आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी की।
(iii) विवाह के विषय पर भी पिता-पुत्री के विचार टकराए। पिता उनका विवाह अपनी पसंद के लड़के से करना चाहते थे, किंतु मन्नू जी ने राजेंद्र यादव जी से प्रेम-विवाह करके पिता की इच्छा के विरुद्ध जाने का साहस किया।

5. इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।
उत्तर: सन् 1942 के आंदोलन के बाद सारे देश में आज़ादी के लिए क्रांति की एक लहर चल पड़ी। आत्मकथ्य में सन् 1945 से 1947 तक के आंदोलन का वर्णन है। विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ, उनके आपसी विरोध या मतभेदों की जानकारी लेखिका को नहीं थी, फिर भी क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों की कुर्बानियों से लेखिका का मन व्यथित रहता था। सन् 1945 में जैसे ही लेखिका दसवीं पास करके कॉलेज के फ़र्स्ट ईयर में आई, हिंदी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से उनका परिचय हुआ। उन्होंने

लेखिका को राजनैतिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। सन् 1946-47 में बहुत हलचल थी। सभी भारतीय आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे थे। प्रभात फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस तथा भाषण आदि हर शहर में हो रहे थे। युवा इन सबमें पूरे जोश के साथ शामिल हो रहे थे। लेखिका भी युवा थीं और शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने उनमें जोश भर दिया था। उनके पिता आधुनिक विचारों के होते हुए भी यह बरदाश्त नहीं कर पा रहे थे कि लेखिका लड़कों के साथ शहर की सड़कों पर हाथ उठा-उठाकर नारे लगाए, हड़तालें करवाए, किंतु लेखिका की रंगों में बहते लावे ने सारे निषेधों, सारी कठोरता और सारे भय को चकनाचूर कर दिया था। लेखिका का सारे कॉलेज में भी रोब था। उनके एक इशारे से सब आंदोलन में हिस्सा लेने को तैयार हो जाते थे। आज़ाद हिंद फ़ौज के मुकदमे के सिलसिले में लेखिका ने चौपड़ पर भाषण दिया था और डॉ० अंबालाल ने उस भाषण की खूब तारीफ़ भी की थी।

6. 'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर लेखिका के पिता जी के सकारात्मक और नकारात्मक गुणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : लेखिका के पिता के गुणों का उल्लेख- सकारात्मक गुण– वे संवेदनशील, विनम्र व्यक्ति थे, बच्चों को शिक्षित करना, उन्हें आगे बढ़ाना, उनकी भावनाओं को समझना, देश के प्रति प्रेमभाव। नकारात्मक गुण- लेखिक के पिता समाज में प्रतिष्ठा को पाने हेतु सजग रहते थे। वे अहंकारी, क्रोधी व शक्की थे। विश्वासघात मिलने के बाद वे झुंझलाने लगे, झल्लाने लगे व टूट गए थे।

7. मन्नू भंडारी ने अपने पिताजी के बारे में इंदौर के दिनों की क्या जानकारी दी है?

उत्तर : लेखिका के पिता इंदौर के बड़े ही प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। वे समाज-सुधार के कामों में भी लगे रहते थे। एक ओर वे बड़े कोमल स्वभाव के थे, तो दूसरी ओर बड़े ही क्रोधी और अहंकारी माने जाते थे। वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, बल्कि उन्होंने कई विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया, जिनमें से कई ऊँचे-ऊँचे पदों पर कार्यरत हुए। उस समय वे बड़े दिलवाले थे। उनकी दरियादिली के चर्चे भी बहुत थे।

8. भाई-बहनों का सारा लगाव माँ के साथ क्यों था?

उत्तर: लेखिका की माँ अपने बच्चों की हर उचित-अनुचित फ़रमाइश और ज़िद को अपना कर्तव्य समझकर पूरा करने में जुट जातीं 1 उनकी माँ ने जिंदगीभर स्वयं के लिए कुछ नहीं माँगा, पर सबको बहुत कुछ दिया, इसीलिए सब भाई-बहनों को माँ से सहानुभूति थी और सारा लगाव उनके साथ था।

9. 'मन्नू भंडारी की माँ त्याग और धर्म की पराकाष्ठा थीं- फिर भी लेखिका के लिए आदर्श न बन सकीं।' क्यों ?

उत्तर: माँ में इतनी विशेषताएँ होते हुए भी लेखिका अपनी माँ को अपना आदर्श नहीं बना सकीं। लेखिका स्वयं स्वतंत्र विचारों की थीं। वे अपने अधिकार और कर्तव्य समझती थीं। माँ पिता जी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य समझकर सहन करती थीं। माँ की असहाय मजबूरी में लिपटा उनका त्याग और सहनशीलता कभी भी लेखिका का आदर्श नहीं बन सका।

10. मन्नू भंडारी ने 'पड़ोस कल्चर' की बात कही है। पड़ोस कल्चर की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : मन्नू भंडारी ने जिस 'पड़ोस कल्चर' की बात कही है, वह आधुनिक युग में तो लगभग गायब ही हो गया है। लेखिका मन्नू भंडारी के समय में घर की दीवारें घर तक ही सीमित नहीं होती थीं, बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं, इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं होती थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार के हिस्सा ही थे। सभी बच्चे एक साथ अनेक खेल खेलते थे।

11. लेखिका की आरंभिक रचनाओं के पात्र कहाँ के हैं?

उत्तर: लेखिका द्वारा लिखी एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र उसी मोहल्ले के हैं, जहाँ लेखिका ने अपना बचपन बिताया। मोहल्ले के लोगों के बीच ही लेखिका बड़ी हुई। उनकी छाप लेखिका के मन पर कितनी गहरी थी, यह अहसास उन्हें तब हुआ, जब बड़े
सहज भाव से वे सब उनकी कल्पना में उतरते चले गए थे।

12. लेखिका के परिवार में लड़की के विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता क्या थी?
उत्तर : लेखिका के परिवार में लड़की के विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता- उम्र 16 वर्ष और शिक्षा मैट्रिक थी। सन् 1944 में लेखिका की बड़ी बहन यह योग्यता प्राप्त कर चुकी थी। उनकी शादी हुई और वे कलकत्ता (कोलकाता) चली गईं।

13. भंडारी जी (लेखिका के पिता) का ध्यान लेखिका की ओर कब गया ?
उत्तर : जब लेखिका की बड़ी बहन की शादी हो गई और उनके दोनों बड़े भाई आगे पढ़ाई के लिए बाहर चले गए, तब बड़े भाई-बहनों के जाते ही लेखिका को अपने अस्तित्व का अहसास हुआ और पिता जी का ध्यान भी पहली बार लेखिका पर केंद्रित हुआ।

14. प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका को साहित्य के अतिरिक्त किस क्षेत्र में प्रेरित किया?
उत्तर: प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका को साहित्य के अतिरिक्त राजनैतिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। सन् 1946-47 में वैसे भी बहुत हलचल थी। सभी भारतीय आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे थे। लेखिका भी युवा 'थीं और अपनी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने उनमें जोश भर दिया था।

15. भंडारी जी (लेखिका के पिता) की सबसे बड़ी दुर्बलता क्या थी और उनके सिद्धांत क्या थे?
उत्तर: भंडारी जी की सबसे बड़ी दुर्बलता थी- यश-लिप्सा। उनके जीवन की धुरी का सिद्धांत था कि व्यक्ति को कुछ विशिष्ट बनकर जीना चाहिए। कुछ ऐसे काम करने चाहिए, जिससे समाज में नाम हो, सम्मान हो, प्रतिष्ठा तथा दबदबा हो।

16. प्राध्यापिका शीला अग्रवाल को नोटिस किसने दिया और क्यों ?
उत्तर: सन् 1947 के मई महीने में लड़कियों को भड़काने और कॉलेज का अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में कॉलेज वालों ने प्राध्यापिका शीला अग्रवाल को नोटिस थमा दिया।

17. मन्नू भंडारी शीला अग्रवाल से क्यों प्रभावित थीं?
उत्तर: लेखिका मन्नू भंडारी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल के संपर्क में छात्रा के रूप में आई थीं। उनके संपर्क में आने से लेखिका की साहित्य जगत के प्रति रुचि तीव्रतर होती गई और वे शीला जी के निर्देशन में एक के बाद एक साहित्य को पढ़ती गईं। शीला अग्रवाल जी ने केवल उनके साहित्य का दायरा ही नहीं बढ़ाया, बल्कि घर की चारदीवारी से बाहर सड़कों पर निकाल कर उन्हें सक्रिय भागीदार में बदल दिया। इन्हीं कारणों से लेखिका मन्नू भंडारी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से अत्यधिक प्रभावित थीं।

18. ऐसे क्या कारण थे, जिनकी वजह से लेखिका के मन में हीन भावना पैदा हो गई थी ?
उत्तर : पिता के व्यवहार ने लेखिका के मन में हीन भावना उत्पन्न की। लेखिका बचपन में काली, दुबली और कमज़ोर थीं। उनके पिता को गोरे रंग वाले अधिक पसंद थे, इसलिए वे लेखिका की उनसे दो वर्ष बड़ी, खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहन सुशीला से हर बात में तुलना करते। उसकी प्रशंसा ने ही लेखिका के मन में हीन भावना उत्पन्न कर दी।

19. डॉ० अंबालाल कौन थे? उन्होंने लेखिका की प्रशंसा क्यों की?

उत्तर : डॉ० अंबालाल अजमेर के सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित व्यक्ति थे। लेखिका ने चौपड़ पर भाषण दिया था, उनका भाषण सुनकर डॉ० अंबालाल लेखिका के पिता भंडारी जी को बधाई देने गए। उन्हें लेखिका पर बहुत गर्व महसूस हुआ इसलिए वे लेखिका की तारीफ़ करने लगे।

20. मन्नू भंडारी ने डॉ० अंबालाल की प्रशंसा को उनका स्नेह क्यों बताया ?

उत्तर : डॉ० अंबालाल अजमेर के सबसे प्रतिष्ठित व सम्मानित व्यक्ति थे। बचपन में जब लेखिका ने चौपड़ पर भाषण दिया, तो उन्होंने लेखिका के पिता से उसकी खूब प्रशंसा की। उस समय किसी लड़की का उमड़ती भीड़ के बीच बेझिझक, निस्संकोच धुआँधार बोलना ही बहुत बड़ी बात थी। लेखिका का घर से बाहर निकलकर बोलना ही उसका प्रभाव डालने के लिए काफ़ी था। लेखिका के इसी गुण के कारण उन्होंने उसकी प्रशंसा की थी।

21. लेखिका ने अपनी माँ के बारे में क्या जानकारी दी? अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा,

'मन्नू भंडारी की माँ धैर्य और सहनशक्ति में से कुछ ज्यादा ही थीं- ऐसा क्यों कहा गया?

अथवा,

पाठ के आधार पर मन्नू भंडारी की माँ के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: लेखिका ने अपनी माँ के बारे में बताया कि वे स्वभाव में पिता बिलकुल विपरीत थीं। माँ अनपढ़ थीं और उनमें धरती से भी ज़्यादा धैर्य और शक्ति थी। वे पिता की हर ज़्यादती को प्राप्य (मिलने वाला हिस्सा) और बच्चों की हर उचित - अनुचित फ़रमाइश और ज़िद को अपना कर्तव्य समझकर पूरा करने में जुट जाती थीं। उनकी माँ ने ज़िंदगीभर कभी भी स्वयं के लिए कुछ नहीं माँगा, पर कुछ दिया। सब भाई-बहनों की माँ से सहानुभूति थी इसलिए सारा लगाव उनके साथ था, किंतु माँ की असहाय मजबूरी में लिपटा उनका त्याग तथा उनकी सहनशीलता कभी भी लेखिका का आदर्श नहीं बन सके।

22. की प्राचार्या मन्नू भंडारी से क्यों घबराती थीं?

उत्तर : लेखिका मन्नू भंडारी एक जोशीली और क्रांतिकारी विचारों वाली युवती थीं। सारे कॉलेज की लड़कियों पर उनका इतना रौब था कि लड़कियाँ उनके इशारे पर ही चलती थीं। प्राचार्या यदि डरा-धमकाकर लड़कियों को क्लासों में भेजतीं भी, तो मन्नू भंडारी के एक इशारे पर सारी लड़कियाँ निकल आतीं और मैदान में जमा होकर नारे लगाने लगतीं। इसलिए कॉलेज़ की प्राचार्या मन्नू भंडारी से घबराती थीं, क्योंकि उनका कॉलेज़ चलाना मुश्किल हो रहा था।

23. मन्नू भंडारी के पिता के दकियानूसी मित्र ने उन्हें क्या बताया कि वे भड़क उठे?

उत्तर: आज़ाद हिंद फ़ौज के मुकदमे का सिलसिला था। सभी कॉलेजों, स्कूलों तथा दुकानों के लिए हड़ताल का माहौल था और जो नहीं कर रहे थे, उनसे छात्रों का एक बहुत बड़ा समूह वहाँ जाकर हड़तालें करवा रहा था। पिता जी के मित्र ने घर आकर उनकी बेइज़्ज़ती करते हुए कहा कि मन्नू की तो बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, पर उन्हें क्या हुआ? उनकी बेटी उल्टे-सीधे लड़कों के साथ हड़तालें करवाती, हुड़दंग मचाती फिर रही है। यह अच्छे घरों की लड़कियों को शोभा नहीं देता। मित्र की ये बातें सुनकर भंडारी जी क्रोधित हो गए।

24. मन्नू भंडारी की ऐसी कौन-सी खुशी थी, जो 15 अगस्त, 1947 की खुशी में समाकर रह गई ?

उत्तर: सन् 1947 के मई महीने में शीला अग्रवाल को कॉलेज का अनुशासन भंग करने तथा लड़कियों को भड़काने के आरोप में नोटिस थमाया गया। इस बात को लेकर मचने वाले बवाल से बचने के लिए जुलाई में थर्ड ईयर की कक्षाएँ बंद करके लेखिका तथा उनकी दो-तीन मित्रों का प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया। उन्होंने बाहर रहकर भी इतना शोर मचाया कि अगस्त में थर्ड ईयर खोलना पड़ा। लेखिका अपनी

इस उपलब्धि के लिए बहुत खुश थी, पर 15 अगस्त, 1947 शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि अर्थात देश की आज़ादी की खुशी में यह खुशी समाकर रह गई।

25. मन्नू भंडारी के पिता की कौन-कौन सी विशेषताएँ अनुकरणीय हैं ?

अथवा,

मन्नू भंडारी के पिताजी की स्वाभाविक प्रवृत्ति कैसी थी?

अथवा,

हम कैसे कह सकते हैं कि मन्नू भंडारी के पिता बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे?

उत्तर: मन्नू भंडारी के पिता महत्वाकांक्षी व्यक्ति थे। वे धुन के पक्के थे। इसी महत्वाकांक्षा के कारण उन्होंने धनाभाव में रहते हुए भी विषयवार शब्दकोश को पूरा किया। वे यश और प्रतिष्ठा के प्रति सजग थे। वे बच्चों की के प्रति सजग थे इसलिए वे आठ-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया करते थे, से कुछ ऊँचे ओहदे पर प्रतिष्ठित हुए थे। वे कोमल संवेदनशील थे इसलिए समाज-सुधार तथा राजनीति से जुड़े थे। ये सभी विशेषताएँ अनुकरणीय हैं।

26. लेखिका को नए सिरे से अपने वजूद का अहसास कब व कैसे हुआ ?

उत्तर: सन् 1944 में बड़ी बहन सुशीला के विवाह हो जाने तथा दोनों बड़े भाइयों द्वारा आगे की पढ़ाई के लिए बाहर चले जाने पर लेखिका को नए सिरे से अपने वजूद का अहसास हुआ। उस समय उनके पिता ने पहली बार लेखिका की तरफ़ अपना ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने मन्नू जी को घर-गृहस्थी के कामों से दूर रखकर उन्हें देश तथा समाज की तत्कालीन घटना-चक्रों की जानकारी हासिल करने की सलाह देकर उन्हें प्रबुद्ध नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

27. लेखिका ने बचपन में अपने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा तथा पतंग उड़ाने जैसे खेल भी खेले, किंतु लड़की होने के कारण दायरा घर की चारदीवारी तक सीमित था। क्या आज भी लड़कियों के लिए स्थितियाँ ऐसी ही हैं या बदल गई हैं, अपने परिवेश के आधार पर लिखिए।

उत्तर: आज लड़कियों के लिए स्थितियाँ बदल गई हैं। वे घर से बाहर निकलकर लड़कों की तरह ही हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। क्षेत्र चाहे खेल का मैदान हो या विज्ञान का। लड़कियों हर तरह से सक्षम बनाया जा रहा है। वे अपनी रुचि या इच्छानुसार कोई भी विषय ले सकती हैं। कोई भी खेल, खेल सकती हैं। अब वे शिक्षा एवं खेलों के लिए अपने शहर से दूर दूसरे शहरों में या विदेशों में भी जा सकती हैं।

28. मनुष्य के जीवन में आस-पड़ोस का बहुत महत्व होता है, परंतु महानगरों में रहने वाले लोग प्रायः 'पड़ोस कल्चर' से वंचित रह जाते हैं। इस बारे में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: महानगरीय लोग अपनी ज़िंदगी खुद जीना चाहते हैं। दूसरों के साथ मिलने-जुलने, खाने-पीने तथा दुख-सुख बाँटने का न तो उनके पास समय ही है और न इच्छा। मशीनी युग ने उन्हें भावनाशून्य कर दिया है। परिणामस्वरूप वे लोग 'पड़ोस कल्चर' छोड़ने लगे हैं।

चालीस महत्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्न

1. लेखिका ने अपने पिता को किन-किन रूपों में अपने भीतर पाया?

(क) कुंठाओं के रूप में, प्रतिक्रिया के रूप में और प्रतिच्छाया के रूप में (ख) अपनी खुशी और गम में

(ग) अपने मित्र परिवार के रूप में (घ) अपने प्रतिद्वंद्वी के रूप में

2. लेखिका के अपने पिता के साथ कैसे संबंध थे ?

(क) अत्यधिक मेल-जोल था। (ख) संबंध मधुर थे, कोई मतभेद नहीं था

(ग) संबंधों पर परस्पर घनिष्ठता थी। (घ) संबंध मधुर नहीं थे, वैचारिक मतभेद और टकराव होता रहता था।

3. पिता के शक्की स्वभाव के कारण-

(क) लेखिका अहंकारी हो गई थीं।
(ख) लेखिका भी शक्की हो गई थीं। उन्हें स्वयं की उपलब्धियों पर भरोसा नहीं होता था।
(ग) लेखिका चिड़चिड़ी हो गई थीं। (घ) लेखिका हर समय खुश रहती थीं।

4. लेखिका की आरंभिक कहानियों के पात्र कहाँ के थे?
(क) उनके घर के (ख) उनके मोहल्ले के
(ग) उनके स्कूल के (घ) उनके शहर के

5. परंपरागत 'पड़ोस कल्चर' को छोड़ने का क्या परिणाम हुआ ?
(क) लोग सुरक्षित और उदार हो गए हैं। (ख) लोग स्वार्थी और आत्मकेंद्रित हो गए हैं।
(ग) लोग असहाय, असुरक्षित व संकुचित हो गए हैं। (घ) लोग अनुदार व असामाजिक हो गए हैं।

6. लेखिका के जमाने में घर का आशय था-
(क) पूरा मोहल्ला (ख) पूरा गाँव
(ग) पूरा शहर (घ) पूरा समाज

7. लेखिका के अनुसार आज का जीवन किससे वंचित है?
(क) सुख-शांति से (ख) धन-संपत्ति से
(ग) पड़ोस - कल्चर से (घ) सगे-संबंधियों से

8. 'पड़ोस-कल्चर' छूटने का क्या कारण हो सकता है?
(क) शहरीकरण (ख) औद्योगिकीकरण
(ग) वैश्वीकरण (घ) (क) और (ख) दोनों

9. लेखिका के पिता जी किन अंतविरोधों के बीच जीते थे?
(क) समाज में मान-सम्मान के बिना जीना
(ख) एक तरफ़ समाज में विशिष्ट बनना दूसरी ओर सामाजिक छवि को भी बनाए रखना
(ग) सबसे लड़-झगड़कर अलग-थलक रहना। (घ) समाज में अलगाव पैदा करना।

10. 'एक कहानी यह भी' किसने लिखा ?
(क) जयशंकर प्रसाद ने (ख) सुमित्रानंदन पंत ने
(ग) मन्नू भंडारी ने (घ) महादेवी वर्मा ने

11. 'एक कहानी यह भी एक ---- है।
(क) आत्मकथा (ख) रेखाचित्र
(ग) संस्मरण (घ) यात्रा-वृतांत

12. मन्नू भंडारी का जन्म कहाँ हुआ था ?
(क) उत्तर प्रदेश (ख) मध्य प्रदेश
(ग) बिहार (घ) बंगाल

13. लेखिका के पिता क्रोधी एवं शक्की क्यों हो गए थे?
(क) उनका स्वभाव ही ऐसा था। (ख) उन्हें उनके अपनों ने धोखा दिया था।
(ग) सब उन्हें परेशान करते थे। (घ) वे मानसिक रोग से ग्रसित थे।

14. लेखिका की माँ कैसी थीं?
(क) पढ़ी-लिखी थीं। (ख) व्यवसाय करती थीं।
(ग) अनपढ़ थीं। (घ) पढ़ाने जाती थीं

15. सुशीला कौन थीं?
(क) लेखिका की बड़ी बहन (ख) अध्यापिका
(ग) लेखिका की छोटी बहन (घ) लेखिका की माँ

16. लेखिका को अपनी उपलब्धियों पर भरोसा क्यों नहीं होता था?
(क) वे भरोसे लायक कुछ करती ही नहीं थीं। (ख) लेखिका को ये सब पसंद नहीं थीं।
(ग) लेखिका का काम हमेशा से बुरा ही होता था।
(घ) पिता द्वारा बहन से तुलना करने के कारण उनके अंदर हीन भावना आ गई थी।

17. लेखिका का रूख साहित्य एवं स्वतंत्रता संग्राम की तरफ किसने करवाया ?
(क) पिताजी ने (ख) गांधी जी ने
(ग) शीला अग्रवाल ने (घ) प्रभात फेरियों ने
18. लेखिका के पिताजी की सबसे बड़ी दुर्बलता क्या थी?
(क) अच्छा भोजना खाना (ख) अधिक पैसा कमाना
(ग) जगह-जगह घूमना (घ) यश कामना या यश-लिप्सा
19. लेखिका के पिताजी का कमरा कैसा था?
(क) फटे-पुराने अखबारों से भरा हुआ।
(ख) अव्यवस्थित ढंग का, जिसमें अखबार एवं पुस्तक पत्रिकाएँ फैली रहती थीं।
(ग) व्यवस्थित रूप से सजा-धजा (घ) कपड़ो से भरा हुआ।
20. लेखिका के अनुसार उनकी माँ का व्यक्तित्व कैसा था ?
(क) अनपढ़, धैर्यवान, सहनशील और ज़िम्मेदारियों केप्रति सजग। (ख) चालाक, अहंकारी, गैर-जिम्मेदार।
(ग) पढ़ी-लिखी, खुशमिजाज, ज़िम्मेदार। (घ) समझदार, मृदुभाषी, उत्तम।
21. लेखिका के पिताजी का स्वभाव कैसा था ?
(क) कोमल व्यक्तित्व के साथ क्रोधी और अहंवादी
(ख) कोमल व्यक्तित्व के साथ प्रेमी और मृदु
(ग) उत्साही, मृदु एवं जिम्मेदार
(घ) गैरजिम्मेदार घमंडी और अत्याचारी
22. इंदौर में लेखिका के पिताजी की क्या स्थिति थी?
(क) समाज में उनका कोई सम्मान नहीं था। (ख) वे बहुत ज़िद्दी थे।
(ग) समाज में उनसे कोई बात नहीं करता था।
(घ) इंदौर में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, नाम था। वे समाज सुधार से भी जुड़े हुए थे।
23. लेखिका के प्रति उनके पिता जी का स्वभाव कसा था?
(क) उदार (ख) शक्की
(ग) बुरा (घ) अच्छा
24. लेखिका ने अपने पिता को अपने भीतर किन रूपों में पाया?
(क) कुंठाओं के रूप में (ख) प्रतिक्रिया के रूप में
(ग) प्रतिच्छाया के रूप में (घ) उपर्युक्त तीनों रूपों में
25. लेखिका के अपने पिता के साथ कैसे संबंध थे?
(क) मधुर थे। (ख) मधुर नहीं थे।
(ग) स्नेहपूर्ण थे। (घ) शत्रुतापूर्ण थे।
26. पिताजी के स्वभाव का लेखिका पर क्या प्रभाव पड़ा?
(क) उनका आत्मविश्वास खंडित हो गया। (ख) उनका आत्मविश्वास बढ़ गया।
(ग) वे सहनशील हो गई। (घ) वे अहंकारी हो गई।
27. पाठ के आधार पर लेखिका के पिता का स्वभाव के बारे में कहा जा सकता है कि वे-
(क) उदार, दयालु और सामाजिक थे। (ख) वे अहंकारी, क्रोधी और शक्की थे।
(ग) वे ईष्यालु और असामाजिक थे। (घ) वे निर्दयी और घमंडी थे।
28. लेखिका के जीवन में शीला अग्रवाल की क्या देन रही?
(क) शीला अग्रवाल ने लेखिका को अहंकारी बना दिया।
(ख) शीला अग्रवाल ने लेखिका को अकर्मठ बना दिया।
(ग) शीला जी के कारण लेखिका की सोच अंर्तमुखी हो गई।
(घ) साहित्य की दुनिया में प्रवेश करवाया। साथ ही साथ स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने के लिए भी सक्रिय किया।

29. पिता जी लेखिका को कैसी आज़ादी देना चाहते थे?
(क) लेखिका घर में रहकर देश की राजनीति को समझें, पर सक्रिय भाग न लें।
(ख) वे लेखिका को सक्रिय रूप से भाग लेते देखना चाहते थे।
(ग) वे लेखिका को सब्ज़ी लेते देखना चाहते थे।
(घ) वे लेखिका को भोजन बनाते देखना चाहते थे।
30. लेखिका ने स्वतंत्रता आंदोलन में किस प्रकार भाग लिया?
(क) उन्होंने छात्राओं को विवाह के लिए प्रोत्साहित किया।
(ख) उन्होंने छात्राओं को स्वतंत्रता के लिए घर में रहने को कहा
(ग) लेखिका ने हड़ताल करवाई, जुलूस निकाले, नारे लगाए और जोशीले भाषाण दिए।
(घ) साथ की लड़कियों को खेती के लिए प्रेरित किया।
31. मन्नू भंडारी/लेखिका ने किससे विवाह किया ?
(क) राजेंद्र यादव से
(ख) सोमेंद्र यादव से
(ग) सतेंद्र यादव से
(घ) गोयल यादव से
32. लेखिका के पिता की क्या दुर्बलता थी?
(क) यश-कामना
(ख) यश-लिप्सा
(ग) धन-लिप्सा
(घ) (क) और (ख) दोनों
33. लेखिका के पिता के अनुसार व्यक्ति को कैसा होना चाहिए?
(क) सामाजिक
(ख) सम्मानित
(ग) विशिष्ट
(घ) उपर्युक्त सभी
34. लेखिका के पिता जी के क्रोध का क्या कारण था?
(क) लेखिका उनकी आज्ञा नहीं मानती थी।
(ख) वे सामाजिक कामों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थी।
(ग) कॉलेज की प्रिंसिपल ने उनसे लेखिका के संबंध में शिकायत की थी।
(घ) लेखिका घर में कुछ गड़बड़ी की थी।
35. मन्नू भंडारी जी का जन्म कहाँ हुआ था ?
(क) मध्यप्रदेश के भानपुरा गाँव में
(ख) अज़मेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले में
(ग) गढ़वाल
(घ) उत्तर-प्रदेश
36. लेखिका को साहित्य की दुनिया में प्रवेश कराने का श्रेय किसे था?
(क) लेखिका के पिता जी का
(ख) लेखिका की माता जी का
(ग) लेखिका की हिंदी की प्राध्यापिका का
(घ) लेखिका के पति का
37. लेखिका को जैनेंद्र जी का कौन-सा उपन्यास बहुत पसंद आया?
(क) परख
(ख) कल्याणी
(ग) त्यागपत्र
(घ) सुनीता
38. 'शेखर: एक जीवनी' किनकी रचना है?
(क) अज्ञेय की
(ख) निराला की
(ग) पंत की
(घ) गुप्त की
39. साहित्य पर लेखिका किनसे लंबी-लंबी बहसें करती थी?
(क) अपनी सहेली से
(ख) अपनी माता जी से
(ग) शीला अग्रवाल से
(घ) राजेंद्र यादव से
40. प्रस्तुत गद्यांश के अनुसार लेखिका की रुचि किसमें अधिक थी ?
(क) खेलकूद में
(ख) साहित्य पढ़ने में
(ग) घूमने-फिरने में
(घ) साहित्य लिखने में

यतींद्र मिश्र

नौबतखाने में इबादत

पाठ का सारांश

नौबतखाने में इबादत प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खां पर रोचक शैली में लिखा गया व्यक्ति- चित्र है। यतींद्र मिश्र ने बिस्मिल्ला खान के परिचय के साथ-साथ उनकी रुचियां, उनके अंतर्मन की बनावट, संगीत साधना और लगन को संवेदनशील भाषा में व्यक्त किया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि संगीत एक आराधना है। इसका एक विधि-विधान है। संगीत एक शास्त्र है। बालक अमीरुद्दीन का जन्म बिहार में डुमरांव में हुआ। बाद में वह काशी आ गए, जहां उन्होंने अपने मामा से शहनाई बजाना सीखा। रसूलन बाई और बतुलनबाई से उन्हें संगीत की प्रेरणा मिली। खान साहब अल्लाह से सदैव सच्चे सुर को माँगते थे। वह मोहर्रम में 30 दिन का शोक मनाते तथा उसकी आठवीं तारीख को नोहा बजाते। उन्हें फिल्मों व कचौड़ियों से बड़ा लगाव था। उनकी काशी विश्वनाथ में बहुत आस्था थी। वे भारत रत्न विजेता थे। वर्तमान में रियाज का अभाव उन्हे खलता है। 2006 में उनकी मृत्यु हो गई।

प्रश्न-1 निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उन पर पूछे गए प्रश्न उत्तर दीजिए -

वैदिक इतिहास में शहनाई का कोई उल्लेख नहीं मिलता इस संगीत शास्त्रोंतर्गत 'सुषिर-वाद्यों में' गिना जाता है ।अरब देश में फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य जिसमें नाड़ी(नरकट या रीड) होती है, को 'नय' बोलते हैं ।शहनाई को 'शाहेनय' ने अर्थात 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि दी गई है ।16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में तानसेन के द्वारा रची बंदिश ,जो संगीत राग कल्पद्रुम से प्राप्त होती है, में शहनाई, मुरली, वंशी, श्रृंगी एवं मुरछंग आदि का वर्णन आया है ।

अवधि परंपरा लोकगीत एवं चैती में शहनाई का उल्लेख बार-बार मिलता है। मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करने वाला यह वाद्य इस इन जगहों पर मांगलिक विधि-विधानों के अवसर पर ही प्रयुक्त हुआ है ।दक्षिण भारत के मंगल वाद्य 'नागस्वरम् की तरह शहनाई,प्रभाती की मंगलध्वनि का संपूरक है।

(क) 'सुषिर-वाद्यों' से क्या तात्पर्य है?

i) जो वाद्य देखने में सुंदर हो

ii)जो मधुर ध्वनि उत्पन्न करता हो

iii) जो भूख कर बजाए जाने वाला हो

iv)जो तबला के समान बचाए जाने वाला हो

(ख)शहनाई का उल्लेख कहां मिलता है

i)तानसेन द्वारा रची बंदिश में

ii)मुरली, वंशी और श्रृंगी के साथ

iii)पारंपरिक लोकगीतों में

ivउपरोक्त सभी

(ग)शहनाई की तुलना किस की गई है?

i)परंपरागत वाद्य यंत्रों से

ii)दक्षिण भारत के मंगल वाद्य यंत्र से

iii)उत्तर भारत के मधुर वाद्य यंत्रों से

iv)सुरविहीन वाद्य यंत्रों से

(घ)किस भाषा के लोकगीतों में शहनाई का उल्लेख मिलता है?

i) छत्तीसगढ़ी भाषा

ii) अवधी भाषा

iii)ब्रज भाषा

iv)भोजपुरी भाषा

(ङ) 'शाहेनय' किस वाद्य यंत्र को कहा जाता है?

i)सितार को

ii)हारमोनियम को

iii)शहनाई को

iv)तबले को

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए और उत्तर दीजिए-

1- बिस्मिल्ला खाँ को कुलसुम हलवाइन की कचौड़ी वाली दुकान पर जाना क्यों पसंद था?

क) उसकी कचौड़ियां बेहद स्वादिष्ट खस्ता होती थीं ख) उसका कचौड़ी बनाने का अनोखा अंदाज था

ग) उसकी कचौड़ी का दाम बहुत वाजिब था

घ)कचौड़ी तलते समय छन्न की आवाज में आरोह अवरोह दिखता था।

2-काशी में संगीत आयोजन की अद्भुत परंपरा की क्या विशेषता है?

क)यहां संगीत का आयोजन पिछले कई वर्षों से होता आ रहा है

ख)हनुमान जयंती के अवसर पर यहां पांच दिनों तक शास्त्रीय गायन के कार्यक्रमों का आयोजन होता है

ग) क और ख दोनों

घ)यहां संगीत को व्यक्ति से अधिक महत्व दिया जाता है।

3- बिस्मिल्ला खाँ को किस बात का पक्का यकीन था?

क) वह भारत रत्न प्राप्त कर लेंगे

ख)ईश्वर उन्हें सच्चा और प्रदान करेगा

ग) वह हिंदू मुस्लिम को एक करने में सफल होंगे

घ)उपरोक्त सभी

4-बिस्मिल्ला खाँ पर रसूलन भाई और बाटुलन भाई का क्या प्रभाव पड़ा?

क) इनके कारण बिस्मिल्लाह खान की संगीत में रुचि बड़ी

ख)इनके द्वारा बिस्मिल्लाह खान गलत रास्ते पर चल पड़े

ग)इनसे प्रेरणा लेकर बिस्मिल्लाह खान पढ़ाई करने लगे

घ)इनके कारण बिस्मिल्लाह खान को सच्चा और नहीं मिल सका।

5-बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई में क्या समाया हुआ था क)उनके उस्ताद की नसीहतें

ख)संगीत के सातों सुर

ग)स्वयं परवरदिगार

घ)उपरोक्त सभी

6-बिस्मिल्लाह खान के लिए शहनाई और काशी क्या है ?

क)आजीविका का साधन

ख)जन्नत से बढ़कर

ग)जीवन का आधार

घ)उपरोक्त सभी

7-नौबत खाने में इबादत पाठ के आधार पर बताइए कि भीमपलासी और मुल्तानी क्या हैं?

क) एक मिट्टी का नाम

ख)खास तरह के व्यंजन

ग)एक तरह का रंग

घ)एक प्रकार की शहनाई

8-काशी विश्वनाथ के प्रति बिस्मिल्लाह खान अपनी श्रद्धा किस प्रकार दर्शाते हैं?

क)वह काशी की ओर मुख करके बैठते हैं

ख)वह अपनी शहनाई का प्याला काशी की ओर घुमा देते हैं

ग) और दो दोनों

घ)वह अपना मुंह ढक कर शहनाई बजाते है।

9-डुमराव में कौन-सी नदी बहती है?

क) गंगा

ख)यमुना

ग)सोन

घ)बेतवा

विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए-

1- अली बख्श के घराने का खानदानी पेशा क्या था? मंदिरों में कौन-कौन से राग प्रायः गाए जाते थे?

उत्तर- अली बख्श के घराने का खानदानी पेशा बजाने का था। उनके अब्बा जान भी वाले बालाजी मंदिर की इसी ड्योढ़ी पर शहनाई बजाते थे। उस समय मंदिरों में प्राय भीमपलासी, मुल्तानी, कल्याण, भैरवी आदि राज गाए जाते थे।

2- बालाजी मंदिर तक जाने का रास्ता कहां से होकर जाता था और अमीरुद्दीन को खुशी कब मिलती थी?

उत्तर-बालाजी मंदिर तक जाने का रास्ता रसूलनबाई और बतूलनबाई के यहां से होकर जाता था। दोनों गायिका बहनों का ठुमरी, दादरा, टप्पे आदि रागों पर आधारित गायन सुनकर अमीरुद्दीन को खुशी मिलती थी।

3- अपने साक्षात्कारों में बिस्मिल्ला खाँ ने क्या स्वीकार किया?

उत्तर-अपने कई साक्षात्कारों में बिस्मिल्ला खाँ ने इस बात को स्वीकार किया कि उन्हें अपने जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति लगाव रसूलनबाई और बतूलनबाई गायक बहनों कों सुनकर हुआ है।

4- 16वीं शताब्दी में कौन-कौन से सुषिर वाद्यों का प्रचलन था? 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर-16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में तानसेन के द्वारा रची गई बंदिश, जो संगीत राग कल्पद्रुम से प्राप्त होती है, में शहनाई, मुरली, वंशी, श्रृंगी एवं मुरछंग आदि का वर्णन आता है। इससे पता चलता है कि उस समय इन सुषिर वाद्यों का प्रचलन था।

5-बिस्मिल्ला खाँ शहनाई के लिए सर्वोच्च सम्मान पाकर भी नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते—'मेरे मालिक एक सुर बख्श दें– इससे उनकी कौन-सी दो विशेषताएं उभरकर आती हैं?

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ शहनाई के लिए सर्वोच्च सम्मान पाकर भी नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते–' मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। इस पंक्ति से उनकी दो विशेषताएं उभर कर आती हैं।

(i)बिस्मिल्ला खाँ नमाज पढ़ते हुए खुद को से सच्चे और की कामना करते थे।

(ii)वह अपने शहनाई की प्रशंसा को भी खुद को समर्पित करते थे।

6- बिस्मिल्ला खाँ को खुदा के प्रति क्या विश्वास है? उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ जब नमाज अदा करते तो खुदा से एक सच्चे सुर की मांग करते। उन्हें इस बात का यक़ीन भी था कि कभी खुद उन पर मेहरबान होगा और अपनी झोली से और का फल निकाल कर और उछलते हुए रहेगा ले जा अमीरुद्दीन इसको खा ले और कर ले अपनी मुराद पूरी।

7-मोहर्रम के दिनों में बिस्मिल्ला खाँ क्या बजाते थे और कैसे?

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ का अपने मजहब के प्रति पूरी समर्पित थे। अपने परिवार और मजहब की परंपरा के अनुसार खाँ साहब पूरी श्रद्धा से मोहर्रम के शोक में शामिल होते थे। इस अवसर पर उनके खानदान का कोई भी व्यक्ति न तो शहनाई बजाता था और ना ही संगीत के किसी कार्यक्रम में शामिल होता था। आठवीं तारीख के दिन खाँ साहब खड़े होकर शहनाई बजाते और दाल मंडी में फातमान के करीब आठ किलोमीटर की दूरी तक पैदल रोते हुए, नौहा बजाते जाते थे। उसे दिन राग-रागनियों की अदायगी का निषेध होता था।

8- बालक बिस्मिल्ला खाँ बालाजी मंदिर में कमाई गई अठन्नी का क्या करते थे?

उत्तर-बालक बिस्मिल्ला खाँ को बालाजी मंदिर में शहनाई बजाने पर एक अठन्नी मेहनताने के रूप में मिलती थी। जैसे ही फिल्म अदाकारा सुलोचना की नई फिल्म सिनेमा हॉल में आती, वैसे ही बालक बिस्मिल्ला खाँ का अपनी कमाई लेकर फिल्म देखने चले जाते थे।

9-बिस्मिल्ला खाँ के सादगीपूर्ण व्यवहार का एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ सादगी से रहने में विश्वास करते थे। एक बार फटी हुई तहमत पहनने पर उनकी एक शिष्या ने उन्हें टोकते हुए कहा था, "आपको भारत रत्न जैसा प्रतिष्ठित पुरस्कार में मिल चुका है, यह फटी तहमत ना पहना करें। अच्छा नहीं लगता, जब भी कोई आता है आप इसी फटी तहमत में सबसे मिलते हैं।" बिस्मिल्ला खां मुस्कुराकर प्यार से बोले कि उन्हें यह भारत रत्न उनकी शहनाई पर मिला है, न कि उस तहमत पर।

10-आपके विचार से कौन-सी विशेषताएं कलाकार को महानतम बनती हैं।'नौबत खाने में इबादत' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-हमारे विचार से कलाकार को उनके गुण महानतम बनाते हैं। कल ईश्वर प्रदत्त होती है, परंतु महानतम कलाकार बनने के लिए निरंतर कठोर परिश्रम अनिवार्य है। चरित्र व रहन-सहन में सादगी,विनम्रता,कला के प्रति अनन्य भाव से समर्पण तथा मिलनसार व्यवहार भी एक महानतम कलाकार की विशेषताएँ हैं।

भदंत आनंद कौसल्यायन

संस्कृति

लेखक परिचय:-

प्रसिद्ध लेखक भदंत आनंद कौसल्यायन का जन्म सन 1905 में पंजाब के अंबाला जिले के सोहाना गाँव में हुआ। लाहौर के नेशनल कॉलेज से बी० ए० करने के बाद बौद्ध धर्म अपनाकर वे बौद्ध भिक्षु बन गए। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए विश्व भ्रमण किया। वर्धा में गांधीजी के साथ काफ़ी समय बिताया। इनकी मुख्य विशेषता है- मानवतावाद। इनकी भाषा सरल, सहज तथा आडंबरहीन है। वर्णनात्मक शैली के साथ-साथ आत्मकथात्मक शैली का सुंदर प्रयोग हुआ है। रचनाएँ- इनकी 20 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें भिक्षु के पत्र, जो भूल न सका, आह! ऐसी दरिद्रता, बहानेबाजी, यदि बाबा न होते, रेल का टिकट, कहाँ क्या देखा आदि प्रमुख हैं।

रचनाएं :- इनकी 20 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें भिक्षु के पत्र, जो भूल न सका, आह! ऐसी दरिद्रता, बहानेबाज़ी, यदि बाबा न होते, रेल का टिकट, कहाँ क्या देखा आदि प्रमुख हैं।

पाठ परिचय :-

'संस्कृति' पाठ एक निबंध है जो सभ्यता और संस्कृति से जुड़े अनेक जटिल प्रश्नों से जूझने के लिए प्रेरित करता है। अनेक उदाहरणों के माध्यम से सभ्यता और संस्कृति के बारे में बताने का प्रयास किया गया है। संस्कृति सभ्यता का परिणाम है। मानव संस्कृति का बँटवारा नहीं किया जा सकता। लेखक उन लोगों को देख दुखी हैं जो संस्कृति का बँटवारा करना चाहते हैं। लेखक का विश्वास है कि जिससे मानव कल्याण नहीं हो सकता, वह न सभ्यता है और न संस्कृति।

पाठ का सार:-

लेखक कहते है कि सभ्यता और संस्कृति दो ऐसे शब्द हैं जिनका उपयोग अधिक होता है परन्तु समझ में कम आता है। इनके साथ विशेषण लगा देने से इन्हें समझना और भी कठिन हो जाता है। कभी-कभी दोनों को एक समझ लिया जाता है तो कभी अलग आखिर ये दोनों एक हैं या अलग लेखक समझाने का प्रयास करते हुए आग और सुई-धागे के आविष्कार उदाहरण देते हैं। वह उनके आविष्कर्ता की बात कहकर व्यक्ति विशेष की योग्यता, प्रवृत्ति और प्रेरणा को व्यक्ति विशेष की संस्कृति कहता है जिसके बल पर आविष्कार किया गया।

लेखक संस्कृति और सभ्यता में अंतर स्थापित करने के लिए आग और सुई-धागे के आविष्कार से जुड़ी प्रारंभिक प्रयत्नशीलता और बाद में हुई उन्नति के उदाहरण देते हैं। वे कहते हैं लोहे के टुकड़े को घिसकर छेद बनाना और धागा पिरोकर दो अलग-अलग टुकड़ों को जोड़ने की सोच ही संस्कृति है। इन खोजों को आधार बनाकर आगे जो इन क्षेत्रों में विकास हुआ वह सभ्यता कहलाता है। अपनी बुद्धि के आधार पर नए निश्चित तथ्य को खोज आने वाली पीढ़ी को सौंपने वाला संस्कृत होता है जबकि उसी तथ्य को आधार बनाकर आगे बढ़ने वाला सभ्यता का विकास करने वाला होता है। भौतिक विज्ञान के सभी विद्यार्थी जानते हैं कि न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया इसलिए वह संस्कृत कहलाया परन्तु वह और अनेक बातों को नही जान पाया। आज के विद्यार्थी उन बातों को भी जानते है लेकिन हम इन्हें अधिक सभ्य भले ही कहे परन्तु संस्कृत नहीं कह सकते।

लेखक के अनुसार भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे और आग के आविष्कार करते तथ्य संस्कृत होने या बनने के आधार नहीं बनते, बल्कि मनुष्य में सदा बसने वाली सहज चेतना भी इसकी उत्पत्ति या बनने का कारण बनती है। इस सहज चेतना का प्रेरक अंश हमें अपने मनीषियों से भी मिला है। मुँह के कौर को दूसरे के मुँह में डाल देना और रोगी बच्चे को रात-रात भर गोदी में लेकर माता का बैठे रहना इसी चेतना में प्रेरित होता है। ढाई हजार वर्ष पूर्व बुद्ध का मनुष्य को तृष्णा से मुक्ति के लिए उपायों को खोजने में गृह त्यागकर कठोर तपस्या करना, कार्ल मार्क्स का मजदूरों के सुखद जीवन के सपने पूरा करने के लिए दुखपूर्ण जीवन बिताना और लेनिन का मुश्किलों से मिले डबल रोटी के टुकड़ों को दूसरों को खिला देना इसी चेतना से संस्कृत बनने का उदाहरण है। लेखक कहते हैं कि खाने-पीने, पहनने ओढ़ने के तरीके आवागमन के साधन से लेकर परस्पर मर कटने के तरीके भी संस्कृति का ही परिणाम एवं सभ्यता के उदाहरण है।

मानव हित में काम ना करने वाली संस्कृति का नाम असंस्कृति है। इसे संस्कृति नहीं कहा जा सकता। यह निश्चित ही असभ्यता को जन्म देती है। मानव हित में निरंतर परिवर्तनशीलता का ही नाम संस्कृति है। यह बुद्धि और विवेक से बना एक ऐसा तथ्य है जिसकी कभी दल बाँधकर रक्षा करने की जरूरत नहीं पड़ती। इसका कल्याणकारी अंश अकल्याणकारी अंश की तुलना में सदा श्रेष्ठ और स्थायी है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. संस्कृति के रचनाकार कौन हैं?

   (क) स्वयं प्रकाश

   (ख) रामवृक्ष बेनीपुरी

   (ग) भदंत आनंद कौसल्यायन

   (घ) अज्ञेय

2. संस्कृति' एक ********* है जो सभ्यता और संस्कृति के जटिल प्रश्नों से जुड़ा है।

   (क) निबंध

   (ख) उपन्यास

   (ग) नाटक

   (घ) कहानी

3. लेखक के अनुसार सभ्यता क्या है?

   (क) संस्कृति जिसका अविष्कार नहीं करती

   (ख) संस्कृति का संस्कार में मोह हो

   (ग) इसके विकास का लक्ष्य भोग - विलास हो

   (घ) संस्कृति द्वारा जिसका आविष्कार होता है

4. मानव संस्कृति एक **********वस्तु है।

   (क) भाज्य

   (ख) विभाजित

(ग) अविभाज्य

(घ) कठिन

5. वास्तविक संस्कृत व्यक्ति कौन है?

(क) महात्मा गांधी

(ख) निराला

(ग) न्यूटन

(घ) उपयुक्त सभी

6. न्यूटन ने किस सिद्धांत का आविष्कार किया?

(क) प्रकाश का

(ख) चुंबकत्व का

(ग) गुरुत्वाकर्षण का

(घ) तापमान का

7. जो योग्यता किसी महामानव से सर्वस्व त्याग करती है, वह-

(क) असंस्कृति है

(ख) असभ्यता है

(ग) संस्कृति है

(घ) अविष्कार है

8. लेखक के अनुसार संस्कृति क्या है?

(क) जिसका विकास योग्यता अथवा विनाश के बल पर हो

(ख)कोई भी नया आविष्कार जो योग्यता, प्रेरणा या प्रवृत्ति के बल पर हो

(ग) इसके विकास का लक्ष्य भोग विलास हो

(घ) इसके विकास से हम असभ्य हो जाए

उत्तर:-

1:- (ग) भदंत आनंद कौसल्यायन

2:- (क) निबंध

3:- (घ) संस्कृति द्वारा जिसका आविष्कार होता है

4:-(ग) अविभाज्य

5:- (ग) न्यूटन

6:- (ग) गुरुत्वाकर्षण का

7:- (ग) संस्कृति है

8:-(ख)कोई भी नया आविष्कार जो योग्यता, प्रेरणा या प्रवृत्ति के बल पर हो

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **भदंत आनंद कौसल्यायन के अनुसार 'संस्कृति' से क्या अभिप्राय है?**
   - किसी भी नए आविष्कार अथवा तथ्यों को खोजने की योग्यता, प्रवृत्ति ही संस्कृति कहलाती है जैसे आग तथा धागे का आविष्कार करने की शक्ति उसकी संस्कृति है।

2. **लेखक ने संस्कृति के कौन-कौन से रूप गिनाए हैं?**

:- लेखक ने संस्कृति के तीन रूप गिनाए हैं- आग तथा सुई-धागे का आविष्कार करने वाली संस्कृति, तारों की जानकारी देने वाली संस्कृति तथा मानवता के कल्याणार्थ किसी महामानव से सर्वस्व त्याग करवाने वाली संस्कृति।

3. **न्यूटन और आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी में क्या अंतर है?**

:- न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। वर्तमान युग में भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही, साथ ही उसे अन्य बातों का भी ज्ञान प्राप्त है, जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही थे। ऐसा होने पर आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य तो कह सकते हैं, पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

4. **संस्कृति पाठ का मूल स्वर क्या है?**

:- संस्कृति' पाठ का मूल स्वर सभ्यता को संस्कृति का परिणाम मानते हुए मानव-संस्कृति को अविभाज्य वस्तु सिद्ध करना है। लेखक ने यह भी सिद्ध किया है जो मनुष्य के लिए कल्याण कारी नहीं है, वह न सभ्यता है न संस्कृति।

5. **मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति ?**

:- मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी असंस्कृति कहेंगे, जब संस्कृति में कल्याण का भाव नहीं रहेगा, तब उसका परिणाम असभ्यता ही होगा।

कृतिका भाग-2

माता का अँचल

शिवपूजन सहाय

सारांश:-

'देहाती दुनिया' उपन्यास से लिए गए इस अंश में ग्रामीण संस्कृति की झांकी उकेरी गई है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र के विभिन्न चरित्रों तथा बच्चों के शैशव- काल में के अनेक क्रिया-कलापों का अत्यंत मनोहारी ढंग से चित्रण किया गया है। पाठ में भोलानाथ के चरित्र के माध्यम से माता-पिता का स्नेह और दुलार, बालकों के विभिन्न ग्रामीण खेल, लोकगीत और बच्चों की मस्ती एवं शैतानियों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसमें इस तत्व को भी स्पष्ट किया गया है कि बच्चों का माँ से अधिक जुड़ाव होता है। भले ही वह पिता के साथ अधिक समय बिताए किंतु परेशानी के समय उसे माता का आँचल ही शांति देता है।

विषयवस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1 भोलानाथ संकट के समय अपने पिता के पास ना जाकर माता के पास क्यों जाता है? 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'माता का अँचल' पाठ में बाल मनोविज्ञान को बहुत सुंदरता से चित्रित किया गया है। यद्यपि पिता शरीर से अधिक बलवान होते हैं तथा वह बालक को मां की तुलना में अधिक सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं, किंतु फिर भी संकट के समय बालक भोलानाथ पिता के पास ना जाकर माता के पास जाता है। वह माता की शरण लेना पसंद करता है, क्योंकि मां की गोद में जैसी ममता होती है, स्नेह होता है वही उसके जख्मों को भरकर सुरक्षा दे सकती है बालक भोलानाथ सांप के भय के कारण किसी सुरक्षित स्थान में छिप जाना चाहता था, जहां वह साँप से सुरक्षित रह सके इसके लिए उसने सर्वाधिक उत्तम जगह माँ की गोद लगी माँ का प्यार दुलार व स्नेह उसे अधिक सुरक्षा प्रदान करता है।

प्रश्न-2 'माता के अँचल' पाठ में ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया गया है। आप ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन में क्या अंतर पाते हैं ?

उत्तर-'माता का अँचल' पाठ में लेखक ने ग्रामीण परिवेश का चित्रण करते हुए वहां की जीवन शैली का उल्लेख किया है। जहां सामूहिक वातावरण है, लोगों के मध्य आत्मीयता की भावना है, लोग प्रकृति के करीब हैं, बच्चें आधुनिक यंत्रों मोबाइल फोन, कंप्यूटर इत्यादि पर समय व्यतीत करने की जगह शारीरिक खेल खेलते हैं। इसके विपरीत शहरों में लोग एकल जीवन यापन करने की प्रवृत्ति की ओर उन्मुख हो रहे हैं, लोगों के बीच आत्मीयता की कमी है, माता-पिता दोनों के रोजगार करने के कारण वह अपने बच्चों पर उत्तम ध्यान नहीं दे पाते, जितना ग्रामीण माता-पिता इस प्रकार ग्रामीण व शहरी जीवन में अत्यधिक अंतर दिखाई देता है।

प्रश्न-3 'माता का अँचल' पाठ में वर्णित बचपन और आज के बचपन में क्या अंतर है? क्या इस अंतर का प्रभाव दोनों बचपनों के जीवन मूल्य पर पड़ा है? तर्क सहित उत्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'माता का अँचल' पाठ में वर्णित बचपन और आज के बचपन में काफी परिवर्तन आ गया है। पाठ में वर्णित तत्कालीन बचपन में माता-पिता अपने बच्चों से बहुत प्रेम व स्नेह करते थे। दोनों माता-पिता व बच्चों में आत्मीय संबंध था उसे समय का वातावरण सामूहिक था। सभी मिलजुल कर रहते थे। सभी प्रकृति के करीब थे और बच्चे शारीरिक खेल खेलते थे। इन सबके कारण बच्चे व्यावहारिक रूप से समझदार

और अपने माता-पिता वह बड़े बुजुर्ग का सम्मान करते थे तथा साथ ही परिवार के अन्य सदस्यों से घुल-मिलकर रहते थे, परंतु आज का बचपन पहले की अपेक्षा बहुत भिन्न है। बच्चों के माता-पिता अपने अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं तथा बच्चे भी बाहर खेलने की बजाय कंप्यूटर, वीडियो गेम तथा टीवी पर उलझे रहते हैं जिसका विपरीत प्रभाव उनके स्वास्थ्य व संस्कारों पर पड़ता है उनमें घुल मिलकर रहने की प्रवृत्ति समाप्त हो गई है तथा व्यवहारिकता नष्ट होती जा रही है।

प्रश्न-4 आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर से सपना क्यों भूल जाता है?

उत्तर-भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना इसलिए भूल जाता है क्योंकि

क) बच्चों का स्वभाव होता है कि वह अपनी उम्र के बच्चों के साथ ही खेलना पसंद करता है और भोलानाथ को अपने साथियों के साथ तरह-तरह के खेल खेलने को मिलते।

ख)यदि वह अपने साथियों के सामने रोना सिसकना जारी रखता तो वह उसकी हसी उड़ाते उसे अपने साथ लेकर खेलने के लिए नहीं जाते।

ग) अपने मित्रों के साथ खेलने में भोलानाथ को बहुत आनंद आता था तथा उसे अपने मित्रों के साथ वह तरह-तरह की शरारतें भी करता था।

घ) वह अपने साथियों की मस्ती देखकर उसी में मग्न हो जाता जिस कारण उसे सपना भूल जाता था।

प्रश्न-5 भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर- भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री हमारे खेल और खेलने की सामग्री से निम्नलिखित प्रकार से भिन्न है-

क) भोलानाथ और उसके साथियों के खेल सामूहिक रूप से मिल-जुल कर खेले जाते थे। उनके खेलने की सामग्री अधिकतर मिट्टी के खिलौने, लकड़ी, मिट्टी के घड़े के टुकड़े, धूल, पानी पेट और कागज आदि होते थे ,जबकि आज प्लास्टिक आदि का प्रचलन है। इसी कारण हम प्लास्टिक के आकर्षण खिलौनों से खेलते हैं, जो संगीत की धुन और बोलने की आवाज से निकलते हैं।

ख) टेलीविजन के आने से हमें कार्टून नेटवर्क, पोगो, डिज़नी, निक आदि चैनल देखकर भी अपना मनोरंजन करते हैं।

ग) आजकल डिजिटल प्रणाली पर आधारित इलेक्ट्रॉनिक खिलौने द्वारा हम उन्हें खेल सामग्री से खेलते हैं उन्हें खेल सामग्री से खेलते हैं।

घ)भोलानाथ जैसे बच्चों की खेलने की सामग्री आसानी वोट सुलभता से मिला बिना पैसे खर्च किए प्राप्त हो जाती है जबकि आज के बच्चों की सामग्री बाजार से खरीदनी पड़ती है।

प्रश्न-6 'माता का अँचल' शीर्षक की उपयुक्तता व हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उत्तर-'माता का अँचल' शीर्षक बिल्कुल उपयुक्त है। बच्चे माँ के आंचल में छिपकर सुरक्षित महसूस करते हैं।इस पाठ का बच्चा भी घायल अवस्था में मां के आंचल में छिपकर राहत महसूस करता है। इस पाठ में मां की महत्ता का बखान हुआ है। अतः यह शीर्षक पाठ की भावना को अभिव्यक्त करने में समर्थ है। लेखक ने अपने बचपन की घटनाओं का वर्णन किया है।

अन्य शीर्षक:- 'मेरे बचपन'

साना-साना हाथ जोड़ि

मधु कांकरिया

लेखक परिचय

साना-साना हाथ जोड़ि को मशहूर लेखिका मधु कांकरिया जी ने लिखा है। इनका जन्म 23 मार्च 1957 को कलकत्ता में हुआ था। इन्होंने कलकत्ता यूनिवर्सिटी से इकोनॉमिक्स ऑनर्स की पढ़ाई की है। इन्होंने कई बहुत सुन्दर यात्रा-वृत्तांत भी लिखे हैं।

पाठ का सारांश

साना साना हाथ जोड़ि की लेखिका मधु कांकरिया जी ने अपने यात्रा वृतांत के बारे में इसमें बताया है। यह यात्रा सिक्किम की राजधानी गंगटोक और यूमथांग के बीच थी। लेखिका जब इस शहर में उतरी वह हैरान हो गई। उनका हैरान होने का कारण सितारों की झिलमिलाहट में जगमगाता इतिहास और वर्तमान के संधि स्थल पर खड़ा मेहनतकश बादशाहों का शहर गंतोक की सुंदरता थी।

इस सुंदरता ने लेखिका के मन में भीतर-बाहर शून्य स्थापित कर दिया था। उन्होंने इस यात्रा के दौरान एक नेपाली युवती से प्रार्थना के बोल "साना-साना हाथ जोड़ि गर्दहु प्रार्थना" सीखें जिसका अर्थ था छोटे-छोटे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही हूं कि मेरा सारा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो। लेखिका ने अगले दिन यूमथांग जाने का निश्चय किया था। जैसे प्रातःकाल में उनकी नींद खुली वह बालकनी की ओर दौड़ी क्योंकि वहां के लोगों ने उन्हें बताया था कि मौसम साफ होने पर कंचनजंघा साफ दिखाई देती है। कंचनजंघा तो नहीं दिखी परंतु इतने सारे फूल देखे कि वह लिखती हैं "मानो ऐसा लगा कि फूलों के बाग में आ गई हूं।" यूमथांग जोकि गंगटोक से 149 किलोमीटर की दूरी पर था वहां जाने के लिए ड्राइवर कम गाइड जितेन नार्गे के साथ निकलती हैं।

लेखिका जब आ रही थी तब उन्हें गदराए पाईन, नुकीले पेड़, पहाड़ दिखे इसके साथ ही दिखी सफेद बौद्ध पताकाएं जोकि शांति व अहिंसा के प्रतीक होती हैं और बौद्ध धर्म की मान्यता के अनुसार जब किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है तब 108 श्वेत पताकाएं लहराई जाती है जिन पर मंत्र लिखे होते हैं। कई बार नए कार्य के प्रारंभ में भी पताकाएं फहरा दी जाती है परंतु वह रंगीन होती है। अब गाइड नार्गे के साथ लेखिका की जीप उस जगह पहुंची जहां गाइड फिल्म की शूटिंग हुई थी यह जगह- कवी लॉन्ग स्टॉक। उन्हीं रास्तों के भीतर लेखिका मधु जी की एक कुटिया की तरफ नजर पड़ी जहां उन्होंने धर्म चक्र को घूमते देखा।

इस प्रेयर व्हील के बारे में जितेन नार्गे ने बताया कि इसको घुमाने से पाप धुल जाते हैं ऐसा माना जाता है। अब पर्वतों, घाटियों, नदियों की सुंदरता से आगे बढ़कर लेखिका ने फेन उगलता झरना देखा जिसका नाम- सेवेन सिस्टर्स वॉटरफॉल था। लेखिका लिखती है- पहली बार एहसास हुआ.... जीवन का आनंद है यही चलायमान सौंदर्य। वहां उन्होंने पहाड़ तोड़ती तथा बच्चे को पीठ पर बांधकर पत्ते बीनती महिलाओं को देखा। वापस लौटते समय भी जीप में नार्गे ने कई जानकारियां दी। उसने गुरु नानक के फुटप्रिंट और खेदुम एक पवित्र स्थल के बारे में बताया। तभी लेखिका ने कहा गंगटोक बहुत सुंदर है तब नार्गे ने कहा मैडम गंतोक कहिए जिसका अर्थ पहाड़ होता है।

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है। इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए।

उत्तर:- प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने के क्रम में आज की पीढ़ी पहाड़ी स्थलों को अपना विहार स्थान बना रही है। इससे वहाँ गंदगी बढ़ रही है। पर्वत अपनी स्वाभाविक सुंदरता खो रहे हैं।कारखानों से निकलने वाले जल में खतरनाक केमिकल व रसायन होते हैं जिसे नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है। साथ में घरों से निकला दूषित जल भी नदियों में ही जाता है। जिसके कारण हमारी नदियाँ लगातार दूषित हो रही हैं। वनों की अन्धांधुध कटाई से मृदा का कटाव होने लगा है जो बाढ़ को आमंत्रित कर रहा है। दूसरे अधिक पेड़ों की कटाई ने वातावरण में कार्बनडाइ- आक्साइड की अधिकता बढ़ा दी है जिससे वायु प्रदूषित होती जा रही है।

हमें निम्नलिखित भूमिका निभानी चाहिए –

१) हम सबको मिलकर अधिक से अधिक पेड़ों को लगाना चाहिए।

२) पेड़ों को काटने से रोकने के लिए उचित कदम उठाने चाहिए ताकि वातावरण की शुद्धता बनी रहे।

३) हमें नदियों की निर्मलता व स्वच्छता को बनाए रखने के लिए कारखानों से निकलने वाले प्रदूर्षित जल को नदियों में डालने से रोकना चाहिए।

४) नदियों की स्वच्छता बनाए रखने के लिए, लोगों की जागरूकता के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन होना चाहिए।

प्रश्न 2. प्रदूषण के कारण स्नोफॉल में कमी का जिक्र किया गया है। प्रदूषण के और कौन-कौन से दुष्परिणाम सामने आये हैं, लिखें।

उत्तर:- आज की पीढ़ी के द्वारा प्रकृति को प्रदूषित किया जा रहा है। प्रदूषण का मौसम पर असर साफ दिखाई देने लगा है। प्रदूषण के चलते जलवायु पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है। कहीं पर बारिश अतिरिक्त हो जाती है तो किसी स्थान पर अप्रत्याशित रूप से सूखा पड़ रहा है। गर्मी के मौसम में गर्मी की अधिकता देखते बनती है। कई बार तो पारा अपने सारे रिकार्ड को तोड़ चुका होता है। सर्दियों के समय में या तो कम सर्दी पड़ती है या कभी सर्दी का पता ही नहीं चलता। ये सब प्रदूषण के कारण ही सम्भव हो रहा है।

प्रदूषण के कारण वायुमण्डल में कार्बनडाइआक्साइड की अधिकता बढ़ गई है जिसके कारण वायु प्रदूषित होती जा रही है। इससे साँस की अनेकों बीमारियाँ उत्पन्न होने लगी है। प्रदूषण के कारण पहाड़ी स्थानों का तापमान बढ़ गया है, जिससे स्नोफॉल कम हो गया। ध्वनि प्रदूषण से शांति भंग होती है। ध्वनि-प्रदूषण मानसिक अस्थिरता, बहरेपन तथा अनिंद्रा जैसे रोगों का कारण बन रहा है। जलप्रदूषण के कारण स्वच्छ जल पीने को नहीं मिल पा रहा है और पेट सम्बन्धी अनेकों बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

प्रश्न 3. देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी किस तरह की कठिनाइयों से जूझते हैं? उनके प्रति हमारा क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए ?

उत्तर:- 'साना साना हाथ जोडि' पाठ में देश की सीमा पर तैनात फौजियों की चर्चा की गई है। वस्तुत: सैनिक अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह ईमानदारी, समर्पण तथा अनुशासन से करते है। सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध रहते है। देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी प्रकृति के प्रकोप को सहन करते हैं। हमारे सैनिकों (फौजी) भाईयों को उन बर्फ से भरी ठंड में ठिठुरना पड़ता है। जहाँ पर तापमान शून्य से भी नीचे गिर जाता है। वहाँ नसों में खून को जमा देने वाली ठंड होती है। वह वहाँ सीमा की रक्षा के लिए तैनात रहते हैं और हम आराम से अपने घरों पर बैठे रहते हैं। ये जवान हर पल कठिनाइयों से जूझते हैं

और अपनी जान हथेली पर रखकर जीते हैं। हमें सदा उनकी सलामती की दुआ करनी चाहिए। उनके परिवारवालों के साथ हमेशा सहानुभूति, प्यार व सम्मान के साथ पेश आना चाहिए।

प्रश्न 4. गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया ?

उत्तर:- गंतोक को सुंदर बनाने के लिए वहाँ के निवासियों ने विपरीत परिस्थितियों में अत्यधिक श्रम किया है। पहाड़ी क्षेत्र के कारण पहाड़ों को काटकर रास्ता बनाना पड़ता है। पत्थरों पर बैठकर औरतें पत्थर तोड़ती हैं। उनके हाथों में कुदाल व हथौड़े होते हैं। कईयों की पीठ पर बँधी टोकरी में उनके बच्चे भी बँधे रहते हैं और वे काम करते रहते हैं। हरे-भरे बागानों में युवतियाँ बोकु पहने चाय की पत्तियाँ तोड़ती हैं। बच्चे भी अपनी माँ के साथ काम करते हैं। यहाँ जीवन बेहद कठिन है पर यहाँ के लोगों ने इन कठिनाईयों के बावजूद भी शहर के हर पल को खुबसूरत बना दिया है। इसलिए लेखिका ने इसे 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा है।

प्रश्न 5. प्रकृति उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति होती है ?

उत्तर:- हिमालय का स्वरुप पल-पल बदलता है। प्रकृति इतनी मोहक है कि लेखिका किसी बुत-सी माया और छाया के खेल को देखती रह जाती है। इस वातावरण में उसको अद्भुत शान्ति प्राप्त हो रही थी। इन अद्भुत व अनूठे नज़ारों ने लेखिका को पल मात्र में ही जीवन की शक्ति का अहसास करा दिया। उसे ऐसा लगने लगा जैसे वह देश व काल की सरहदों से दूर,बहती धारा बनकर बह रही हो और उसकी मन के सारा मैल और वासनाएँ इस निर्मल धारा में बह कर नष्ट हो गई हो। प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरुप को देखकर लेखिका को लगा कि इस सारे परिदृश्य को वह अपने अंदर समेट ले। उसे ऐसा अनुभव होने लगा वह चीरकाल तक इसी तरह बहते हुए असीम आत्मीय सुख का अनुभव करती रहे।

प्रश्न 6. प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को कौन-कौन से दृश्य झकझोर गए ?

उत्तर:- लेखिका हिमालय यात्रा के दौरान प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनन्द में डूबी हुई थी परन्तु जीवन के कुछ सत्य जो वह इस आनन्द में भूल चूकी थी, अकस्मात् वहाँ के जनजीवन ने उसे झकझोर दिया। वहाँ कुछ पहाड़ी औरतें जो मार्ग बनाने के लिए पत्थरों पर बैठकर पत्थर तोड़ रही थीं। वे पत्थर तोड़कर सँकरे रास्तों को चौड़ा कर रही थीं। उनके कोमल हाथों में कुदाल व हथौड़े से ठाठे (निशान) पड़ गए थे। कईयों की पीठ पर बच्चे भी बँधे हुए थे। इनको देखकर लेखिका को बहुत दुख हुआ।
वह सोचने लगी की यह पहाड़ी औरतें अपने जान की परवाह न करते हुए सैलानियों के भ्रमण तथा मनोरंजन के लिए हिमालय की इन दुर्गम घाटियों में मार्ग बनाने का कार्य कर रही है। सात आठ साल के बच्चों को रोज़ तीन-साढ़े तीन किलोमीटर का सफ़र तय कर स्कूल पढ़ने जाना पढ़ता है। यह देखकर लेखिका मन में सोचने लगी कि यहाँ के अलौकिक सौंदर्य के बीच भूख, मौत, दैन्य और जिजीविषा के बीच जंग जारी है।

मैं क्यों लिखता हूँ?

------ सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (1911-1987)

पाठ- परिचय

प्रस्तुत पाठ में बताया गया है कि कोई भी रचनाकार कब और क्यों लिखता है। दो प्रकार की बातें लिखने के लिए प्रेरित करती हैं। पहली लेखक आंतरिक विवशता से मुक्ति पाने के लिए तटस्थ होकर उसे देखने और पहचान लेने के लिए लिखता है। दूसरी बाहरी विवशता, जैसे- संपादकों के आग्रह, प्रकाशकों के तकाज़े से और आर्थिक विवशता के कारण लिखता है। लेखक को हिरोशिमा पर बम विस्फोट घटना का पता था परंतु उस पर उन्होंने कुछ नहीं लिखा लेकिन जब वे जापान गए और सब कुछ अपनी आँखों से देखा तो ट्रेन में कविता लिखी। कवि के लिए यही महत्व की बात है कि यह कविता अनुभूति से जन्मी है।

पाठ का सार

• **एक कठिन प्रश्न**- 'लेखक क्यों लिखता है? यह प्रश्न दिखने में सरल होता है, पर वास्तव में यदि इसका उत्तर दिया जाए, तो यह अत्यंत जटिल है क्योंकि इसका सही और सच्चा उत्तर लेखक के अंतर्मन से संबंध रखता है। उसे संक्षिप्त रूप में कहना आसान नहीं है। इतना अवश्य किया जा सकता है कि उनमें से दूसरे के लिए उपयोगी तथ्य निकाल लिए जाएँ।

• **लेखन से जुड़े कारण**- लेखक लिखने का कारण जानने के लिए लिखता है कि जब तक लिखा न जाए, इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिल सकता। लिखकर ही लेखक उस आंतरिक विवशता को पहचानता है, जिसके कारण उसने लिखा और लिखकर ही वह उससे मुक्त हो पाता है। लेखक 'अज्ञेय' स्वयं भी उस आंतरिक विवशता से मुक्ति पाने के लिए, तटस्थ होकर उसे देखने और पहचानने के लिए लिखते हैं। उनका विश्वास है कि लेखकों द्वारा लेखन कार्य इसी कारण से ही किया जाता है। यह भी सत्य है कि कुछ प्रसिद्धि प्राप्त होने के पश्चात विवशता (संपादकों के आग्रह, प्रकाशक के तकाज़े, आर्थिक विवशता) से भी लिखते हैं। वैसे बाहरी दबाव भी देखा जाए तो भीतर के प्रकाश का ही निमित्त होता है। यहाँ रचनाकार के आत्मानुशासन एवं प्रकृति का महत्व बहुत होता है।

कुछ आलसी लोग बाहरी दबाव के बिना लिख ही नहीं पाते। इससे उनके अंदर की विवशता का परिचय मिलता है। ऐसे लोगों की स्थिति उस व्यक्ति जैसी है, जो नींद खुल जाने पर भी बिछौने पर पड़ा रहे, जब तक घड़ी का अलार्म न बजे। ऐसे कृतिकार बाहरी दबाव के प्रति समर्पित न होकर उसे एक सहायक यंत्र की तरह इसलिए काम में लाते हैं, ताकि भौतिक यथार्थ से उनका संबंध बना रहे। लेखक 'अज्ञेय' को यद्यपि इस साधन रूपी सहारे की ज़रूरत नहीं पड़ती, पर वे उसे 'बाधा' भी नहीं मानते।

• **भीतरी विवशता का स्पष्टीकरण**- भीतरी विवशता को स्पष्ट करना अत्यंत कठिन है। लेखक अपनी कविता 'हिरोशिमा' द्वारा अपनी बात को स्पष्ट करना चाहता है-

लेखक ने विज्ञान का नियमित विद्यार्थी होने के कारण रेडियम-धर्मी तत्वों, अणु और अणु भेदन की बातों का अध्ययन किया था। उसे रेडियम धर्मिता के प्रभाव का ज्ञान तो था, पर जब हिरोशिमा पर अणु-बम गिरा, तब उसके परवर्ती प्रभावों का भी पता चला। विज्ञान के इस दुरुपयोग से लेखक में बौद्धिक विद्रोह जगा, जिसे लेखक ने लेख आदि में लिखा, किंतु वह विद्रोह अनुभूति के स्तर पर नहीं उतर पाया था, इसलिए लेखक ने इस विषय पर नहीं लिखी। युद्ध काल में भारत की पूर्वी सीमा पर सैनिकों को ब्रह्मपुत्र में नम फेंककर हज़ारों मछलियों को मारते लेखक ने देखा था, जबकि आवश्यकता उन्हें थोड़ी-सी मछलियों की थी। जीवों के इस प्रकार अपव्यय से जो पीड़ा अंदर उमड़ी थी, उसी से एक सीमा तक हिरोशिमा में अणु बम द्वारा जीव-नाश का अनुभव किया जा सकता था।

• **लेखक की जापान यात्रा-** जब लेखक जापान यात्रा पर गया तो हिरोशिमा भी गया। वहाँ उसने अस्पताल में रेडियम-पदार्थ से आहत लोगों को देखा, जो वर्षों से कष्ट पा रहे थे। लेखक को प्रत्यक्ष अनुभव हुआ, किंतु एक कृतिकार के लिए से गहरी चीज़ है, अनुभूति अनुभव तो घटित का होता है, पर अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य को स्वयं में समाहित कर लेती है, जो वास्तव में कृतिकार के साथ घटित ही नहीं हुआ है। जो आँखों के सामने नहीं आया, जो घटित के अनुभव में भी नहीं आया, वही आत्मा के समक्ष प्रकाश रूप में आ जाता है, तब वह अनुभूति प्रत्यक्ष हो जाती है। इसी अनुभूति प्रत्यक्ष की कसर

होने के कारण हिरोशिमा में सब कुछ देखकर भी तत्काल कुछ नहीं लिखा। एक दिन वहीं सड़क पर घूमते हुए देखा- एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया है। जब विस्फोट हुआ था, तब वहाँ कोई व्यक्ति खड़ा होगा। विस्फोट में बिखरे हुए रेडियम-धम पदार्थ की किरणें उसमें फँस गई होंगी, जिससे पत्थर झुलस गया। उस व्यक्ति पर उन किरणों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह मा बनकर उड़ गया और उसकी छाप पत्थर पर अंकित हो गई।

* **लेखक द्वारा अणु विस्फोट का भोक्ता बनना** - पत्थर मनुष्य की छाया देखकर लेखक को धक्का पहुँचा। उसके मन में इतिहास सूर्य की तरह उगा और डूब गया। कहना न होगा कि उस पल में वह अणु विस्फोट लेखक के अनुभूति प्रत्यक्ष में आ गया। एक अर्थ में वह स्वयं हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता बन गया। इसी से आंतरिक विवशता जगी। अंदर की आकुलता बौद्धिक क्षेत्र से बढ़कर संवेदना के क्षेत्र में आ गई। लेखक ने रेलगाड़ी में हिरोशिमा पर कविता लिखी। कवि को कविता के अच्छे-बुरे से कोई मतलब नहीं है। उनके लिए यही पर्याप्त है कि अनुभूति से जन्मी है।

महत्वपूर्ण प्रश्न एवं उनके उत्तर

1. लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती हैं, क्यों?

उत्तर: लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है क्योंकि सच्चा लेखन मन की भीतरी व्याकुलता से उत्पन्न होता है। यह व्याकुलता मन के अंदर से उपजी अनुभूति से उत्पन्न होती है, बाहर की घटनाओं को देखकर नहीं जागती। जब तक रचनाकार का मन अनुभव के कारण संवेदनशील नहीं होता और उसमें उसे अभिव्यक्त करने की पीड़ा जागृत नहीं होती, तब तक वह कुछ लिख नहीं पाता।

2. लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

उत्तर: एक दिन हिरोशिमा की सड़क पर घूमते हुए लेखक ने देखा कि एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया है- विस्फोट के समय कोई वहाँ खड़ा होगा। विस्फोट से बिखरे हुए रेडियोधर्मी पदार्थ की किरणें उसमें फँस गई होंगी, जो आस-पास से आगे बढ़ गई, उन्होंने पत्थर को झुलसा दिया। जो उस व्यक्ति पर पड़ीं, उन्होंने उसे भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। इस प्रकार समूची त्रासदी जैसे पत्थर पर अंकित हो गई। उस छाया को देखकर लेखक भीतर तक हिल गए। उन्हें लगा कि इतिहास जैसे भीतर कहीं सहसा एक जलते हुए सूर्य के समान उग आया और डूब गया। इस क्षण उन्हें लगा कि अणुबम विस्फोट की उन्हें प्रत्यक्ष अनुभूति हो गई और वे स्वयं हिरोशिमा के विस्फोट के भुक्तभोगी बन गए।

3. 'मैं क्यों लिखता हूँ?' के आधार पर बताइए कि-
(क) लेखक को कौन-सी बातें लिखने के लिए प्रेरित करती हैं?
(ख) किसी रचनाकार के प्रेरणा-स्रोत किसी दूसरे को कुछ भी रचने के लिए किस तरह उत्साहित कर सकते हैं?

उत्तर: (क) लेखक की भीतरी विवशता उन्हें लिखने के लिए प्रेरित करती है। जब लेखक लिख लेता है, तो वह भीतरी छटपटाहट से मुक्त हो जाता है। संपादकों का आग्रह, प्रकाशक के कहने से या आर्थिक आवश्यकता इत्यादि बाहरी विवशता है। ये सभी लेखक के प्रेरणास्रोत हैं।

(ख) वैसे तो लेखन लेखक के आंतरिक जीवन से जुड़ा होता है। लेखक के प्रेरणास्रोत आंतरिक या बाह्य दबाव हो सकते हैं। कारण कोई भी हो, लेकिन उसके लेखन से यदि सामाजिक मूल्यों की रक्षा हुई, नए मानदंड स्थापित हुए या कुछ ऐसा किया गया, जिससे वे प्रसिद्ध हुए यो धन लाभ का कारण बना, तो वह दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाएगा। जैसे वाल्मीकि ने रामकथा का आरंभ किया, फिर तुलसीदास, कवि

कंवन, मैथिलीशरण गुप्त आदि ने इसे आगे बढ़ाया। सूरदास के भ्रमरगीत की परंपरा को अनेक कवियों ने आगे बढ़ाया।

4. कुछ रचनाकारों के लिए आत्मानुभूति/स्वयं के अनुभव के साथ-साथ बाह्य दबाव भी महत्त्वपूर्ण होता है। ये बाह्य दवाव कौन-कौन से हो सकते हैं?

उत्तर: ये बाहरी दबाव निम्नलिखित हो सकते हैं-

(i) संपादकों के आग्रह पर लिखना।

(ii) प्रकाशकों के तकाज़े पर लिखना।

(iii) आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए लिखना।

(iv) प्रसिद्धि मिलने पर सम्मान की क्षुधा शांति के लिए लिखना।

5. क्या बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित करते हैं या अन्य क्षेत्रों से जुड़े कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं, कैसे?

उत्तर: बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित नहीं करते हैं, बल्कि अन्य क्षेत्रों से जुड़े कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं, जैसे-नृत्य करने वाले, गायक, अभिनेता-अभिनेत्रियाँ, हास्य कलाकार आदि दर्शकों, आयोजकों, और निर्माता-निर्देशकों के कहने पर भी कला-प्रदर्शन करते हैं।

6. 'हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंतः व वाह्य दोनों दबावों का परिणाम है।' यह आप कैसे कह सकते हैं?

उत्तर: हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के आंतरिक तथा बाहूय दबाव का ही परिणाम है। हिरोशिमा में सब देखकर भी अज्ञेय जी उसी क्षण कुछ नहीं लिख सके क्योंकि उन्होंने अनुभव तो कर लिया पर अनुभूति प्रत्यक्ष की कमी थी। एक दिन वहीं सड़क पर घूमते हुए देखा कि एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया है- विस्फोट के समय कोई वहाँ खड़ा होगा। विस्फोट से बिखरे हुए रेडियोधर्मी पदार्थ की किरणें उसमें फँस गई होंगी, जो आस-पास से आगे बढ़ गई। उन्होंने उसे भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। इस प्रकार समूची त्रासदी जैसे पत्थर पर अंकित हो गई। उन्हें लगा कि अणु-विस्फोट उनके अनुभूति प्रत्यक्ष में आ गया अर्थात अणुबम विस्फोट की उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभूति कर ली तथा ये स्वयं हिरोशिमा के विस्फोट के भुक्तभोगी बन गए। इसी से वह विवशता जागी। भीतर की व्याकुलता बुद्धि के क्षेत्र से बढ़कर संवेदना के क्षेत्र में आ गई। भारत वापस आकर रेलगाड़ी में बैठे-बैठे ही कविता लिख डाली।

7. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ और किस तरह से हो रहा है ?

उत्तर: हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। हमारी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। शक्तिशाली देश बम विस्फोट कर छोटे-छोटे देशों को अपने नियंत्रण में लेने की कोशिश कर रहे हैं। आतंकवादी संगठन मनचाहे विस्फोट कर अपनी बातें मनवा लेते हैं। खाने-पीने, जल, वायु आदि में प्रदूषण के कारण सब दूषित हो रहा है। विज्ञान के दुरुपयोग से किसान कीटनाशक और ज़हरीले रासायनिक द्रव्य छिड़कते हैं, इससे फ़सलें तो अधिक मात्रा में प्राप्त हो जाती हैं, पर उनके पौष्टिक तत्व नष्ट हो जाते हैं। ऐसे खाद्य-पदार्थ खाकर लोग बीमार हो जाते हैं। विज्ञान के उपकरणों का प्रयोग करने से वातावरण में गरमी बढ़ रही है एवं प्रदूषण बढ़ रहा है। बर्फ़ पिघलने से बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। रोज़ दुर्घटनाएँ हो रही हैं।

8. एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?

उत्तर: एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में मेरी अहम भूमिका रहेगी। में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग तो करूँगा, लेकिन यह भी ध्यान रखूंगा कि इससे पर्यावरण एवं किसी दूसरे को हानि न हो। | मैं प्रदूषण फैलाने वाली वस्तुओं का प्रयोग कम-से-कम करूँगा। अपने तथा

अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ और सुंदर बनाने का प्रयत्न करूँगा। प्रकृति के निकट रहूँगा। सुख-सुविधाओं की कृत्रिम दीवारों को तोड़ूंगा। किसानों को भूमि तथा फसलों पर दुष्प्रभाव डालने वाली रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाएँ आदि से करूँगा तथा वृक्ष लगाने, पॉलिथीन बैग इस्तेमाल न करने, प्रदूषण के विषय में जानकारी देने के लिए कार्यक्रम आयोजित करूँगा, निकालूँगा, प्रतियोगिताएँ आयोजित करूँगा, जिससे आम जनता में जागृति आएगी।

9. लेखक के अनुसार अनुभूति से उत्पन्न भीतरी विवशता किस प्रकार लिखने के लिए बाध्य करती है?
उत्तर: लेखक ने हिरोशिमा नामक कविता का उदाहरण देते हुए इस तथ्य को स्पष्ट किया है कि अनुभूति अनुभव से गहरी चीज़ । वास्तव में लेखक भीतरी विवशता से प्रेरित होकर ही लिखता है। यदि बाहरी दबाव को देखें, तो यह स्पष्ट होता है कि वह भी दबाव नहीं रह जाता, बल्कि आंतरिक प्रकाश का कारण बन जाता है। अनुभूति कल्पना और संवेदना के सहारे उस सत्य को अंतरात्मा में ग्रहण कर लेने का नाम है जो लेखक के साथ घटित नहीं हुआ है, परंतु वह आत्मा में उतर कर अनुभूति रूप से प्रत्यक्ष हो जाता है और भीतरी विवशता को जन्म देता है। यही भीतरी विवशता उसे लेखन की प्रेरणा देती है।

10. लेखक को किस घटना से अणु बम द्वारा व्यर्थ जीव नाश अनुभव हुआ था? उस घटना के विषय में अपने विचार लिखिए।
उत्तर: लेखक ने युद्ध काल में भारत की पूर्वी सीमा पर देखा था कि सैनिक ब्रह्मपुत्र नदी में बम फेंककर हज़ारों मार देते थे। अपने थोड़े से स्वार्थ के लिए यह कृत्य सरासर अनुचित था। लेखक को अणु बम द्वारा जापान के हिरोशिमा में हुए नरसंहार और इस घटना में काफ़ी समानता का अनुभव हुआ। इस व्यर्थ जीव नाश और विज्ञान के दुरुपयोग के प्रति बौदधिक विद्रोह स्वाभाविक है। निज स्वार्थ से वशीभूत होकर हजारों जीवों का व्यर्थ नाश करना मानव धर्म नहीं है। हमें प्राणी मात्र पर दया करनी चाहिए तथा 'जियो और जीने दो के सिद्धांत पर बल देना चाहिए।

3. 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के संदर्भ में लिखिए कि आपके विचार से विज्ञान का दुरुपयोग कैसे हो रहा है और उससे कैसे क्या जा सकता है?
उत्तर: विज्ञान का दुरुपयोग हर क्षेत्र में हो रहा है। कृषि क्षेत्र में पैदावार बढ़ाने के लिए फसलों पर दवाओं का अत्यधिक प्रयोग, खेतों में रासायनिक खादों व कीटनाशक दवाओं का प्रयोग करना फल-सब्ज़ियों को दूषित करता है तथा भूमि-प्रदूषण को बढ़ाता है। विज्ञान के आधुनिक प्रयोगों से प्रदूषण बढ़ने एवं ग्लोबल वार्मिंग की समस्या उभरी है। मीडिया से युवा मन पर विपरीत प्रभाव पड़ने से सामाजिक प्रदूषण बढ़ रहा है। विश्व में अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण की होड़ से परमाणु-शक्ति का दुरुपयोग हो रहा है। जिससे संसार तीसरे विश्व युद्ध के कगार पर पहुँच गया है। किसानों को भूमि तथा फसलों पर दुष्प्रभाव डालने वाली रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाओं आदि के संबंध में जागरूक करके साथ ही वृक्ष रोपण, पॉलीथीन का इस्तेमाल न करने तथा विज्ञान के प्रयोगों का सावधानी से इस्तेमाल करने संबंधी कार्यक्रमों को आयोजित कर आम जनता में जागृति लाकर विज्ञान के दुरुपयोग को रोका जा सकता है।

लेखन - खण्ड

अनुच्छेद-लेखन

- अनुच्छेद एक ही विषय पर लिखित सुगठित वाक्य-समूह का नाम है।
- दूसरे शब्दों में, किसी भी विषय अथवा सूक्ति इत्यादि पर क्रमानुसार निर्धारित पंक्तियों का सुगठित रूप अनुच्छेद के नाम से जाना जाता है।
- इसमें उल्लिखित समस्त बातें एक ही विषय पर केंद्रित होती हैं तथा विषय का विस्तार एक बिंदु तक सीमित रहता है।

उद्देश्य

अनुच्छेद लेखन के माध्यम से किसी भी विषय से संबंधित भावों और विचारों को सार रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसकी सहायता से विषय को कम-से-कम शब्दों में स्पष्ट किया जा सकता है।

अनुच्छेद लेखन के प्रकार

अनुच्छेद लेखन के निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं-

1. विचारात्मक/भावात्मक अनुच्छेद
2. वर्णनात्मक/समस्या संबंधी अनुच्छेद

अनुच्छेद लेखन का प्रारूप

विषय का नाम	**ऑनलाइन खरीददारी: समय की माँग**
मुख्य विषयवस्तु	ऑनलाइन शॉपिंग एक उभरती हुई ई-कॉमर्स तकनीक है जो आज के समय में सुविधाजनक विकल्प है। यह व्यापक रूप से विकसित होता जा रहा है। दुनियाभर में फैले कोविड-19 का प्रकोप हमारे लिए सबसे विनाशकारी था। उस समय बाहर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। पूरे विश्व में लोगों ने उत्पादों और सेवाओं का ऑर्डर और वितरित करने के लिए ऑनलाइन माध्यमों को प्राथमिकता दी। इंटरनेट पर हर किसी को उसकी आवश्यकता के उत्पाद के बारे में पता लगाने, उसे खरीदने और वितरित करने का विकल्प प्रदान किया गया। इस प्रकार यह महामारी के दौरान एक शानदार विकल्प साबित हुआ। आज यह समय की बचत और खरीददारी को सुविधाजनक बनाने का एक बेहतर तरीका है। साथ ही इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं तकनीक को सर्फिंग के साथ-साथ स्मार्ट तरीकों का उपयोग करने के लिए बेहतर ज्ञान की आवश्यकता होती है। संयम और धैर्य के साथ खरीददारी करनी चाहिए। कई बार ऑनलाइन खरीददारी में विशेष लुभाने वाले ऑफर भी होते हैं। हमें बहुत सोच-समझकर ऑर्डर करना चाहिए। आज के व्यस्त जीवन और तकनीकी विस्तार के कारण यह समय की माँग है। यह ट्रेडिंग तकनीकी की लोगों के जीवन को आसान बनाएगी तथा लोग इससे लाभान्वित होंगे।
विषयवस्तु का विस्तार	
समापन	

अंक विभाजन

विषयवस्तु	3 अंक
भाषा	1 अंक
प्रस्तुति	2 अंक
कुल	6 अंक

ध्यान रखने की विशेष बातें

अनुच्छेद आपस में संबंध रखने वाले वाक्य-समूह का नाम है। यह अपने आप में पूर्ण होता है तथा विषय को पूरी तरह स्पष्ट करता है;
अतः अनुच्छेद-लेखन के दौरान निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :-

- अनुच्छेद-लेखन हेतु सरल, स्पष्ट एवं रोचक भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- विषय संबंधी सभी बातों को विषयानुरूप एवं संक्षेप में लिखना चाहिए। अनुच्छेद में अनावश्यक एवं अवांछित प्रसंगों एवं उदाहरणों का उल्लेख नहीं करना चाहिए।
- अनुच्छेद के वाक्यों में परस्पर तारतम्यता होनी चाहिए अर्थात वाक्य एक-दूसरे से जुड़े होने चाहिए।
- अनुच्छेद में प्रारंभ से अंत तक सहज प्रवाह होना चाहिए तथा एक ही अनुच्छेद (पैराग्राफ) में लिखा जाना चाहिए | पैराग्राफ कतई नहीं बदलना चाहिए |
- प्रश्नों में संकेत-बिंदु आप को विषय के बारे में सोचने में सहायता करने के उद्देश्य से दिए जाते हैं, न कि उनको बिन्दुओं के रूप में अनुच्छेद के भीतर लिखे जाने के लिए |

अनुच्छेद का एक और उदहारण

मोबाइल फ़ोन सुविधा या असुविधा

(संकेत बिंदु - • अनिवार्य आवश्यकता • उपयोगिता उचित रीति से प्रयोग)

वर्तमान समय में मोबाइल फ़ोन जीवन का अभिन्न हिस्सा बनकर रह गया है। इसके बिना जीवन सूना-सूना लगता है। आज के युग में हर व्यक्ति चाहे वह उच्च वर्ग का हो या निम्न वर्ग का, मोबाइल फ़ोन जरूर रखता है। यह सभी के पास हो भी क्यों न? इससे हम फोटोग्राफ़ी कर सकते हैं, हिसाब-किताब लगा सकते हैं, संगीत सुन सकते हैं। अब यह केवल बातचीत का जरिया मात्र नहीं रह गया है। इंटरनेट से जोड़कर आप कोई भी खबर पलक झपकते ही मोबाइल में देख सकते हैं। इससे प्राप्त सुविधाओं का कोई अंत नहीं। जैसे हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, वैसे ही इसके भी कुछ लाभ हैं, तो कुछ नुकसान भी। इससे समय की बरबादी होती है, स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता है, यहाँ तक कि जान का खतरा भी हो सकता है। आजकल बच्चे इस पर कई तरह के गेम्स खेलते हैं, जिससे कुछ बच्चों को 'ब्लू वेल' गेम खेलते हुए अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ा। इसलिए इसका सदुपयोग करें और जितनी आवश्यकता हो, उतना ही प्रयोग करें। कहीं ऐसा न हो कि इससे लाभ मिलने के स्थान पर हानि अधिक हो जाए।

पत्र लेखन

औपचारिक पत्र

प्रश्न – आपके नगर की एक प्रसिद्ध डेयरी में दूध तथा दूध से निर्मित पदार्थों में मिलावट की जाती है | नगर के स्वास्थ्य अथिकारी को पत्र द्वारा जानकारी देते हुए उचित कार्यवाही के लिए अनुरोध कीजिए |

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी ,
दिल्ली नगर निगम
राजौरी गार्डन , नई दिल्ली |
विषय : दूध एवं दुग्ध पदार्थों में मिलावट सम्बन्धी जानकारी विषयक |

महोदय ,
मैं आपका ध्यान रघुवर क्षेत्र में चल रही गुप्त डेयरी द्वारा मिलावट के अनैतिक धंधे की और आकर्षित करण चाहता हूँ | इस डेयरी में दूध वितरित होता हैं तथा दूध से बने पदार्थ पनीर , दही , खोया आदि बनाकर बेचे जाते हैं | इन पदार्थों में भारी मिलावट की जाती हैं यह डेयरी लोगो के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रही है आपसे विनम्र अनुरोध हैं की इस डेयरी पर आवश्यक क़ानूनी कार्यवाही की जाए, जिससे यहाँ मिलावट पर रोक लगाई जा सके |

धन्यवाद
भवदीय
श्रमेश
संयोजक,
जन चेतना मंच , रघुवीर नागर ,
नई दिल्ली |
दिनांक .....

आवेदन पत्र

एन.सी.ई.आर.टी नई दिल्ली में लिपिक पदों के रिक्त स्थनों को भरने के लिए रोजगार समाचार में विज्ञापन आया है , उसका हवाला देते हुए सचिव के नाम आवदेन पत्र लिखिए |

सेवा में,
सचिव महोदय ,
एन.सी.ई.आर.टी
नई दिल्ली |

विषय – लिपिक पद की नियुक्ति हेतु आवेदन पत्र |
महोदय,
निवेदन है की साप्ताहिक पत्र रोजगार समाचार दिनांक 21/11/88 के विज्ञापन के अनुसार लिपिक पद हेतु आवेदन पत्र प्रेषित हैं |

नाम : शशांक शर्मा
पिता का नाम : श्री वि, के , शर्मा
जन्म तिथि :23-02-1987

शैक्षणिक योग्यता:

कक्षा	विद्यालय	बोड	उतीर्ण	प्राप्तांक	विषय
10TH	रा.स.सही.उ.	सी.बी.एस.इ	2001	305/500	हिन्दी, गणित, अंग्रेजी
12TH	सी.बी.एस.इ	सी.बी.एस.इ.	2003	295/500	हिन्दी, गणित, अंग्रेजी

विशेष:

1. मुझे टंकण में विशेष कुशलता प्राप्त हैं
2. प्रकाशन विभाग में कार्य करने का लगभाग दस माह का अनुभव प्राप्त है.जिसे में संलग्न कर रहा हूँ |

अतः अपेक्षा करता हूँ कि साक्षत्कार हेतु अवसर प्रदान करेंगे |
सधन्यवाद
भवदीय
शशांक शर्मा
दिनांक :- 18/11/20

1. कक्षा दस का प्रमाण पत्र
2. कक्षा बारह का प्रमाण पत्र
3. अनुभव प्रमाण पत्र
4. चरित्र प्रमाण पत्र

संपादक को पत्र

प्रश्न – किसी प्रख्यात समाचार पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखाकर रेल आरक्षण व्यवस्था में हुए सुधार की प्रशंसा कीजिए |

उत्तर-

संपादक,
नवभारत टाइम्स
नई दिल्ली
दिनांक .....

विषय : रेल आरक्षण की नई व्यवस्था
महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र के माध्यम से रेल आरक्षण में आए सुधार की प्रशंसा करना चाहता हूँ ताकि इसका लाभ सभी यात्री उठा सकें |

रेलवे ने ई-टिकटिंग व्यवस्था लागु कर घर बैठे कंप्यूटर पर रेल टिकटों का आरक्षण करना आरम्भ कर दिया है इससे आरक्षण कार्यलय जाने और लम्बी लाइनों के झंझट से राहत मिला हैं, तथा काला बाजारी को भी विराम मिलेगा |

धन्यवाद सहित |
भवदीय
अभय सिंह
संयोजक, साहिबाबाद|

अनौपचारिक पत्र

प्रश्न – छात्रावास में रहने वाले छोटे भाई को एक पत्र लिखिए जिसमे योग एवं प्राणायाम का महत्व बताया गया हो |

ए-32//6 , नविन नगर,
दिल्ली |

दिनांक .....

प्रिय अनुज,
शुभ आशीर्वाद |

तुम्हारा पत्र मिला | पत्र से प्रतीत होता ही छात्रवास में रहकर तुम कुछ अस्वस्थ से रहने लगे हो | इसका उपाय यह है कि तुम प्रतिदिन योग और प्राणायाम का अभ्यास करो | योग से शरीर और मन दोनो स्वस्थ रहते हैं प्राणायाम प्राणवायु को सुचारू रूप से पूरे शरीर में संचारित करता है | तुम टी.वी पर बाबा रामदेव का योग कार्यक्रम देखकर इस क्रिया को प्रात: 5-6 बजे के समय में किया करो जिससे तुम्हारा स्वस्थ अच्छ रहेगा और तुम इसे अपने जीवन का दैनिक हिस्सा बनालो |
मैं आशा करता हूँ कि तुम पूर्णत: स्वस्थ हो जाओगे |

तुम्हारा शुभ चिन्तक
रमेश वर्मा

स्ववृत्त लेखन

स्ववृत्त लेखन का तात्पर्य है-स्वयं अपने बारे में संक्षिप्त रूप से आवश्यक सूचना प्रदान करना। स्ववृत्त व्यक्ति की विशेषता का परिचायक होता है। यह एक बना बनाया प्रारूप होता है, जिसे विज्ञापन के प्रत्युत्तर में आवेदन पत्र के साथ भेजा जाता है। इसमें व्यक्तिगत विवरण देने के साथ-साथ शैक्षणिक योग्यता, अनुभव, प्रशिक्षण, उपलब्धियाँ, कार्येतर गतिविधियाँ आदि का भी उल्लेख होना ज़रूरी है। स्ववृत्त का आकार अति संक्षिप्त अथवा जरूरत से ज्यादा लंबा नहीं होना चाहिए। अंग्रेज़ी में इसे Bio-data या Resume करते हैं स्ववृत्त सुंदर और आकर्षक होना चाहिए। भाषा सरल-सीधी, सटीक और साफ होनी चाहिए ताकि एक नज़र में सारी बातें स्पष्ट हो जाएँ।

स्ववृत्त में दो पक्ष होते हैं-

●पहला पक्ष वह व्यक्ति है जिसको केन्द्र में रहकर सूचनाएँ संकलित की जाती है।

●दूसरा पक्ष नियोजन का है।

स्ववृत्त में ईमानदारी व सत्यनिष्ठा होनी चाहिए। किसी भी प्रकार की झूठे दावे या अतिशयोक्ति से बचना चाहिए। अपने व्यक्तित्व, ज्ञान और अनुभव के सबल पहलुओं पर ज़ोर देना चाहिए। स्ववृत्त का आकार अति संक्षिप्त अथवा जरूरत से ज्यादा लंबा नहीं होना चाहिए। स्ववृत्त साफ-सुथरे ढंग से टंकित या कंप्यूटर मुद्रित अथवा सुंदर लेखन में होना चाहिए। स्ववृत्त में सूचनाओं को अनुशासित क्रम में लिखना चाहिए तथा व्यक्तिगत परिचय, शैक्षणिक योग्यता, अनुभव, प्रशिक्षण, उपलब्धियाँ, कार्येतर गतिविधियाँ इत्यादि विस्तृत ब्योरा होना चाहिए।

व्यक्तिगत **सूचनाएँ**

नाम : - साहिल राज

पिता का नाम:- बिरजू प्रसाद

माता का नाम: -

जन्म तिथि:- गीता देवी

पता:-

25 अगस्त 1985

बी-34,गोपाल पुरी,अलीगंज लखनऊ 226002

मोबाइल नंबर:- 5554443331

ई-मेल:- 24कखग@gmail.com

शैक्षणिक योग्यता:-

क्रम संख्या	परीक्षा का नाम	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड का नाम	परीक्षा के विषय	श्रेणी	प्रतिशत/ अंक
01	दसवीं	2000	केन्द्रीय विद्यालय	हिन्दी,अंग्रेजी,गणित,विज्ञान, सामाजिक विज्ञान	प्रथम	94%
02	बारहवीं	2002	केन्द्रीय विद्यालय	हिन्दी,अंग्रेजी,गणित,भौतिक विज्ञान,रसायन विज्ञान	प्रथम	93%
03	बी एस सी	2006	दिल्ली विश्वविद्यालय	गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान	प्रथम	89%

अन्य संबंधित योग्यताएँ:-

1-कम्प्यूटर का अच्छा ज्ञान एवं अभ्यास

2-हिन्दी एवं अंग्रेज़ी के साथ जर्मन भाषा का कार्य साधक ज्ञान

उपलब्धियाँ:-

1-अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान (वर्ष-2001)

2- विश्वविद्यालय क्रिकेट टीम का कप्तान (वर्ष-2003-04)

कार्येतर गतिविधियाँ और अभिरूचियाँ :-

1- आर्थिक गतिविधियों से जुड़ी पत्र-पत्रिकाओं एवं अखबारों का नियमित पठन
2- फुटबॉल देखना एवं क्रिकेट खेलना

प्रतिष्ठित व्यक्तियों का संदर्भ:-

1-श्री रामनाथ प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष दिल्ली विश्वविद्यालय

3- श्री सुशील वर्मा प्रोफेसर एवं मुख्य नियंता, दिल्ली विश्वविद्यालय

उद्घोषणा

मैं यह लिखित घोषणा करता हूँ कि मेरे द्वारा प्रदत्त उपरोक्त सभी सूचनाएँ मेरे ज्ञान और विश्वास के आधार पर सत्य और पूर्ण है।

तिथि: 23 अगस्त 2020

स्थान: अलीगंज हस्ताक्षर:_____

ई-मेल लेखन

आज कम्प्यूटर के दौर में ईमेल के द्वारा ऑनलाइन पत्र भेजे जाते हैं। ऑनलाइन भेजे जाने वाले पत्र पलक झपकते ही अपने गंतव्य तक पहुँच जाते हैं। इस प्रकार पत्र को इंटरनेट की सहायता से ईमेल के द्वारा। प्रेषिती (प्राप्तकर्ता) तक पहुँचाना 'ऑनलाइन पत्र' या 'ई-पत्र' कहलाता है। ई-मेल दो शब्दों से मिलकर बना है, 'ई' + 'मेल', ई से अभिप्राय है- इलेक्ट्रॉनिक जबकि मेल का हिंदी पर्याय है- डाक। इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्युत के वेग समान भेजे जाने वाले डाक, इलेक्ट्रॉनिक मेल अथवा ई-मेल कहलाती है।

ई-मेल की आवश्यकता

●आज जीवन में प्रतिदिन के कार्यों में व एक दूसरे से संपर्क स्थापित करने हेतु ई मेल की आवश्यकता होती है।

●कंपनी के उत्पादनकर्ता का ग्राहकों अथवा उपभोक्ताओं के साथ संबंध स्थापित करने के लिए ईमेल की आवश्यकता होती है। उपभोक्ता शीघ्र ही कंपनी को उत्पाद से संबंधित समस्याओं से अवगत करा सकता है तथा अपने सुझाव भी दे सकता है।

● जानकारी अथवा संदेश को किसी भी व्यक्ति तक अति शीघ्र पहुंचाने के लिए ई-मेल की आवश्यकता होती है।

● ई-मेल एक सुविधाजनक संचार पद्धति है। इसके माध्यम से बिना किसी असुविधा के दुनिया के किसी भी कोने में बैठ व्यक्ति, सगे-संबंधियों से संपर्क स्थापित करने के लिए ई-मेल की आवश्यकता होती है।

● ई-मेल का प्रयोग वैयक्तिक अथवा निजी प्रयोग हेतु किया जाता है तथा व्यापार एवं कार्यालय के प्रयोग हेतु अपनी शिकायत, समस्या, उत्पाद खरीदने आदि के लिए भी किया जाता है। इस प्रकार ई-मेल के दो प्रकार होते हैं-

1- औपचारिक ई-मेल (Formal E-mail)

2- अनौपचारिक ई-मेल (Information E-mail)

1-ध्वनि प्रदूषण की समस्या से अवगत कराते हुए ई मेल लिखिए।

From:	prachi 12@gmail.com
To:	ramesh 240@ gmail.com
CC:	xyz123@gmail.com
BCC:	abc456@gmail.com
Subject:	ध्वनि प्रदूषण पर रोक लगाने हेतु।

To: Ramesh290@gmail.com

Subject: ध्वनि प्रदूषण पर रोक लगाने हेतु।

Insert: Attachments Office docs Photos From Bing Emoticons

Tahoma 10 B I U

सेवा में,

नगर योजना अधिकारी,

संत नगर,

दिल्ली।

महोदय,

आजकल हमारे नगर में उद्योगों के बढ़ने के कारण जनसंख्या लगातार बढ़ रही है। कल-कारखानों एवं यातायात का दबाव भी यहाँ अधिक है। सारा दिन कारखानों की आवाजों, ट्रक के भोंपुओं (हॉर्न) की आवाजों आदि के कारण अत्यन्त असुविधा होती है जिसके कारण ध्वनि प्रदूषण होता है साथ ही लोगों का यहाँ रहना दूभर हो गया है।

आपसे प्रार्थना है कि कृपया हमारे क्षेत्र में बढ़ रहे ध्वनि प्रदूषण पर नियंत्रण करने की व्यवस्था करें।

धन्यवाद।

प्रार्थी

Send Discard

To: ShriRam@gmail.com

Subject: आवश्यक कार्य हेतु अवकाश लेने के संबंध में।

Insert: Attachments Office docs Photos From Bing Emoticons

Tahoma 10 B I U

सेवा में,

निदेशक महोदय,

श्रीराम फर्टीलाइजर्स,

काला आम, आगरा रोड,

बुलंदशहर।

महोदय,

सादर निवेदन इस प्रकार है कि आज शाम को कुछ मेहमान हमारे घर आ रहे हैं। मेहमानों ने मेरे साथ कल दिल्ली घूमने की इच्छा जताई है। चूँकि वे लोग पहली बार घर आ रहे हैं, इसलिए मैं उन्हें इनकार नहीं कर सकता। अत: आपसे निवेदन है कि आप मुझे कल अर्थात् 11 अप्रैल, 20XX का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद।

भवदीय,

राजेन्द्र शर्मा

Send Discard

विज्ञापन लेखन

मूलभूत स्मरणीय तथ्य

वर्तमान युग में जब से पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो, टेलीविजन आदि जनसंचार के माध्यमों का विकास हुआ है तब से लिखित एवं मौखिक विज्ञापन की एक नई विधा का आविर्भाव हुआ। प्राचीन काल में जो कार्य डंका / डुगडुगी/ छिंढोरा पिटवाकर किया जाता था वही कार्य । आज विज्ञापन कर रहा है। अतः जनसंपर्क और प्रचार के क्षेत्र में विज्ञापन का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। वर्तमान में सिर्फ वाणिज्य अथवा व्यापार में ही नहीं अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञापन का महत्त्व स्वीकारा जा रहा है' विज्ञापन लिखते समय विज्ञापन | के चार महत्त्वपूर्ण अंगों पर विचार किया जाता है।

• **विज्ञापन का शीर्षक**: विज्ञापन का प्रमुख भाग शीर्षक है। विज्ञापन सामग्री तैयार करते समय आलेखक विज्ञापन का प्रारूप तैयार करता है। ग्राहकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए, उपभोक्ता को आकर्षित करने वाला शीर्षक दिया जाता है।

• **विषय-वस्तुः** उत्पादन के विषय में विवरण प्रस्तुत करना विज्ञापन की विषय-वस्तु या मूल कथ्य कहलाता है। इसमें विज्ञापित वस्तु की विशेषताओं, अभिलक्षणों का उल्लेख होता है।

• **उप-शीर्षक**: उपशीर्षक लेखन में विज्ञापन का उद्देश्य कुछ विस्तार के साथ दिया जाता है। मानव की आवश्यकता के साथ उत्पादन का मेल दिखाया जाता है। इसे शीर्षक के ऊपर भी कुछ शब्दों में लिखा जा सकता है।

• **उपसंहारः** रोचक, आकर्षक और संक्षिप्त रूप से एक-दो वाक्यों में लिखा जाता है जो ग्राहक को उत्पाद खरीदने के लिए प्रेरित करता है।

• विज्ञापन लेखन के महत्त्वपूर्ण तथ्यः

(1) भाषा सरल तथा बोधगम्य होनी चाहिए।

(2) विज्ञापन जिस वर्ग के लिए है, उसी वर्ग के अनुरूप भाषा का प्रयोग हो।

(3) विज्ञापन लेखन उपभोक्ता की रुचि के अनुकूल होना चाहिए न कि कंपनी के अनुकूल ।

(4) विज्ञापन उत्पाद के बारे में केवल उत्सुकता ही नहीं बल्कि उपभोक्ता को आश्वस्त करे कि वह उसके लिए लाभदायक है। इस प्रकार विज्ञापन लेखन आज एक महत्त्वपूर्ण विधा है। विज्ञापन शिक्षण के कार्यक्रमों में अनेक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ कार्य कर रही हैं।

• विज्ञापन लेखन के महत्त्वपूर्ण बिंदु

(1) विज्ञापन में लिखित सामग्री को पढ़ने से पाठक में उस उत्पादन विशेष को खरीदने के लिए रुचि उत्पन्न होनी चाहिए।

(2) विज्ञापन लेखन के समय इस बात का भी उल्लेख होना चाहिए कि उपभोक्ता या ग्राहक वह उत्पाद कहाँ से खरीदे।

(3) यदि विज्ञापन से उपभोक्ता को संतुष्टि की गारंटी मिल जाती है तो उत्पादन की खरीद में सुगमता होती ह

तथ्यात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. विज्ञापन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: विज्ञापन से अभिप्राय किसी भी उत्पाद, विचार या सेवा को बेचने या प्रचारित-प्रसारित करने में प्रयुक्त मुद्रित अथवा मौखिक साधनों/माध्यमों से है।किसी भी वस्तु, सेवा या विचार का प्रचार-प्रसार करना या बेचना एक कला की श्रेणी में आता है। इस दृष्टिकोण से विज्ञापन एक कला की श्रेणी में आता है। विज्ञापन जनता को सूचित करने, संदेश देने अथवा शिक्षित करने का एक सशक्त माध्यम है।

प्रश्न 2. विज्ञापन कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर: सामान्यतः विज्ञापन दो प्रकार के होते हैं- (i) सम्मानक विज्ञापन तथा (ii) संस्थागत विज्ञापन।

क्रियात्मक प्रश्न

प्रश्न 3. अतिवृष्टि के कारण कुछ शहर बाढ़ ग्रस्त हैं। वहाँ के निवासियों की सहायतार्थ सामग्री एकत्र करने हेतु एक विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए।

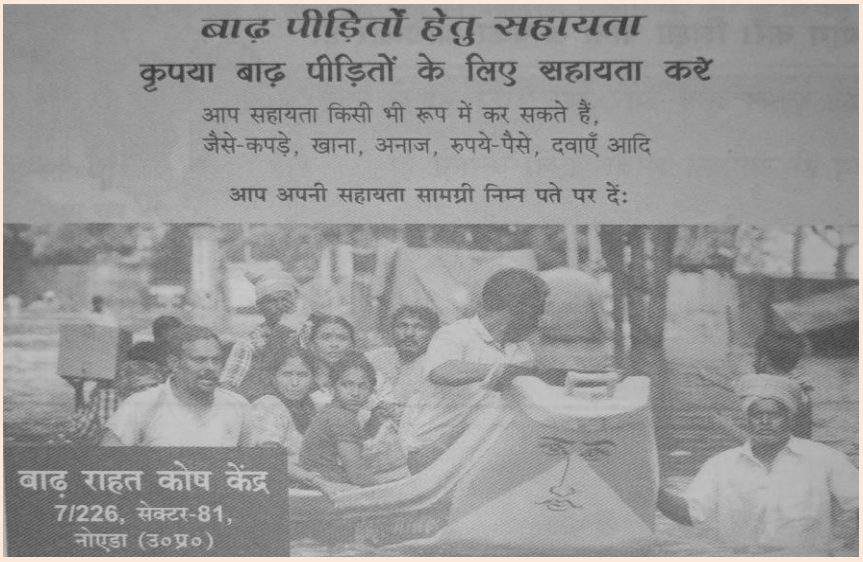

प्रश्न 4. बॉल पेनों की एक कंपनी 'सफल' नाम से बाजार में आई है। उसके लिए एक विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में तैयार कीजिए।

प्रश्न 18. 'शिक्षा का अधिकार' के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में इस अधिकार का लाभ उठाने के लिए एक विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में तैयार कीजिए।

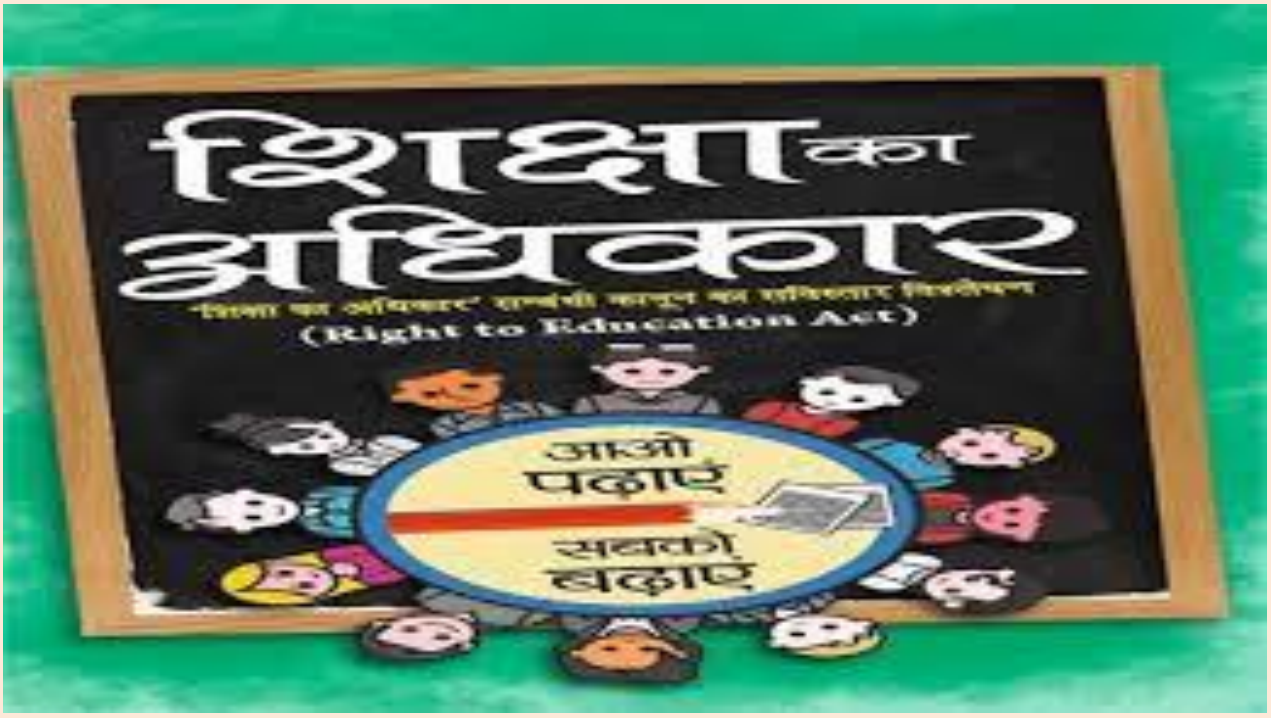

संदेश लेखन

मूलभूत स्मरणीय तथ्य

• संदेश शब्द की उत्पत्ति संस्कृत से मानी गई है, जिसका अर्थ है खबर या समाचार प्राप्त करना।

परिभाषा: एक मनुष्य द्वारा किसी दूसरे मनुष्य समूह के लिए विभिन्न परिस्थितियों में कहे गए वाक्यों को संदेश कहते हैं। संदेश का शाब्दिक अर्थ कथन भी होता है।

• संदेश के प्रकार

संदेश कई प्रकार के होते हैं; जैसे-

- **व्यक्तिगत संदेश:** (i) बधाई संदेश, (ii) कहीं आने-जाने का संदेश या किसी भी अन्य तरह का संदेश जो सिर्फ परिजनों को दिया जाता है।
- **धन्यवाद संदेश**
- **शोक संदेश**
- **शुभकामना संदेश**
- **पर्व त्योहारों एवं विशेष अवसरों पर दिया जाना वाला संदेश इत्यादि।**

• संदेश किसी व्यक्ति विशेष या किसी समूह द्वारा किसी व्यक्ति विशेष या समूह को दिए जा सकते हैं।

• संदेश लिखित या मौखिक दोनों हो सकते हैं। यह सुखद भी हो सकता है और दुखद भी संदेश भूतकाल, वर्तमान काल तथा भविष्य काल में भी लिखे जा सकते हैं।

• **संदेश लिखने का कारण:** संदेश लिखने के कई कारण हो सकते हैं। संदेश औपचारिक / अनौपचारिक दोनों तरह के हो सकते हैं। अनौपचारिक संदेश किसी अपने करीबी को लिखा जाता है जबकि औपचारिक संदेश किसी कार्यालय या आमजन के लिए सार्वजनिक में लिखे जा सकते हैं।

• **संदेश लेखन के प्रकार:** संदेश निम्न प्रकार के हो सकते हैं।

1. शुभकामना संदेश,
2. पर्व एवं त्यौहार पर संदेश,
3. शोक संदेश,
4. व्यक्तिगत संदेश,
5. सामाजिक संदेश,
6. मिश्रित संदेश,
7. बधाई संदेश।

संदेश लेखन के आवश्यक तत्त्व / ध्यान देने वाली बातें:

1. संदेश लेखन हमेशा सीमाबद्ध होना चाहिए जैसे बॉक्स या गोले के अंदर।
2. प्रारंभ में बड़े अक्षरों में संदेश शब्द अवश्य लिखें।
3. मुख्य विषय में कम लेकिन प्रभावी शब्दों का समावेश करें।
4. संदेश लेखन दिए गए शब्द सीमा के भीतर ही होना चाहिए।
5. चित्रों का प्रयोग विषयानुसार करें।

6. शायरी, दोहा, श्लोक या काव्य पंक्तियों का प्रयोग यथास्थान करें।
7. संदेश में रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता होनी चाहिए।
8. संदेश में इधर-उधर की बातों का समावेश नहीं करें।
9. दिए गए विषय पर अपना ध्यान रखें।
10. अंत में संदेश लिखने वाले का नाम अवश्य लिखें।

संदेश-लेखन के कुछ उदाहरण

प्रश्न1.आप अपने क्षेत्रवासियों की ओर से नवनिर्वाचित विधायक को बधाई दीजिए।

उत्तर:

हम सब शालीमार बाग विधानसभावासी नवनिर्वाचित विधायक श्री/श्रीमती..... को हृदय से बधाई देते है। हम आशा करते है कि आप हमारे विश्वास को बनाए रखेंगे। आपकी जीत हमारी जीत है। लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने में आप सब का अमूल्य योगदान है अतः सभी मर्यादाओं को ध्यान में रखकर क्षेत्र के हित में आवश्यक कदम उठाएंगे ऐसा हम सबका विश्वास है।

पुनः आपको बधाई।

निवेदक

प्रश्न 2. कोरोना महामारी में प्रधानमंत्री का देशवासियों के लिए संदेश लिखिए।

उत्तर:

कोरोना महामारी में प्रधानमंत्री का संदेश

मेरे प्यारे देशवासियों, इस कोरोना महामारी में आप सभी लोगों ने सतर्कता, धैर्य और साहस का परिचय देते हुए इस कठिन समय में जो सहयोग दिया है, उसके लिए मैं सभी को हृदय से धन्यवाद देता हूँ। आप सबके सहयोग से हम इस महामारी से अवश्य जीतेंगे। आप अपना विशेष ध्यान रखें साथ ही सतर्कता बरतें, घर पर रहें और सुरक्षित रहें।

नरेंद्र मोदी

प्रश्न 3. स्वतंत्रता दिवस पर देशवासियों के लिए शुभकामना संदेश लिखिए।

उत्तर:

स्वतंत्रता दिवस पर देश को शुभकामना संदेश

सभी देशवासियों को 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। स्वतंत्रता के लिए हमें अनेक कुर्बानियों देनी पड़ी और लंबा संघर्ष करना पड़ा है। इस लड़ाई में हम सब हर धर्म, जाति, रंग और नस्ल के लोगों ने भाग लिया। आओ हम इसी एकता को कायम रखते हुए आज भी आगे बढ़ने का संकल्प करते हैं। उज्ज्वल भविष्य के लिए सामाजिक एकता और समरसता अति आवश्यक है। जय हिंद

क. ख. ग

प्रश्न 4. आप अपने क्षेत्र के विधायक हैं। अपने क्षेत्रवासियों को होली का बधाई संदेश दीजिए।

उत्तर:

समस्त क्षेत्रवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

होली आपसी सौहार्द प्रेम एवं भाइचारे का त्योहार है आओ आज हम सभी आपसी सौहार्द प्रेम एवं भाइचारे की मिसाल पेश करते हुए। | एक-दूसरे को गले लगाएँ और पिछड़ते समाज को विकास के मार्ग पर अग्रसर करें।

विधायक

प्रश्न 5. आप अपने नवनिर्वाचित सांसद को बधाई संदेश लिखिए।

उत्तर:

हमारे नवनिर्वाचित सांसद श्री/श्रीमती.....को हार्दिक बधाई। ऊपरी सदन में आपको उपस्थिति से हमारे क्षेत्र एवं देश के कल्याणकारी मुद्र को बल मिलेगा। विकास और जनकल्याण का मार्ग सुगम होगा। आपके राजनीतिक अनुभव और ज्ञान का लाभ हमारे क्षेत्र को प्राप्त होगा। आपकी जीत से हमारे क्षेत्र की नव निर्माण की राह खुलेगी। स

धन्यवाद

समस्त क्षेत्रवासी

प्रश्न 6.
आप
अपनी छोटी बहन के जन्मदिवस पर उसे एक बधाई संदेश लिखिए।

उत्तर:

मेरी प्यारी बहन, मैं तुम्हें जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ कि तुमहारा यह विशेष दिन बार-बार आए और अच्छी-अच्छी यादों | से भरा रहे। जीवन छोटा है इस ढंग से जीओ और कर्म को प्यार दुर्लभ सबसे प्यार से रहो। मीठी यादों को दिल में बसाए रखो और जीवन में निरंतर आगे बढ़ते रहो।

तुम्हारा

अ०ब०स०

प्रश्न 7. 'शिक्षक दिवस' के अवसर पर अपने हिंदी शिक्षक के लिए एक भावपूर्ण संदेश लिखिए।

उत्तर:

जो बनाए हमें इसान और दे सही-गलत की पहचान, देश के उन समस्त निर्माताओं को हम करते हैं शत-शत प्रणाम आप मेरे लिए, सिर्फ एक शिक्षक नहीं अपितु आप मेरे लिए प्रेरणा है। आपने मुझे हर अच्छे कर्मों को करने, दृढ निश्चय बनाए रखने और हिंदी भाषा में सर्वोच्च होने के लिए प्रेरित किया। मुझे आपने गुरु माता-पिता, मित्र सब दिखाई देता है।

इस शिक्षक दिवस पर आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

प्रश्न 8. शिक्षक दिवस के अवसर पर अपने गुरुजनों के लिए एक भावपूर्ण संदेश लिखिए।

उत्तर:

गुरु बिना ज्ञान कहाँ

शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर आप सभी गुरुजनों को हृदय से हार्दिक बधाई। आप सबने मुझे हमेशा अपना सर्वोत्तम देने के लिए प्रेरित किया। आप सबके मार्गदर्शन में ही मैं अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर हैं। पुनः एक बार आपको दिल से बधाई।

प्रश्न 9. अपने मित्र को जन्मदिन पर एक बधाई संदेश लिखिए।

उत्तरः

प्रिय मित्र.....आपको जन्मदिन की हार्दिक बधाई। आप अपने जीवन का पूर्ण आनंद लें और अपने सपनों का पीछा करना कभी न छोड़े। आप अत्यंत बड़े दिलवाले व्यक्ति है अतः आपका खुश रहना आपका अधिकार है। पुनः आपको बधाई।

अपठित गद्यांश

अपठित गद्यांश का अर्थ

•'अपठित' का अर्थ होता है जो कभी पढ़ा न गया हो।

•साहित्यकार द्वारा साधारण बोलचाल की भाषा में अपने विचारों को लेखनीबद्ध किया जाता है। पत्र, निबंध, कहानी, नाटक, जीवनी आदि इसी के अंतर्गत आते हैं। इनसे लिया अंश गद्यांश कहलाता है। अतः गद्यांश का मतलब है- कहानी, नाटक, जीवनी आदि से लिया गया अंश। इस तरह अपठित गद्यांश गद्य का वह अंश होता है जिसे विद्यार्थियों ने पहले नहीं पढ़ा होता है। यह अंश निर्धारित पाठ्यक्रम से अलग होता है।

•अपठित गद्यांश को हल करते समय ध्यान रखने वाली बातें-

• प्रश्नपत्र में दिए गए गद्यांश को भली प्रकार पढ़कर, उसका मूलभाव समझने का प्रयास किया जाना चाहिए।

•प्रश्न से संबंधित विकल्पों को ध्यानपूर्वक पढ़कर ही उचित विकल्प का चयन करना चाहिए।

•गद्यांश में आए हुए कठिन शब्दों, उपसर्ग-प्रत्यय से बने हुए शब्दों, सामासिक पदों आदि को रेखांकित कर लेना चाहिए।

•शीर्षक का चयन करते समय गद्यांश के केन्द्रीय भाव को ध्यान में रखना चाहिए।

• शीर्षक संक्षिप्त, आकर्षक तथा सार्थक होना चाहिए।

गद्यांश

आधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक वैज्ञानिक उपलब्धियों के शौर प्राचीन और पारंपरिक ज्ञान-पद्धतियों को लगभग भुला दिया गया है। उनमें से कुछेक की याद तब आती है, जब कोई बड़ा वैज्ञानिक तथ्य किसी लोक-परम्परा से जा जुड़ता है। हमारे देश में अब भी अनेक स्थानों पर प्राचीन ज्ञान- परम्पराएं विद्यमान हैं, जिन्हें लोक ने सहेज रखा है। भारत में कई ऐसे गाँव हैं, जहाँ हजारों वर्षों तक ज्ञान परम्पराएँ फलती-फूलती रही हैं। आज भी उन्हें ज्ञान परंपरा होने की मान्यता तक प्राप्त नहीं है। लेकिन अगर आप उस समाज के अवचेतन में गहरे उतरने की क्षमता रखते हैं, तो यह समझने में देर नहीं लगेगी कि ज्ञान परम्पराएँ मरती नहीं हैं। कालक्रम में उन पर धूल की परतें जरूर जम जाती हैं और उनका स्थानांतरण चेतन से अवचेतन में हो जाता है। वहाँ के लोग उन ज्ञान-परम्पराओं से जुड़े होते हैं। उनके दैनिक जीवन, पर्व-त्योहार और शादी-ब्याह के विधि-विधानों, रीति-रिवाजों में उन ज्ञान परम्पराओं की उपलब्धि मिल जाएगी।

बिहार के मिथिला में ऐसे कई गाँव हैं, जहाँ न्याय और मीमांसा की परम्पराएँ अब भी जीवित हैं। इनकी शास्त्रीय परम्पराएँ तो फलती-फूलती रहीं लेकिन लौकिक परम्पराओं का कोई सटीक अध्ययन नहीं

हुआ। फिर भी लौकिक परम्पराओं के अध्ययन से लगता है कि यह पूरी जीवन प्रणाली थी। मिथिला क्षेत्र के कई गाँवों में न्याय और मीमांसा के बड़े विद्वान हुए हैं। शायद उनका होना ही इस बात का प्रमाण है कि इन गाँवों के अवचेतन में इन परम्पराओं का वास होगा। जान-परंपरा से जुड़ी एक ऐसी जगह है, पटना के पास खगौल शहर के निकट का एक गाँव तारेगना। पाँचव शताब्दी में इस जगह का नाम कुसुमपुर से खगौल उस समय हो गया, जब आर्यभट्ट ने इसे अपना कार्यक्षेत्र बनाया। जिस गाँव में रहकर आर्यभट्ट ने आकाश में ग्रह-नक्षत्र और तारों की स्थिति का अध्ययन किया था, उसका नाम तरेगना पड़ गया। एकाएक जुलाई 2009 में तारेगना के बारे में दुनिया को तब पता चला, जब नासा ने घोषणा की कि इस जगह से उस बार के पूर्ण सूर्यग्रहण को देखना संभव हो पाएगा। ख़ास बात है कि आज भी खगौल में आर्यभट्ट का जन्म दिन मनाने की परंपरा है और उनसे जुड़ी अनेक कहानियाँ हैं।

(क) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए।

कथन (A) : समाज के अवचेतन मन में ज्ञान परम्पराएँ आज भी उपस्थित हैं।

कारण (R): भारत में ऐसे भी कई गाँव हैं जहाँ आज भी दैनिक जीवन, पर्व-त्योहार, रीति-रिवाजों के अवसर पर जान परम्पराओं को देखा जा सकता है।

(i) कथन (A) गलत है, किन्तु कारण (R) सही है।
(ii) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।
(iii) कथन (A) सही है और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(iv) कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है

(ख) न्याय और मीमांसा की परम्पराएँ अब भी जीवित हैं इस तथ्य की पुष्टि के लिए लेखक ने कहाँ का उदाहरण दिया है ?

(i) बिहार का

(ii) अजमेर का

(iii) राजस्थान का

(iv) दिल्ली का

(ग) तारेगना क्यों प्रसिद्ध है? कथन के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए-

(1) उसे आर्यभट्ट ने अपना कार्यक्षेत्र बनाया था।

(2) आर्यभट्ट ने यहाँ तारों व यह-नक्षत्रों का अध्ययन किया था।

(3) वह पटना के पास है।

(4) वहाँ से खगोल घटनाओं का अध्ययन किया जा सकता है।

विकल्पः (i) कथन 1 सही है।

(ii) कथन 1, 2 व 3 सही हैं।

(iii) कथन 1 व 2 सही हैं।

(iv) कथन 4 सही है।

(घ) लोगों द्वारा सहेजकर रखी गई पारंपरिक ज्ञान-पद्धतियों की ओर ध्यान कब आकर्षित होता है?

(i) जब वे साकार होती हैं।

(ii) जब कोई बड़ा वैज्ञानिक तथ्य किसी लोक परंपरा से जुड़ता है।

(iii) जब लोग उसे सहेजकर रखते हैं।

(iv) जब वह लुप्त हो जाती है।

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक चुनिए-

(i) वैज्ञानिक तथ्य

(i) लुप्त होती ज्ञान परम्पराएँ

(iii) परंपरा

(iv) तारेगन
उत्तर :

(क):-(iii) कथन (A) सही है और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।

व्याख्यात्मक हल :- भारत में कई ऐसे गाँव हैं, जहाँ हजारों वर्षों तक ज्ञान-परम्पराएँ फलती-फूलती रही हैं और उस समाज के अवचेतन में आज भी ज्ञान परम्पराएँ मरी नहीं हैं। कालक्रम में उन पर धूल की परतें जरूर जम गई हैं पर वहाँ के लोगों के दैनिक जीवन, पर्व-त्योहार और शादी-ब्याह के विधि-विधानों, रीति-रिवाजों में उन ज्ञान- परम्पराओं की उपस्थिति आज भी मिल जाएगी।

(ख) (i) बिहार का।

व्याख्यात्मक हल:- न्याय और मीमांसा की परम्पराएँ अब भी जीवित हैं- इस तथ्य की पुष्टि के लिए लेखक ने ये तर्क दिए हैं कि बिहार के मिथिला में कई गाँवों में न्याय और मीमांसा की परम्पराएँ अब भी जीवित हैं।

(ग) (iii) कथन 1 व 2 सही हैं।

व्याख्यात्मक हल:- पटना के पास खगौल शहर को पाँचवीं शताब्दी में आर्यभट्ट ने अपना कार्यक्षेत्र बनाया। जिस गाँव में रहकर आर्यभट्ट ने आकाश में ग्रह-नक्षत्र और तारों की स्थिति का अध्ययन किया था, उसका नाम तारेगना पड़ गया।

(ङ) (ii) लुप्त होती ज्ञान परम्पराएँ।

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्नों के उचित विकल्प चुनिए :-

मौसम में बदलाव व भीषण बीमारियों के फैलने से चिंतित होकर वैज्ञानिकों ने खोज की तो उन्होंने प्रदूषण को इसका एकमात्र कारण पाया। यह समस्या विश्व व्यापी है। कल-कारखानों, बढ़ते वाहनों की संख्या, पेड़-पौधों की अन्धाधुन्ध कटाई और विकास के नाम पर प्रकृति से छेड़छाड़ के कारण, प्रदूषण की समस्या विकराल हो गई है। अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय प्रदूषण को रोकने के लिए प्रयासरत है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि सारे काल-कारखाने बन्द कर दिए जाएँ या सभी वाहनों को रोक दिया जाए और हम पुनः पाषाण काल में लौट जाएँ और विज्ञान की प्रगति को ताक पर रख दें। समस्या का हल विकास को रोकने में नहीं बल्कि युक्तिसंगत उपाय खोजने में है। प्रकृति से तालमेल बनाकर धरा को हरा-भरा रखें, प्रकृति के भण्डार का समुचित उपयोग करें और पर्यावरण का संरक्षण करें। पर्यावरण हमारा पालनकर्त्ता और जीवन है। पेड़-पौधे और पशु-पक्षी हमारे सहायक हैं। पार्क, बाग-बगीचे शहर के हृदय स्वरूप हैं। प्रदूषण रोकने में सभी लोगों के सहयोग की आवश्यकता है। गन्दगी न फैलाएँ, जहाँ गन्दगी हो, वहाँ साफ-सफाई करें, अधिकाधिक वृक्ष लगाएँ और अनभिज्ञ लोगों को जागरूक करें। हमारे सामूहिक प्रयास से ही समस्या सुलझ सकती है।

(क) वैज्ञानिकों की चिंता के कारण हैं-कथन पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए-

(1) मौसम में परिवर्तन।

(2) भीषण बीमारियों का फैलना।

(3) प्रदूषण का बढ़ना।

(4) विकास होना।

विकल्प: (i) कथन 1 सही है

(ii) कथन 1 व 4 सही हैं

(iii) कथन 1, 2 व 3 सही हैं

(iv) कथन 4 सही है

(ख) प्रदूषण के बढ़ने का कारण, आप क्या मानते हैं?

(i) बढ़ते वाहनों की संख्या

(ii) पेड़-पौधों की अन्धाधुन्ध कटाई

(iii) बढ़ते कल-कारखाने

(iv) उपर्युक्त सभी

(ग) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए।

कथन (A): प्रदूषण को रोकने के लिए प्रयास करने का यह अर्थ कदापि नहीं है कि हम पाषाण युग में चले जाएँ।

कारण (R) : किसी भी समस्या का हल विकास को रोकने में नहीं बल्कि उसके लिए युक्तिसंगत उपाय खोजने में है।

(i) कथन (A) गलत है, किन्तु कारण (R) सही है।

(ii) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।

(iii) कथन (A) सही है और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।

(iv) कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) सामूहिक प्रयास का क्या आशय है?

(i) एक समूह का प्रयास

(ii) सभी लोगों का सम्मिलित प्रयास

(iii) कुछ समूहों का प्रयास

(iv) इनमें से कोई नहीं

(ङ) अनभिज्ञ' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग और मूल शब्द है-

(i) अ + नभिज्ञ

(ii) अन+भिज्ञ

(iii) अनभि+ज्ञ

(iv) अना+भिज्ञ

उत्तर :---------

(क) (iii) कथन (1), (2) व (3) सही हैं

(ख) (iv) उपर्युक्त सभी

(ग) (iv) कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R), कथन(A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) (ii) सभी लोगों का सम्मिलित प्रयास।

(ङ) (ii) अन+भिज्ञ ।

****
****

अपठित काव्यांश

अपठित काव्यांश का अर्थ

अपठित बोध का अपठित शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द unseen का समानार्थी है इस शब्द की रचना पाठ मूल शब्द में अ उपसर्ग और इत प्रत्यय जोड़कर की गई|इसका शाब्दिक अर्थ है बिना पढ़ा हुआ अर्थात या काव्य का ऐसा अंश जिसे पहले नहीं पढ़ा गया हो अर्थात जो आपके निर्धारित पाठ्यक्रम में न हो|अपठित काव्यांश का उद्देश्य काव्य पंक्तियों का भाव और अर्थ समझना, कठिन शब्दों के अर्थ समझना, प्रतीकार्थ समझना, काव्य सौंदर्य समझना, भाषा-शैली समझना तथा काव्यांश में निहित संदेश। शिक्षा की समझ आदि से संबंधित विद्यार्थियों की योग्यता की जाँच-परख करना है।

अपठित काव्यांश संबंधी प्रश्नों को हल करते समय निम्नलिखित प्रमुख बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए –

•काव्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ना और उसके अर्थ एवं मूलभाव को समझना।

•कठिन शब्दों या अंशों को रेखांकित करना।

•प्रश्न पढ़ना और संभावित उत्तर पर चिह्नित करना।

•प्रश्नों के उत्तर देते समय प्रतीकार्थों पर विशेष ध्यान देना।

•प्रश्नों के उत्तर काव्यांश से ही देना; काव्यांश से बाहर जाकर उत्तर देने का प्रयास न करना।

•उत्तर अपनी भाषा में लिखना, काव्यांश की पंक्तियों को उत्तर के रूप में न उतारना।

•यदि प्रश्न में किसी भाव विशेष का उल्लेख करने वाली पंक्तियाँ पूछी गई हैं तो इसका उत्तर काव्यांश से समुचित भाव व्यक्त करने वाली पंक्तियाँ ही लिखना चाहिए।

•शीर्षक काव्यांश की किसी पंक्ति विशेष पर आधारित न होकर पूरे काव्यांश के भाव पर आधारित होना चाहिए।

•शीर्षक संक्षिप्त आकर्षक एवं अर्थवान होना चाहिए।

•अति लघुत्तरीय और लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर में शब्द सीमा का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

•प्रश्नों का उत्तर लिखने के बाद एक बार दोहरा लेना चाहिए ताकि असावधानी से हुई गलतियों को सुधारा जा सके।

काव्यांश

मैं चला, तुम्हें भी चलना है असिधारों पर

सर काट हथेली पर लेकर बढ़ आओ तो।

इस युग को नूतन स्वर तुमको ही देना है,

अपनी क्षमता को आज जरा आजमाओ तो।

दे रहा चुनौती समय अभी नवयुवको को

मैं किसी तरह मंजिल तक पहले पहुँचूँगा।

इस महाशांति के लिए हवन वेदी पर मैं।

हंसते-हंसते प्राणों की बलि दे जाऊंगा।

तुम बना सकोगे भूतल का इतिहास नया

मैं गिरे हुए लोगों को गले लगाऊँगा।

क्यों ऊँच-नीच, कुल, जाति, रंग का भेद-भाव ?

मैं रूढ़िवाद का कल्मष-महल ढहाऊँगा।

जिनका जीवन वसुधा की रक्षा हेतु बना

मर कर भी सदियों तक यों ही वे जीते हैं।

दुनिया को देते हैं यश की रसधार विमल

खुद हँसते-हँसते कालकूट को पीते हैं।

है अगर तुम्हें यह भूख 'मुझे भी जीना है।'

तो आओ मेरे साथ नीव में गड़ जाओ।

ऊपर इसके निर्मित होगा आनंद-महल

मरते-मरते भी दुनिया में कुछ कर जाओ ॥

(क) कवि युग को नूतन स्वर देने के लिए किसे प्रेरित कर रहा है?

(i) युवा शक्ति को (ii) नेताओं को

(iii) सैनिको को (iv) देशवासियों को

(ख) रूढ़िवाद का कल्पय-महल' से कवि का क्या तात्पर्य है?

(i) रूढ़ियों का महल (ii) पाप रूपी रूढ़ियों का महल

(iii) उपर्युक्त दोनों (iv) उपर्युक्त कोई नहीं

(ग) कवि रूढ़ियों को ढहाने की बात क्यों कर रहा है?

(i) क्योंकि रूढ़ियों को ढहाने से नई स्वस्थ परंपराएँ बनेगी

(ii) नेताओं का खात्मा होगा

(iii) क्योंकि इससे देश को आर्थिक लाभ होगा

(iv) उपर्युक्त सभी

(घ) उपर्युक्त काव्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा ?

(i) रूढ़िवाद का कल्मष महल (ii) नवयुवकों का आह्वान

(iii) रूढ़ि परिवर्तन का नूतन स्वर (iv) कवि का आह्वान

(ङ) देश को नूतन स्वर देने के लिए क्या करना होगा?

(i) नौजवानों को बलिदान देना होगा

(ii) नव-निर्माण के लिए स्वयं को न्यौछावर करना होगा

(iii) उपर्युक्त दोनों

(iv) उपर्युक्त कोई नहीं

उत्तर: (क) (i) युवा शक्ति को

व्याख्या:- कवि यह प्रस्तुत करना चाहते हैं कि परिवर्तन के लिए हमें समाज के भेद भावो से ऊपर उठकर समान भावना जगानी चाहिए। वे कहते हैं कि हमें स्वयं अपने हाथों से अपना नए वर्तमान को आकर देना चाहिए।

उत्तर:(ख) (ii) पाप रूपी रूढ़ियों का महल

व्याख्या:- रूढ़िवाद सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत व्यवहृत एक ऐसी विचारधारा है जो पारंपरिक मान्यताओं का अनुकरण तार्किकता या वैज्ञानिकता के स्थान पर केवल आस्था तथा प्रागनुभवों के आधार पर करती है। कवि का तात्पर्य पाप रूपी मान्यताओं की सोच है|

उत्तर: (ग) (i) क्योंकि रूढ़ियों को ढहाने से नई स्वस्थ परंपराएँ बनेगी

व्याख्या:- कवि रूढ़ियों को ढहाने की बात इसलिए कर रहा क्योंकि रूढ़ियों की ढहाने के बाद नए और अच्चे परंपराएँ बनेगी|

उत्तर:(घ) (ii) नवयुवकों का आह्वान

व्याख्या:- कवि को नवयुवकों से देश की रक्षा करने के लिए हमेशा तैयार की अपेक्षाएँ है,कवि नवयुवकों को देश की रक्षा करने के लिए प्रेरित करते है|

उत्तर: (ङ) (iii) उपर्युक्त दोनों

हम जंग न होने देंगे!

विश्व शांति के हम साधक हैं, जंग न होने देंगे!

कभी न खेतों में फिर खूनी खाद फलेगी,

खलिहानों में नहीं मौत की फसल खिलेगी

आसमान फिर कभी न अंगारे उगलेगा,

एटम बम से नागासाकी फिर नहीं जलेगी,

युद्धविहीन विश्व का सपना भंग न होने देंगे।

जंग न होने देंगे।

हथियारों के ढेरों पर जिनका है डेरा,

मुँह में शांति, बगल में बम, धोखे का फेरा

कफ़न बेचने वालों से कह दो चिल्लाकर

दुनिया जान गई है उनका असली चेहरा

कामयाब हो उनकी चालें, ढंग न होने देंगे।

जंग न होने देंगे।

हमें चाहिए शांति, जिंदगी हमको प्यारी

हमें चाहिए शांति, सृजन की है तैयारी

हमने छेड़ी जंग भूख से, बीमारी से

आगे आकर हाथ बँटाए दुनिया सारी।

हरी-भरी धरती को खूनी रंग न लेने देंगे।

जंग न होने देंगे।

भारत-पाकिस्तान पड़ोसी, साथ-साथ रहना है,

प्यार करें या वार करें, दोनों को ही सहना है,

तीन बार लड़ चुके लड़ाई, कितना महंगा सौदा,

रूसी बम हो या अमेरिकी, खून एक बहना है।

जो हम पर गुजरी बच्चों के संग न होने देंगे।

जंग न होने देंगे।

(क) विश्व शांति के लिए क्या आवश्यक है?

(i) युद्धों को रोकना (ii) परमाणु बम बनाना

(iii) रासायनिक बम बनाना (iv) उपर्युक्त सभी

(ख) कफ़न बेचने वाले का कार्य है:

(i) बमों का निर्माण करना

(ii) अन्य खतरनाक हथियारों का निर्माण करना।

(iii) शांति की लुभावनी बातें करके धोखा देना|

(iv) उपर्युक्त सभी

(ग) कवि विश्व शांति की बात क्यों कर रहा है?

(i) क्योंकि युद्ध ने संसार को वीरान बना दिया है।

(ii) क्योंकि जीवन प्यारा है|

(iii) क्योंकि कवि को सृजन प्यारा है|

(iv) उपर्युक्त सभी

(घ) काव्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक होगा:

(i) जंग न होने देंगे (ii) विश्व शांति की पुकार

(iii) समाज का सच (iv) समर्पण

(ङ) 'युद्ध विहीन' किस समास के अंतर्गत आता है ?

(i) तत्पुरुष (ii) बहुव्रीहि

(iii) द्वंद्व (iv) कर्मधारय

उत्तर :

(क) (i) युद्धों को रोकना|

(ख) (iv) उपर्युक्त सभी|

(ग) (iv) उपर्युक्त सभी|

(घ) (i) जंग न होने देंगे|

(ङ) (i) तत्पुरुष|

व्याकरण

रचना के आधार पर वाक्य के भेद और वाक्य-परिवर्तन

परिभाषा
दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।
उदाहरण के लिए ' मोहन पुस्तक पढ़ता है।' एक वाक्य है क्योंकि इसका पूर्ण अर्थ निकलता है।
रचना के अनुसार वाक्य के निम्नलिखित तीन भेद हैं ==>

1 - सरल वाक्य।
2 - संयुक्त वाक्य।
3 - मिश्र वाक्य।

1 - सरल वाक्य ==>

जिस वाक्य में एक क्रिया होती है, उसे सरल वाक्य कहते हैं। सरल वाक्य में एक क्रिया का होना आवश्यक है।
जैसे==>
मोहन हंसता है।
राजेश बीमार है।
माताजी ने शीला को एक साड़ी दी।

2- संयुक्त वाक्य ==>

जिस वाक्य में दो या अधिक मुख्य तथा स्वतंत्र उपवाक्य होती हैं, वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं। ये दोनों पूर्ण अर्थ देने में सक्षम होते हैं
जैसे==>
(अ) - राम बाजार गया और संतरे लाया।
(ब) - सच बोलो परंतु कटु सत्य न बोलो।
(स) - हम सब दिल्ली घूमने गए और वहां चार दिन रहे।

3 - मिश्र वाक्य ==>

मिश्र वाक्य में एक से अधिक उपवाक्य होते हैं, उनमें एक उपवाक्य प्रधान होता है तथा अन्य, एक या अधिक उपवाक्य उस पर आश्रित होते हैं। यह उपवाक्य परस्पर व्यधिकरण योजकों (जैसे, कि,यदि, अगर, तो, तथापि, इसलिए आदि) से जुड़े हुए होते हैं।
जैसे ==>
(अ) - शिक्षक ने बताया कि कल स्कूल में छुट्टी होगी।
(ब) - जो व्यक्ति कमरे में बैठा है वह मेरा भाई है।
(स) - जब तू छोटा था तब साइकिल खूब चलाता था।
(द) - यदि इस बार वर्षा न हुई तो सारी फसल नष्ट हो जाएगी।

रचना के आधार पर सरल वाक्य का परिवर्तन

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य ==>

1 - सरल वाक्य ==> उसने घर आकर भोजन किया।
संयुक्त वाक्य ==> वह घर आया और उसने भोजन किया।
2 - सरल वाक्य ==> वह फल खरीदने के लिए बाजार गया।
संयुक्त वाक्य ==> उसे फल खरीदने थे इसलिए वह बाजार गया।
3 -सरल वाक्य ==> मोहन हिंदी पढ़ने के लिए शास्त्री जी के यहां गया है।
संयुक्त वाक्य ==> मोहन को हिंदी पढ़नी है इसीलिए शास्त्री जी के यहां गया है
4 -सरल वाक्य ==> रात को आकाश में तारों का मेला लग गया।
संयुक्त वाक्य ==> रात आई और आकाश में तारों का मेला लग गया।
5 -सरल वाक्य ==> मजदूर को अपनी मेहनत का लाभ नहीं मिलता।
संयुक्त वाक्य ==> मजदूर मेहनत करता है लेकिन उसका लाभ उसे नहीं मिलता।
6 -सरल वाक्य ==> मेहनत करने पर भी गरीबों को भरपेट रोटी नहीं मिलती।
संयुक्त वाक्य ==> गरीब मेहनत करते हैं परंतु उन्हें भरपेट रोटी नहीं मिलती।
7 -सरल वाक्य ==> वह बाजार जाकर संतरे लाया।
संयुक्त वाक्य ==> वह बाजार गया और सन्तरे लाया।

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य ==>
1 -सरल वाक्य ==> देश के लिए मर मिटने वाला सच्चा देशभक्त होता है।
मिश्र वाक्य ==> जो देश के लिए मर मिटता है वही सच्चा देशभक्त होता है।
2 -सरल वाक्य ==> शिक्षक के सामने छात्र शांत रहते हैं।
मिश्र वाक्य ==> जब तक शिक्षक रहता है, छात्र शांत रहते हैं।
3 -सरल वाक्य ==> मोहन ने मुझे जल्दी भोजन करने के लिए कहा।
मिश्र वाक्य ==> मोहन ने कहा कि मुझे जल्दी भोजन करना है।
4 -सरल वाक्य ==> मोहन के घर पहुंचने से पूर्व उसके पिता चल चुके थे।
मिश्र वाक्य ==> जब तक मोहन घर पहुंचा तब तक उसके पिता चल चुके थे।
5 -सरल वाक्य ==> मैंने एक बहुत बीमार आदमी दिखा।
मिश्र वाक्य ==> मैंने एक आदमी देखा जो बहुत बीमार था।
6 -सरल वाक्य ==> उसने स्वयं को निर्दोष बताया।
मिश्र वाक्य ==> उसने कहा कि मैं निर्दोष हूं।
7 -सरल वाक्य ==> सड़क पार करता हुआ एक व्यक्ति बस से टकराकर मर गया।
मिश्र वाक्य ==> एक व्यक्ति जो सड़क पार कर रहा था, बस से टकराकर मर गया।

रचना के आधार पर संयुक्त वाक्य का परिवर्तन

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य ==>
1 - संयुक्त ==> शीला ने एक पुस्तक मांगी और वह उसे मिल गई।
सरल ==> शीला के पुस्तक मांगने पर उसे मिल गई।
2 - संयुक्त ==> वह नहीं आया क्योंकि बीमार है।
सरल ==> वह बीमारी के कारण नहीं आया।
3 - संयुक्त ==> मुझे उसने देखा और वह खिसक गया।
सरल ==> मुझे देखकर वह खिसक गया।
4 - संयुक्त ==> रात के 12:00 बजे थे और मैंने पढ़ना बंद कर दिया।
सरल ==> रात के 12:00 बजे मैंने पढ़ना बंद कर दिया।

5 - संयुक्त ==> मुझे वहां जाना था इसलिए सवेरे उठना पड़ा
सरल ==> मुझे वहाँ जाने के लिए सवेरे उठना पड़ा
6- संयुक्त ==> वह आया और चला गया।
सरल ==> वह आकर चला गया।
7 - संयुक्त ==> राम पुस्तक पढ़ता है और अख़बार भी पढ़ता है।
सरल ==> राम पुस्तक और अख़बार भी पढ़ता है।

संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य ==>

1- संयुक्त वाक्य ==> वह तेज दौड़ता तो गाड़ी मिल जाती।
मिश्र वाक्य ==> यदि वह तेज दौड़ता तो गाड़ी मिल जाती।
2-संयुक्त वाक्य ==> मेरी गाय काली है और खेत में चल रही है।
मिश्र वाक्य ==> मेरी जो गाय काली है वह खेत में चर रही है।
3- संयुक्त वाक्य ==> सभा समाप्त हुई और सब लोग चले गए।
मिश्र वाक्य ==> जब सभा समाप्त हुई तो सब लोग चले गए।
4- संयुक्त वाक्य ==> तोता पिंजरे में है और दाल खा रहा है।
मिश्र वाक्य ==> जो तोता पिंजरे में है वह दाल खा रहा है।
5- संयुक्त वाक्य ==> मोहन ने हरी मिर्च खा ली और हिचकियां आने लगी।
मिश्र वाक्य ==> जब मोहन ने हरी मिर्च खा ली तब उसे हिचकियां आने लगी।
6- संयुक्त वाक्य ==> वह लड़का गांव गया और बीमार हो गया।
मिश्र वाक्य ==> जो लड़का गांव गया वह वहां बीमा हो गया।
7- संयुक्त वाक्य ==> शेर दिखाई दिया और सब लोग डर गए।
मिश्र वाक्य ==> जैसे ही शेर दिखाई दिया, सब लोग डर गए।

रचना के आधार पर मिश्र वाक्य का परिवर्तन

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य ==>

1-मिश्र वाक्य ==> यद्यपि वह मंत्री बन गया है फिर भी उसका व्यवहार पूर्ववत है।
सरल वाक्य ==> मंत्री बनने पर भी उसका व्यवहार पूर्ववत है।
2-मिश्र वाक्य ==> चूँकि सुषमा बीमार है इसीलिए वह स्कूल नहीं आई।
सरल वाक्य ==> सुषमा बीमार होने के कारण स्कूल नहीं आई।
3-मिश्र वाक्य ==> जो व्यक्ति परिश्रमी होते हैं वे अच्छे लगते हैं।
सरल वाक्य ==> परिश्रमी व्यक्ति अच्छे लगते हैं।
4-मिश्र वाक्य ==> जो व्यक्ति सच बोलता है उसे कोई नहीं डरा सकता।
सरल वाक्य ==> सच बोलने वाले व्यक्ति को कोई नहीं डरा सकता।
5-मिश्र वाक्य ==> जो व्यक्ति परिश्रमी होता है उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है।
सरल वाक्य ==> परिश्रमी व्यक्ति के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है।
6-मिश्र वाक्य ==> जिन बालकों ने शोर मचाया था वे पकड़ लिए गए हैं।
सरल वाक्य ==> शोर मचाने वाले बालक पकड़ लिए गए हैं।
7-मिश्र वाक्य ==> यह वही भारत देश है जो सोने की चिड़िया कहलाता था।
सरल वाक्य ==> सोने की चिड़िया कहलाने वाला यह वही भारत देश है।

मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य ==>

1-मिश्र वाक्य ==> जब भी मैं वहां गया, उसने मेरा सत्कार किया।
संयुक्त वाक्य ==> मैं वहां गया और उसने मेरा सत्कार किया।
2-मिश्र वाक्य ==> जब वह घर आया तब उसने भोजन किया।
संयुक्त वाक्य ==> वह घर आया और उसने भोजन किया।
3-मिश्र वाक्य ==> वह इसीलिए बाजार गया क्योंकि उसे फल खरीदने थे।
संयुक्त वाक्य==> उसे फल खरीदने थे इसलिए वह बाजार गया।
4-मिश्र वाक्य ==> जैसे ही रात हुई, आकाश में तारों का मेला लग गया।
संयुक्त वाक्य ==> रात हुई और आकाश में तारों का मेला लग गया।
5-मिश्र वाक्य ==> चूँकि वह अपराधी था इसलिए उसे सजा हुई।
संयुक्त वाक्य ==> वह अपराधी था इसीलिए उसे सजा हुई।
6-मिश्र वाक्य ==> जैसे ही गली में शोर हुआ, सब लोग बाहर आ गए।
संयुक्त वाक्य ==> । गली में शोर हुआ और सब लोग बाहर आ गए।
7-मिश्र वाक्य ==> ज्यों ही अचानक पुलिस आई त्यों ही गली में सन्नाटा छा गया।
संयुक्त वाक्य ==> अचानक पुलिस आ गई और गली में सन्नाटा छा गया।

(क) प्रधान उपवाक्य ==>

जिस वाक्य में जो उपवाक्य स्वतंत्र होता है एवम् उसकी क्रिया मुख्य होती है , वह मुख्य या प्रधान उपवाक्य कहलाता है। जैसे==>
राम ने कहा कि वह नहीं आएगा।
इस वाक्य में 'राम ने कहा' प्रधान उपवाक्य है।

(ख) आश्रित उपवाक्य ==>

जिस वाक्य में जो उपवाक्य स्वतंत्र नहीं होता है , वह आश्रित उपवाक्य कहलाता है।
जैसे==>
राम ने कहा कि वह नहीं आएगा
इस वाक्य में 'वह नही आएगा।' आश्रित उपवाक्य है।

आश्रित उपवाक्य के तीन भेद होते हैं ==>

(अ) - संज्ञा आश्रित उपवाक्य ==>

जो उपवाक्य प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा या संज्ञा पदबंध के बदले में प्रयुक्त हुआ हो उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं।
जैसे==>
रहीम बोला कि मैं कर्नाटक जा रहा हूं
यहां 'मैं कर्नाटक जा रहा हूं' उपवाक्य प्रधान वाक्य 'रहीम बोला' के कर्म के रूप में प्रयुक्त हो रहा है। अतः संज्ञा उपवाक्य है। संज्ञा उपवाक्य से पहले प्रायः 'कि' का प्रयोग होता है।

(ब) - विशेषण आश्रित उपवाक्य ==>

जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताता है उसे विशेषण उपवाक्य कहते हैं

यह 'जो ,जिस, जिसे, जिसको, जिनको, जिन्होंने, जिसमें, जिन्हें, हलांकि' योजकों से आरम्भ होता है।
जैसे==>
आपकी वह किताब कहां है जो आप कल आए थे।
(अ)- जो पैसे मुझे मिले थे, वह खर्च हो गए।
(ब) - जिसको किताब चाहिए थी, वह घर गया।
(स) - तुम जिसे लाए हो, वह कल भी आया था।

इन वाक्यों में 'जो ,जिसको जिसे' से आरम्भ होनेवाले उपवाक्य अर्थात् 'जो पैसे मुझे मिले थे' , 'जिसको किताब चाहिए थी' तथा 'तुम जिसे लाए हो' अंशवाले उपवाक्य विशेषण आश्रित उपवाक्य हैं।

(स) - क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य ==>

जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया की कोई विशेषता बताता है वह क्रियाविशेषण उपवाक्य कहलाता है।
यह '**यदि, जब, जिस तरह, जिधर , जहाँ, जैसे, जिस जगह , जितना**' योजकों से आरम्भ होता है।
जैसे==>
(अ) **- जब पानी बरस रहा था तब मैं घर के भीतर था।**
(ब)- उधर आगे रास्ता बंद है जिधर तुम जा रहे हो।
(स)- वह उसी प्रकार खेलता है जैसा उसके कोच सिखाते हैं।
(द) - यदि मैंने पढ़ा होता तो अवश्य उत्तीर्ण हो गया होता।
इन वाक्यों में '**जब , जिधर, जैसा , यदि**' से आरम्भ होनेवाले उपवाक्य अर्थात् 'जब पानी बरस रहा था,' '**जिधर** तुम जा रहे हो।' , '**जैसा** उसके कोच सिखाते हैं।' तथा '**यदि** मैंने पढ़ा होता ' अंशवाले उपवाक्य क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य हैं।

वाच्य

वाच्य की परिभाषा:-वाच्य का अर्थ है बोलने का विषय अतः लिखा जा सकता है कि क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है, अथवा भाव है उसे वाच्य कहते है।

वाच्य के प्रकार: वाच्य तीन प्रकार के होते हैं (1) कर्तृवाच्य (ii) कर्मवाच्य (iii) भाववाच्य

■ वाच्य परिवर्तन के नियम

∆कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना

(1) कर्ता को करण या माध्यम के रूप में से, के द्वारा द्वारा आदि लगाकर व्यक्त किया जाए या कर्ता का लोप कर दिया जाए।

(2) कर्तृवाच्य की क्रिया को सामान्य भूतकाल में बदल दीजिए।

(3) कर्मवाच्य बनाते समय संयोजी क्रिया 'जाना' का काल, पुरुष, लिंग और वचन के अनुसार जो रूप हो, उसे जोड़कर साधारण क्रिया को संयुक्त क्रिया में बदलिए।

(4) यदि कर्म के साथ कोई विभक्ति लगी हो, उसे हटा दीजिए।

उधारण:-

क्र. सं.	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1.	हालदार साहब ने पान खाया।	हालदार साहब द्वारा पान खाया गया।
2.	मरीज पानी नहीं पी सकता।	मरीज से पानी नहीं पिया जाता।
3.	अब आप गाना गाएँ।	अब आपके द्वारा गाना गाया जाए।
4.	कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाता है।	कुम्हार द्वारा मिट्टी के बर्तन बनाए जाते हैं।
5.	कवयित्री ने कविता-पाठ किया।	कवयित्री द्वारा कविता पाठ किया गया।
6.	गायिका ने मधुर गीत गाए।	गायिका द्वारा मधुर गीत गाए गए।
7.	मरीज ने आज खाना खाया।	मरीज द्वारा आज खाना खाया गया।
8.	दादी जी अखबार पढ़ते हैं।	दादी जी द्वारा अखबार पढ़ा गया।

∆ कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना

(1) भाववाच्य में कर्म होता ही नहीं है।

(2) कर्ता के आगे 'से' अथवा 'के द्वारा लगाया जाता है।

(3) मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया के एकवचन में बदलकर उसके साथ 'जाना' धातु के एकवचन, पुल्लिंग, अन्य पुरुष का वही काल लगाया जाता है जो कर्तृवाच्य की क्रिया का है, जैसे-खेलेंगे- खेला जाएगा, पढ़ रही थी पढ़ा

उदाहरण:

क्र. सं.	भाववाच्य	कर्तृवाच्य
1.	मुझसे इस पेड़ पर नहीं चढ़ा जाएगा।	मैं इस पेड़ पर नहीं चढ़ सकता।
2.	तुमसे बरफ़ से शीतल पानी में नहीं नहाया जाएगा।	तुम बरफ़ से शीतल पानी में नहीं नहा सकोगे।
3.	ऐसी सरदी में रात भर कैसे बैठा जाएगा।	ऐसी सरदी में रात भर कैसे बैठेंगे।
4.	कुत्तों द्वारा ज़ोर से भौंका जा रहा है।	कुत्ते जोर से भौंक रहे हैं।
5.	कुत्ते के द्वारा बिल्ली के पीछे भागा जा रहा है।	कुत्ते बिल्ली के पीछे भाग रहे हैं।
6.	घायल सैनिक से बोला भी नहीं जा रहा है।	घायल सैनिक बोल नहीं पा रहा है।
7.	उसके द्वारा पार्क में प्रतिदिन दौड़ा जाता है।	वह पार्क में प्रतिदिन दौड़ता है।
8.	इस घने जंगल में सारा दिन कैसे बिताया जाएगा।	इस घने जंगल में सारा दिन कैसे बिताएँगे।
9.	घायल हंस से उड़ा न गया।	घायल हंस उड़ न पाया।
10.	विधवा से रोया भी न जा सका।	विधवा रो न सकी।

वाच्यों की पहचान

(1) कर्तृवाच्यः

(i)कर्ता बिना विभक्ति या 'ने' सहित होता है।

(2) कर्मवाच्य:

(i) कर्ता के साथ 'से' या के द्वारा विभक्ति होती है।

(ii) मुख्य क्रिया सकर्मक होती है तथा उसके साथ 'जाना' क्रिया का रूप, लिंग एवं वचन कालानुसार जुड़ जाता है।

(iii) 'जाना' क्रिया के उपर्युक्त रूप से पहले क्रिया सामान्य भूतकाल में होती है।

(3)भाववाच्य:

(i) कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' कारक चिह्न होता है।

(ii) क्रिया अकर्मक होती है।

(iii) क्रिया सदा एकवचन पुल्लिंग में होती हवाच्य का प्रयोग स्थल

कर्मवाच्य के प्रयोग स्थल

(1) जब कर्ता का पता न हो या आपको पता हो, पर भयवश, संकोचवश या अन्य किसी कारण से नहीं बताना चाहते; जैसे डाक पेटी में चिट्ठी डाल दी गई है। धन पानी की तरह बहाया जा रहा है। आवेदन पत्र भेज दिया गया है। दुकान खोली गई।

(2) असमर्थता बताने के लिए, जैसे अब अधिक जूस नहीं पिया जाता। गरीब का दुख मुझसे देखा नहीं जाता। अब अधिक

(3) सूचना, विज्ञप्ति आदि में जहाँ कर्ता निश्चित नहीं है; जैसे- पटरी पार करने वालों को सजा दी जाएगी। बस में धूम्रपान करने देर बैठा नहीं जाएगा। वाले पर सौ रुपए जुर्माना किया जाएगा।

(4) जब कार्य आपने किया हो, परंतु वह आपकी इच्छा से न हुआ हो; जैसे- शीशा गिर गया और टूट गया। हाथ से कप गिर गया।।

(5)जब कर्ता कोई सभा, सरकार या समिति हो; जैसे सरकार द्वारा गरीबों के लिए बहुत से काम किए जा रहे है। आर्य समाज द्वारा प्रतिवर्ष अनेक अंतर्जातीय विवाह कराए जाते हैं। दंगा प्रस्त लोगों की आर्थिक सहायता पार्टी द्वारा की जा रही है।

(6) अधिकार, गर्व या दर्प जताने के लिए; जैसे राम को दंड दिया जाए। अपराधी को हाजिर किया जाए।

(7) कानूनी तथा कार्यालय भाषा में; जैसे- इस अपराध की जाँच की जाएगी। एक माह का अर्जित अवकाश स्वीकृत किया जाता है।

भाववाच्य के प्रयोग स्थल

(i)असमर्थता, विवशता व्यक्त करने के लिए या निषेधार्थ में आज मुझसे चला भी नहीं जा रहा है। अब तो खड़ा भी नहीं हुआ जाता।

(ii)जब 'नहीं' का प्रयोग नहीं होता है, तो मूल कर्ता जनसामान्य होता है; गर्मियों में छत पर सोया जाता है। गर्मियों में खूब नहाया जाता है।

(iii)अनुमति या आज्ञा प्राप्त करने के लिए- अब चला जाए। चलिए, थोड़ा टहल लिया जाए। अब कुछ विश्राम किया जाए।।

<u>तथ्यात्मक प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1. वाच्य किसे कहते हैं?

उत्तर: वाच्य उस रूपरचना को कहते हैं जिससे यह पता चलता है कि क्रिया को मूल रूप से चलाने वाला कर्ता है या कर्म। उदाहरण: लड़का चित्र बनाता है।

इस वाक्य में 'बनाने' का कार्य 'लड़का' कर रहा है, अतः यह कर्तृवाच्य वाक्य है।

प्रश्न 2. वाच्य के कितने भेद होते हैं?

उत्तरः वाच्य के दो भेद हैं: (i) कर्तृवाच्य तथा (ii) अकर्तृवाच्य।

प्रश्न 3. कर्तृवाच्य किसे कहते हैं?

उत्तर: जिन वाक्यों में कर्ता की प्रधानता होती है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं; जैसे- वह पुस्तक पढ़ता है। मैं पत्र लिखता हूँ। माता जी सो रही हैं। इन वाक्यों में कर्ता प्रमुख है। इसमें अकर्मक और सकर्मक दोनों क्रियाएँ हो सकती हैं। क्रिया के लिंग, वचन कर्ता के अनुसार होते हैं।

प्रश्न 4. अकर्तृवाच्य किसे कहते हैं? यह कितने प्रकार का होता है?

उत्तर: जिन वाक्यों में कर्ता गौण अथवा लुप्त होता है, उसे अकर्तृवाच्य कहते है।

यह दो प्रकार का होता है: (क) कर्मवाच्य तथा (ख) भाववाच्य।

प्रश्न 5. कर्मवाच्य से आपका क्या अभिप्राय है?

उत्तर: जिस वाक्य में केंद्र बिंदु कर्ता न होकर 'कर्म' हो, उसे कर्मवाच्य कहते है, जैसे-लता से पत्र लिखा जाता है। आपका काम कर दिया गया है। रोगी को दवाई दे दी गई है।

प्रश्न 6. भाववाच्य से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: जिस वाक्य में कर्ता या कर्म की प्रधानता न होकर भाव की प्रधानता होती है, उन्हें भाववाच्य कहा जाता है: मुझसे अब चला नहीं जाता, जैसे- थोड़ी देर सो लिया जाए, अब चला जाए। भाववाच्य में क्रिया सदा एकवचन, पुल्लिंग, अकर्मक तथा अन्य पुरुष में रहती है।

प्रश्न 7. कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य की पहचान स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

(1)कर्तृवाच्य:

(i) कर्ता बिना विभक्ति या 'ने' सहित होता है।

(2)कर्मवाच्य:

(i) कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' विभक्ति होती है।

(ii) मुख्य क्रिया सकर्मक होती है तथा उसके साथ 'जाना' क्रिया का रूप, लिंग, व वचन कालानुसार जुड़ जाता है।

(iii) 'जाना' क्रिया के उपर्युक्त रूप से पहले क्रिया। सामान्य भूतकाल में होती है।

(3)भाववाच्य:

(i) कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' कारक चिह्न होता है।

(ii) क्रिया अकर्मक होती है।

(iii) क्रिया सदा एकवचन पुल्लिंग में होती है।

प्रश्न 8. वाच्य और अन्विति (प्रयोग) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : वाच्य और अन्विति (प्रयोग) भिन्न-भिन्न व्याकरणिक संकल्पनाएँ हैं।

अन्विति का आधार रूप रचना है। वाक्य में जो लिंग, वचन आदि आए हैं, उनका अनुसरण करना है। अन्विति वाक्य में प्रयुक्त पदों में अनुरूपता स्थापित करती है।

वाच्य का कार्य यह देखना है कि वाक्य में कर्ता, कर्म और भाव में से कौन-सा प्रधान है, यह वक्ता की प्रधानता का ध्यान रखता है।

क्रियात्मक प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 9. अधिकार, गर्व या दर्प जताने के लिए प्रयुक्त वाक्यों में कौन-सा वाच्य होता है?

(क)कर्मवाच्य

(ख)कर्तृवाच्य

(ग)भाववाच्य

(घ)अकर्तृवाच्य

प्रश्नप10. मूलकर्ता सामान्य होता है-

(क) जब वाक्य में 'नहीं' का प्रयोग नहीं होता

(ख) जब वाक्य में नहीं का प्रयोग होता

(ग) जब वाक्य में अधिकार जताने का भाव हो

(घ) उपर्युक्त कोई नहीं

प्रश्न 11. कानून या कार्यालयी भाषा में सामान्यतः कौन-सा वाच्य प्रयुक्त होता है?

(क)कर्मवाच्य

(ख)कर्तृवाच्य

(ग)अकर्तृवाच्य

(घ) भाववाच्य

12. लड़का चित्र बनाता है' वाक्य किस वाच्य से संबंधित है ?

(क)अकर्तृवाच्य

(ख)कर्तृवाच्य

(ग) भाववाच्य

(घ)कर्मवाच्यप्रश्न

13. भाववाच्य की पहचान है.

(a) कर्ता के साथ से', 'के द्वारा कारक चिन्ह होता है

(b) क्रिया अकर्मक होती है

(c) उपरोक्त दोनों

(d) 'ने' कारक चीन्ह होता हा

14.वाच्य के विषय में कौन-सी बात सही नहीं है

(क) कर्तृवाच्य में अकर्मक-सकर्मक दोनों क्रियाओं का प्रयोग होता है

(ख) कर्मवाच्य में क्रिया सदैव सकर्मक होती है

(ग) भाववाच्य की क्रिया अकर्मक, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन होती है

(घ) वाच्य कभी परिवर्तित नहीं होता।

प्रश्न 15. **कर्मवाच्य में किस क्रिया का प्रयोग होता है?**

(क)सकर्मक

(ख)अकर्मक

(ग) दोनों

(घ) उपरोक्त कोई नहीं

प्रश्न 16. **भाववाच्य की क्रिया सदैव किस रूप में होती है ?**

(क)अन्य पुरुष

(ख) पुल्लिंग

(ग) एकवचन

(घ) उपरोक्तसभी

उत्तर: 9.(क) 10.(क) 11.(क) 12.(ख) 13.(ग) 14.(क) 15.(क) 16.(घ)

पद-परिचय

मूलभूत स्मरणीय तथ्य

वाक्यों में प्रयुक्त शब्द पद कहलाते हैं तथा वाक्य में इन पदों का स्थिति बताना उनका लिंग, वचन, कारक भेट तथा अन्य पदों से उसका संबंध बताना पद-परिचय कहलाता है।

पद परिचय के आवश्यक पहलू

पद-परिचय के लिए पदों के निम्नलिखित पहलुओं की जानकारी देनी अपेक्षित होती है--

संज्ञा: संज्ञा के तीनों भेद, लिंग, वचन, कारक, क्रिया के साथ संबंध सर्वनाम: सर्वनाम के भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक, क्रिया के साथ संबंध

विशेषण: विशेषण के भेद, लिंग, वचन, विशेष्य, अवस्था (तर, तम आदि कोटियाँ), प्रविशेषण का उल्लेख

क्रिया: अकर्मक, सकर्मक, लिंग, वचन, पुरुष, धातु, काल, वाच्य, प्रयोग, कर्ता और कर्म का संकेत। क्रियाविशेषण: भेद, जिस क्रिया की विशेषता बताई गई हो उसके बारे में निर्देश।

समुच्चयबोधक: भेद, संयुक्त शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों का उल्लेख।। संबंधबोधक: भेद, पदों, पदबंधों, वाक्यांशों से संबंध का निर्देश।

विस्मयादिबोधक: भेद का नाम।

इस प्रकार 'पद-परिचय' के अंतर्गत किसी पद का पूर्ण व्याकरणिक परिचय दिया जाता है।

हिंदी भाषा में अनेक ऐसे शब्द है जो विभिन्न शब्द भेदों का कार्य करते हैं। वाक्य में प्रयोग के अनुसार, वे संज्ञा, विशेषण या अव्यय बन जाते हैं।

ऐसे कुछ शब्द निम्नलिखित हैं:

(1) **अच्छा-**

संज्ञा - **अच्छों** की संगति करो।

विशेषण- राम **अच्छा** अधिकारी है।

क्रिया-विशेषण- मुझे उसका गाना **अच्छा** लगा।

विस्मयादिबोधक- **अच्छा**! तो तुम आ ही गए।

(2) **आप-**

मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम- **आप** क्या कर रहे हैं?

अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम- गुप्त को राष्ट्रवादी कवि हैं। **आप** ने कहानी भी लिखी।।

निजवाचक सर्वनाम- मैं अपने **आप** चला जाऊंगा

(3) **एक-**

संज्ञा- **एक** भी योग्य नहीं है।

सर्वनाम **एक** ने यह कहा।

विशेषण- **एक** पुस्तक मुझे चाहिए।

क्रिया-विशेषण- **एक** तो थप्पड़ मारा, दूसरे पुलिस की धमकी भी देते हो।

(4) **ऐसा-**

संज्ञा- **ऐसों** की क्या हिम्मत जो मेरा मजाक उड़ा सके।

सर्वनाम- **ऐसे** लोगों के साथ कौन रहेगा?

विशेषण- **ऐसे** बहादुर विरले हैं।

क्रिया-विशेषण- **ऐसे** करो या न करो।

संबंधबोधक- वह **ऐसा** नाम कमाना चाहता है, जैसा किसी ने नहीं कमाया हो।

(5) **और**-

संज्ञा- उधर **और** आ गए।

विशेषण- **और** बच्चे कहाँ है।

सर्वनाम- **औरों** से भी पूछ लीजिए।

क्रिया-विशेषण – थोड़ा **और** दो।

समुच्चयबोधक- मोहन **और** श्याम आ गए।

(6) **जो-**

सर्वनाम - वह खिलौना लाओ **जो** मैं कल लाया था।

विशेषण **जो** काम करो, दिल लगाकर करो।

क्रिया-विशेषण **जो** जेब देखी तो फटी हुई थी।।

समुच्चयबोधक- मैं इतना मूर्ख नहीं **जो** तुम पर विश्वास करूँ।

(7) कारण-

संज्ञा- इसका **कारण** बताओ।

संबंधबोधक- मैं गरमी के **कारण** नहीं आ सका।

समुच्चयबोधक- वह आया नहीं, इस **कारण** मैं नहीं गया।

(8) **कुछ**

सर्वनाम- पढ़ने के लिए **कुछ** दो।

विशेषण- **कुछ** महिलाएँ आई हैं।

क्रिया-विशेषण- वह **कुछ** कहता है।

(9) **कोई**-

सर्वनाम- **कोई** आया है?

विशेषण- **कोई** छात्र इस प्रश्न का जवाब देगा।

क्रिया-विशेषण- वहाँ **कोई** दस बारह बच्चे थे।

(10) **कौन**-

सर्वनाम – **कौन** आया है?

विशेषण- कौन लड़का है जो नकल मार रहा है?

क्रिया-विशेषण- परीक्षा में पास होना **कौन**-सा कठिन है?

(11) **क्या-**

सर्वनाम – वह **क्या** कर रहा है?

विशेषण- तुम **क्या** काम कर रहे हो?

क्रियाविशेषण- तुम **क्या** लिख रहे हो ?

(12) **चाहे**-

क्रिया- वह जो **चाहे** उसे दे दो।

क्रिया-विशेषण- वह **चाहे** जितना करे, कम है।

समुच्चयबोधक, **चाहे** दिल्ली जाओ या जयपुर

(13) **जैसा**-

सर्वनाम **जैसा** करोगे, वैसा भरोगे।

विशेषण – **जैसा** काम, वैसा दाम।

क्रिया-विशेषण- वह **जैसा** चाहती थी, वैसा ही हुआ।

(14) **कम**-

संज्ञा **कम** ही सरकारी नौकरी पाते हैं।

विशेषण- आज मुझे **कम** काम मिला।

क्रिया-विशेषण- **कम** बोलो।

(15) **ठीक**-

विशेषण- ठीक बात है।

क्रिया-विशेषण **ठीक** सुनो, **ठीक** समझो।

विस्मयादिबोधक **ठीक**! मेरा भी यही विचार है।

(16) **डूबता**

संज्ञा- **डूबते** को कोई नहीं बचाता।

क्रिया- मैं **डूबता** तो कोई न कोई बचाने आता।

विशेषण- **डूबते** जहाज से कुछ व्यक्ति बच गए।

(17) **दूसरा**-

सर्वनाम - **दूसरों** को क्या मतलब?

विशेषण- यह **दूसरा** मार्ग है।

(18) **बहुत**-

संज्ञा- **बहुतों** से परिचय भी न हो सका।

सर्वनाम **बहुत** हो चुका

विशेषण- वहाँ **बहुत** भीड़ थी।

क्रिया-विशेषण- वह **बहुत** तेज भागती है।

तथ्यात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. पद-परिचय से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाते हैं; जैसे राम ने पुस्तक पढ़ी। इसमें तीन पद हैं- राम ने, पुस्तक, पढ़ी। वाक्य में प्रयोग होने के बाद वे लिंग, वचन, कारक, काल आदि से प्रभावित हो जाते हैं। इन पदों का परिचय देना अर्थात् उनका लिंग, वचन, कारक, भेद व अन्य पदों से संबंध बताना ही पद-परिचय होता है। सरल शब्दों में, कहा जा सकता है कि वाक्य में आए. पदों- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि का व्याकरण के अनुसार अलग-अलग परिचय देना ही पद-परिचय कहलाता है।

प्रश्न 2. पद-परिचय देते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?

उत्तर: पद-परिचय के समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है: (i) प्रत्येक पद को अलग-अलग करना। (i) प्रत्येक पद का प्रकार व भेदोपभेद बताना। (iii) वाक्य में दूसरे पदों से उसका संबंध बताना। (iv) वाक्य में उसका कार्य बताना। (V) पद-परिचय के समय व्याकरण का सार प्रस्तुत करना पड़ता है।

प्रश्न 3. संज्ञा का पद परिचय देते समय क्या-क्या अपेक्षित है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: संज्ञा का पद-परिचय देते समय निम्नलिखित बातें अपेक्षित है (1) भेद व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक। (i) लिंग – पुल्लिंग, स्त्रीलिंग। (iii) वचन एकवचन बहुवचन (iv) कारक कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, - अधिकरण, संबोधन। (v) संबंध क्रिया से या अन्य पद से संबधित कथन।

उदाहरण- पिताजी गीता के लिए साड़ी लाए।

पिताजी - जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'लाए' क्रिया का कर्ता

गीता - व्यक्तिवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग, एकवचन, संप्रदान कारक, 'लाए' क्रिया का संप्रदान।

साड़ी -जातिवाचक संज्ञा, स्वीलिंग, एकवचन, कर्म कारक, "लाए' क्रिया का कार्य

प्राप्त 4. सर्वनाम का पद परिचय देते समय कौन-कौन से विदु उल्लेखनीय हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः सर्वनाम का पद-परिचय देते समय निम्नलिखित बातों का उल्लेख किया जाता है: (i) भेद- पुरुषवाचक, (उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष) निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक और निजवाचक (ii) लिंग- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग। (iii) वचन - एकवचन बहुवचन (iv) कारक - कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण। (v) संबंध - क्रिया या अन्य पद से संबंध।

उदाहरण: रमेश ने सीता से पुस्तक दिखाकर कहा, "मैं तुम्हें यह नहीं दे सकता और कुछ भी ले लो।'

मैं: पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'दे सकता' क्रिया का कर्ता।

तुम्हें: पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, स्वीलिंग, एकवचन, कर्म कारक. 'दे सकता' क्रिया का कर्म ।

यह: निश्चयवाचक सर्वनाम स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'दे सकता क्रिया का कर्म ।

कुछ: अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन कर्मकारक, 'ले लो' क्रिया का कर्म ।

प्रश्न 5. विशेषण का पद परिचय देते समय अनिवार्य वाते स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: विशेषण के पद परिचय में निम्नलिखित बातें अनिवार्य है: (1) भेद गुणवाचक संख्यावाचक, परिमाणवाचक, सार्वनामिका – (ii) लिंग पुल्लिंग, स्त्रीलिंग (iii) वचन एकवचन बहुवचन (iv) अवस्था (केवल गुणवाचक विशेषण में) मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था (v) विशेष्य वह पद जिसकी विशेषता बताई है। उदाहरण दिल्ली के निकट कई नगरों में वीर सैनिक रहते हैं।

कई: संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन, विशेष्य- नगरो।

वीर: गुणवाचक विशेषण मूलावस्था, पुल्लिंग, बहुवचन, विशेष्य- सैनिक।

प्रश्न 6. क्रिया का पद परिचय देते समय किन बिंदुओं का उल्लेख किया जाता है ?

उत्तर: क्रिया का पद परिचय देते समय निम्नलिखित बातों का उल्लेख किया जाता है:

(i)भेद- सकर्मक अकर्मक, पूर्वकालीन, अपूर्व, संयुक्त प्रेरणार्थक नामधातु (ii) वचन- एकवचन बहुवचन । (iii) लिग – पुल्लिंग, स्त्रीलिंग। (iv) वाच्य- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य (V) काल – भूत काल, वर्तमान काल, भविष्यत् काल (भेद सहित) (vi) संबंध- कर्ता, कर्म से संबंध (vii) अर्थ- निश्चयार्थ संभावनार्थ संकेतार्थ ।

उदाहरण: यह पुस्तक मेरी है, मैं इसे पढ़ सकता हूँ।

है: सकर्मक, अपूर्ण सामान्य क्रिया, वर्तमान काल, कर्तृवाच्य, स्त्रीलिंग, एकवचन, अन्य पुरुष, निश्चयार्थ, कर्ता-यह, पूरक पुस्तक। पढ़ सकता हूँ: सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, उत्तम पुरुष, कर्तृवाच्य, वर्तमान काल, निश्चयार्थ कर्ता- मैं, कर्म इसे।

प्रश्न 7. क्रिया-विशेषण के पद-परिचय के लिए अपेक्षित विदुओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इसके परिचय में अपेक्षित है: (i) भेद- कालवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक, परिमाणवाचक (ii) संबंध क्रिया जिसकी विशेषता बताई गई है। उदाहरण: लता धीरे-धीरे आई और ऊपर जाकर सो गई। धीरे-धीरे: रीतिवाचक क्रिया-विशेषण, 'आई' क्रिया की विशेषता । ऊपर स्थानवाचक, 'जाकर' की विशेषता।

प्रश्न 8. संबंधबोधक का पद-परिचय देते समय कौन-कौन से विदुओं का उल्लेख किया जाता है?

उत्तर: संबंधबोधक का पद-परिचय देते समय निम्नलिखित बिंदुओं का उल्लेख किया जाता है।

(i) भेद – कालवाचक, स्थानवाचक, दिशावाचक, साधनवाचक, समतावाचक, हेतुवाचक, तुलनावाचक, सहचरवाचक, विरोधवाचक, संग्रहवाचक।

(ii) संबंध- संबंधी शब्द।

उदाहरण- स्कूल जाने से पहले नाश्ता कर ली।

पहले: कालवाचक संबंधबोधक, 'नाश्ता कर लो' क्रिया संबंध।

प्रश्न 9. समुच्चयबोधक एवं विस्मयादिबोधक का पद परिचय सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः समुच्चयबोधक का पद-परिचय- इसमें निम्नलिखित बातें अनिवार्य है।

भेद- समानाधिकरण, व्याधिकरण)

संबंध- शब्दों, उपवाक्यों से संबंध

उदाहरण -गांधी जी ने कहा कि सदा सत्य बोलो।

कि: व्याधिकरण समुच्चयबोधक, यह 'गाँधी जी ने कहा' व 'सदा सत्य बोलो।' वाक्यों को जोड़ता है।

विस्मयादिबोधक का पद-परिचय- इसमें भाव का संकेत बताया जाता है।

उदाहरण: वाह!मैच जीत गए।

वाह! विस्मयादिबोधक – हर्षसूचका

क्रियात्मक प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 10. हम आज भी देश पर मरने के लिए तैयार है। रेखांकित पद का परिचय है-

(क)जातिवाचक संज्ञा पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक

(ख) व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन

(ग) भाववाचक, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक

(घ) जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकारक

प्रश्न 11. हम बाग में गए, परंतु वहाँ कोई आम नहीं मिला। रेखांकित का सही पद परिचय है-

(क) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक

(ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक

(ग) भाववाचक, पुल्लिंग, एकवचन, करणकारक

(घ) उपरोक्त कोई नहीं

प्रश्न 12. अहा! उपवन में सुंदर फूल खिले हैं। रेखांकित पद का परिचय होगा-

(क) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक

(ख) जातिवाचक, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, एकवचन

(ग) व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक

(घ) भाववाचक, पुल्लिंग, एकवचन, करणकारक

प्रश्न 13.**जल्दी करो वे सब बाते होंगे। रेखांकित पद का उचित पद परिचय है-**

(क) पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक

(ख) निश्चयवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, एकवचन, कर्मकारक

(ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, बहुवचन, कर्ताकारक

(घ) उपरोक्त कोई नहीं

प्रश्न 14. **कबीर नीरजा के लिए मिठाई लावा। रेखांकित पद का परिचय होगा-**

(क)व्यक्तिवाचक संज्ञा

(ख)पुरुषवाचक

(ग)जातिवाचक

(घ) भाववाचक

प्रश्न 15. **शीत ऋतु में हिमालय का क्षेत्र पूर्णतया बर्फ से ढक जाता है। वाक्य में रेखांकित पद का सही परिचय है-**

(क) विशेषण, गुणवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन

(ख) सार्वनामिक विशेषण पुल्लिंग, एकवचन

(ग)गुणवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन

(घ) उपरोक्त कोई नहीं

प्रश्न 16. **वाड़ से जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। रेखांकित पद का परिचय है-**

(क)क्रिया-विशेषण, 'हो जाता है' क्रिया का विशेषण

(ख)सार्वनामिक विशेषण 'हो जाता है' क्रिया का विशेषण

(ग)विशेषण, मूलावस्था 'हो जाता है' क्रिया का विशेषण

(घ)गुणवाचक उत्तरावस्था

प्रश्न 17. **वाह! बहुत मनोरंजक कहानी है। रेखांकित पद का परिचय होगा-**

(क)जातिवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकारक, 'है' क्रिया का कर्ता

(ख)भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकारक

(ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक)

(घ)रीतिवाचक क्रिया विशेषण, स्त्रीलिंग, बहुवचन

प्रश्न 18. **शायद <u>शाम तक</u> वर्षा हो जाए। वाक्य में रेखांकित पद का भेद है-**

(क)अवधिद्योतक कालवाचक क्रिया-विशेषण है

(ख)गुणवाचक विशेषण

(ग)रीतिवाचक क्रिया विशेषण

(घ)परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

प्रश्न 19. **किसी भी प्रकार की <u>धृष्टता</u> उसे सत्य से विचलित नहीं कर सकी। वाक्य में रेखांकित पद हैं-**

(क)भाववाचक संज्ञा

(ख)जातिवाचक संज्ञा

(ग)क्रिया-विशेषण

(घ)विशेषण

प्रश्न 20. **यह घड़ी मेरे <u>छोटे</u> भाई की है। वाक्य में रेखांकित पद है-**

(क)गुणवाचक विशेषण

(ख)सार्वनामिक विशेषण

(ग)जातिवाचक संज्ञा

(घ)प्रविशेषण

प्रश्न 21. **वाह! आप तो बड़े नेता <u>बन गए</u>। वाक्य में रेखांकित पद है-**

(क)संज्ञा

(ख)सकर्मक क्रिया

(ग)गुणवाचक विशेषण

(घ)कर्ता कारक

प्रश्न 22. **<u>संसार में</u> सदा सुखी कौन रहता है? वाक्य में रेखांकित पद का रूप है-**

(क)जातिवाचक संज्ञा एकवचन

(ख)व्यक्तिवाचक संज्ञा, बहुवचन

(ग)पुरुषवाचक सर्वनाम, बहुवचन

(घ)जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन

प्रश्न 23. **<u>विद्वान</u> लोग समय का सदुपयोग करते हैं। वाक्य में रेखांकित पद है-**

(क)गुणवाचक विशेषण (ख)परिमाणवाचक विशेषण

(ग)संख्यावाचक विशेषण (घ)सार्वनामिक विशेषण

अलंकार

परिचय :

अलंकार का अर्थ है-आभूषण। अर्थात् सुंदरता बढ़ाने के लिए प्रयुक्त होने वाले वे साधन जो सौंदर्य में चार चाँद लगा देते हैं। कविगण कविता रूपी कामिनी की शोभा बढ़ाने हेतु अलंकार नामक साधन का प्रयोग करते हैं। इसीलिए कहा गया है-'अलंकरोति इति अलंकार।'

परिभाषा :

जिन गुण धर्मों द्वारा काव्य की शोभा बढ़ाई जाती है, उन्हें अलंकार कहते हैं।

अलंकार के भेद –
काव्य में कभी अलग-अलग शब्दों के प्रयोग से सौंदर्य में वृद्धि की जाती है तो कभी अर्थ में चमत्कार पैदा करके। इस आधार पर अलंकार के दो भेद होते हैं –
(अ) शब्दालंकार
(ब) अर्थालंकार

(अ) शब्दालंकार –
जब काव्य में शब्दों के माध्यम से काव्य सौंदर्य में वृद्धि की जाती है, तब उसे शब्दालंकार कहते हैं। इस अलंकार में एक बात रखने वाली यह है कि शब्दालंकार में शब्द विशेष के कारण सौंदर्य उत्पन्न होता है। उस शब्द विशेष का पर्यायवाची रखने से काव्य सौंदर्य समाप्त हो जाता है; जैसे –
कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
यहाँ कनक के स्थान पर उसका पर्यायवाची 'गेहूँ' या 'धतूरा' रख देने पर काव्य सौंदर्य समाप्त हो जाता है।

शब्दालंकार के भेद:

शब्दालंकार के तीन भेद हैं –

1. अनुप्रास अलंकार
2. यमक अलंकार
3. श्लेष अलंकार

1. अनुप्रास अलंकार- जब काव्य में किसी वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है अर्थात् कोई वर्ण एक से अधिक बार
आता है तो उसे अनुप्रास अलंकार कहते हैं; जैसे –
तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।
यहाँ 'त' वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई है। अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

अन्य उदाहरण –

- रघुपति राघव राजाराम। पतित पावन सीताराम। ('र' वर्ण की आवृत्ति)

- चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में। (‘च’ वर्ण की आवृत्ति)
- मुदित महीपति मंदिर आए। (‘म’ वर्ण की आवृत्ति)
- मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो। (‘म’ वर्ण की आवृत्ति)
- सठ सुधरहिं सत संगति पाई। (‘स’ वर्ण की आवृत्ति)
- कालिंदी कूल कदंब की डारन। (‘क’ वर्ण की आवृत्ति)

2. यमक अलंकार-जब काव्य में कोई शब्द एक से अधिक बार आए और उनके अर्थ अलग-अलग हों तो उसे यमक अलंकार होता है; जैसे- तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती है।
उपर्युक्त पंक्ति में बेर शब्द दो बार आया परंतु इनके अर्थ हैं – समय, एक प्रकार का फल। इस तरह यहाँ यमक अलंकार है।

अन्य उदाहरण –

- कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
  या खाए बौराए नर, वा पाए बौराय।।
  यहाँ कनक शब्द के अर्थ हैं – सोना और धतूरा। अतः यहाँ यमक अलंकार है।
- काली घटा का घमंड घटा, नभ तारक मंडलवृंद खिले।
  यहाँ एक घटा का अर्थ है काली घटाएँ और दूसरी घटा का अर्थ है – कम होना।
- है कवि बेनी, बेनी व्याल की चुराई लीन्ही
  यहाँ एक बेनी का आशय-कवि का नाम और दूसरे बेनी का अर्थ बाला की चोटी है। अत: यमक अलंकार है।
- रती-रती सोभा सब रति के शरीर की।
  यहाँ रती का अर्थ है – तनिक-तनिक अर्थात् सारी और रति का अर्थ कामदेव की पत्नी है। अतः यहाँ यमक अलंकार है।
- नगन जड़ाती थी वे नगन जड़ाती है।
  यहाँ नगन का अर्थ है – वस्त्रों के बिना, नग्न और दूसरे का अर्थ है हीरा-मोती आदि रत्न।

3. श्लेष अलंकार- श्लेष का अर्थ है- चिपका हुआ। अर्थात् एक शब्द के अनेक अर्थ चिपके होते हैं। जब काव्य में कोई शब्द एक बार आए और उसके एक से अधिक अर्थ प्रकट हो, तो उसे श्लेष अलंकार कहते हैं; जैसे –

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष चून।।

यहाँ दूसरी पंक्ति में पानी शब्द एक बार आया है परंतु उसके अर्थ अलग-अलग प्रसंग में अलग-अलग हैं –

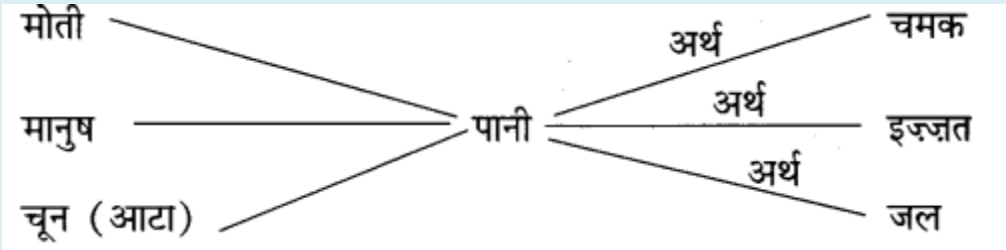

अतः यहाँ श्लेष अलंकार है

अन्य उदाहरण –

1. मधुबन की छाती को देखो, सूखी इसकी कितनी कलियाँ।
यहाँ कलियाँ का अर्थ है

- फूल खिलने से पूर्व की अवस्था
- यौवन आने से पहले की अवस्था

2. चरन धरत चिंता करत चितवत चारों ओर।
सुबरन को खोजत, फिरत कवि, व्यभिचारी, चोर।

3. यहाँ सुबरन शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं
कवि के संदर्भ में इसका अर्थ सुंदर वर्ण (शब्द), व्यभिचारी के संदर्भ में सुंदर रूप रंग और चोर के संदर्भ में इसका अर्थ सोना है।

4. मंगन को देख पट देत बार-बार है।
यहाँ पर शब्द के दो अर्थ है- वस्त्र, दरवाज़ा।

5. मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परे श्याम हरित दुति होय।।
यहाँ हरित शब्द के अर्थ हैं- हर्षित (प्रसन्न होना) और हरे रंग का होना।

(ब) अर्थालंकार
अर्थ में चमत्कार उत्पन्न करने वाले अलंकार अर्थालंकार कहलाते हैं। इस अलंकार में अर्थ के माध्यम से काव्य के सौंदर्य में वृद्धि की जाती है।
पाठ्यक्रम में अर्थालंकार के पाँच भेद निर्धारित हैं। यहाँ उन्हीं भेदों का अध्ययन किया जाएगा।

अर्थालंकार के भेद :

अर्थालंकर के पाँच भेद हैं –

1. उपमा अलंकार
2. रूपक अलंकार
3. उत्प्रेक्षा अलंकार

4. अतिशयोक्ति अलंकार

5. मानवीकरण अलंकार

1. उपमा अलंकार- जब काव्य में किसी वस्तु या व्यक्ति की तुलना किसी अत्यंत प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति से की जाती है तो
उसे उपमा अलंकार कहते हैं; जैसे-पीपर पात सरिस मन डोला।

यहाँ मन के डोलने की तुलना पीपल के पत्ते से की गई है। अतः यहाँ उपमा अलंकार है।
उपमा अलंकार के अंग-इस अलंकार के चार अंग होते हैं –

1. उपमेय-जिसकी उपमा दी जाय। उपर्युक्त पंक्ति में मन उपमेय है।

2. उपमान-जिस प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति से उपमा दी जाती है।

3. समान धर्म-उपमेय-उपमान की वह विशेषता जो दोनों में एक समान है।
उपर्युक्त उदाहरण में 'डोलना' समान धर्म है।

4. वाचक शब्द-वे शब्द जो उपमेय और उपमान की समानता प्रकट करते हैं।
उपर्युक्त उदाहरण में 'सरिस' वाचक शब्द है।
सा, सम, सी, सरिस, इव, समाना आदि कुछ अन्यवाचक शब्द है।

अन्य उदाहरण –

1. मुख मयंक सम मंजु मनोहर।
उपमेय – मुख
उपमान – मयंक
साधारण धर्म – मंजु मनोहर
वाचक शब्द – सम।

2. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की ढेरी थी।
उपमेय – बच्ची
उपमान – फूल
साधारण धर्म – कोमल
वाचक शब्द – सी

3. निर्मल तेरा नीर अमृत-सम उत्तम है।
उपमेय – नीर
उपमान – अमृत
साधरणधर्म – उत्तम
वाचक शब्द – सम

4. तब तो बहता समय शिला-सा जम जाएगा।
उपमेय – समय
उपमान – शिला
साधरण धर्म – जम (ठहर) जाना
वाचक शब्द – सा

5. उषा सुनहले तीर बरसती जयलक्ष्मी-सी उदित हुई।
उपमेय – उषा
उपमान – जयलक्ष्मी
साधारणधर्म – उदित होना
वाचक शब्द – सी

6. बंदउँ कोमल कमल से जग जननी के पाँव।
उपमेय – जगजननी के पैर
उपमान – कमल
साधारण धर्म – कोमल होना
वाचक शब्द – से

2. रूपक अलंकार-जब रूप-गुण की अत्यधिक समानता के कारण उपमेय पर उपमान का भेदरहित आरोप होता है तो उसे रूपक अलंकार कहते हैं।
रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान में भिन्नता नहीं रह जाती है; जैसे-चरण कमल बंदौं हरि राइ।
यहाँ हरि के चरणों (उपमेय) में कमल(उपमान) का आरोप है। अत: रूपक अलंकार है।

अन्य उदाहरण –

- मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता।
  मुनि के चरणों (उपमेय) पर कमल (उपमान) का आरोप।
- भजमन चरण कँवल अविनाशी।
  ईश्वर के चरणों (उपमेय) पर कँवल (कमल) उपमान का आरोप।
- बंद नहीं, अब भी चलते हैं नियति नटी के क्रियाकलाप।
  प्रकृति के कार्य व्यवहार (उपमेय) पर नियति नटी (उपमान) का अरोप।
- सिंधु-बिहंग तरंग-पंख को फड़काकर प्रतिक्षण में।
  सिंधु (उपमेय) पर विहंग (उपमान) का तथा तरंग (उपमेय) पर पंख (उपमान) का आरोप।
- अंबर पनघट में डुबो तारा-घट ऊषा नागरी।
  अंबर उपमेय) पर पनघट (उपमान) का तथा तारा (उपमेय) पर घट (उपमान) का आरोप।

3. उत्प्रेक्षा अलंकार-जब उपमेय में गुण-धर्म की समानता के कारण उपमान की संभावना कर ली जाए, तो उसे उत्प्रेक्षा अलंकार कहते हैं; जैसे –

कहती हुई यूँ उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
हिम कणों से पूर्ण मानों हो गए पंकज नए।।

यहाँ उत्तरा के जल (आँसू) भरे नयनों (उपमेय) में हिमकणों से परिपूर्ण कमल (उपमान) की संभावना प्रकट की गई है। अतः उत्प्रेक्षा अलंकार है।
उत्प्रेक्षा अलंकार की पहचान-मनहुँ, मानो, जानो, जनहुँ, ज्यों, जनु आदि वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।

अन्य उदाहरण –

- धाए धाम काम सब त्यागी। मनहुँ रंक निधि लूटन लागी।
  यहाँ राम के रूप-सौंदर्य (उपमेय) में निधि (उपमान) की संभावना।

- दादुर धुनि चहुँ दिशा सुहाई।
  बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ॥

यहाँ मेंढकों की आवाज़ (उपमेय) में ब्रह्मचारी समुदाय द्वारा वेद पढ़ने की संभावना प्रकट की गई है।

- देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निजनिधि पहिचाने॥
  यहाँ राम के रूप सौंदर्य (उपमेय) में निधियाँ (उपमान) की संभावना प्रकट की गई है।

- अति कटु वचन कहत कैकेयी। मानहु लोन जरे पर देई।
  यहाँ कटुवचन से उत्पन्न पीड़ा (उपमेय) में जलने पर नमक छिड़कने से हुए कष्ट की संभावना प्रकट की गई है।
- चमचमात चंचल नयन, बिच घूघट पर झीन।
  मानहँ सुरसरिता विमल, जल उछरत जुगमीन॥
  यहाँ घूघट के झीने परों से ढके दोनों नयनों (उपमेय) में गंगा जी में उछलती युगलमीन (उपमान) की संभावना प्रकट की गई है।

4. अतिशयोक्ति अलंकार – जहाँ किसी व्यक्ति, वस्तु आदि को गुण, रूप सौंदर्य आदि का वर्णन इतना बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए कि जिस पर विश्वास करना कठिन हो, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है; जैसे –
एक दिन राम पतंग उड़ाई। देवलोक में पहुँची जाई॥

यहाँ राम द्वारा पतंग उड़ाने का वर्णन तो ठीक है पर पतंग का उड़ते-उड़ते स्वर्ग में पहुँच जाने का वर्णन बहुत बढ़ाकर किया गया। इस पर विश्वास करना कठिन हो रहा है। अत: अतिशयोक्ति अलंकार।

अन्य उदाहरण –

- देख लो साकेत नगरी है यही
  स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।
  यहाँ साकेत नगरी की तुलना स्वर्ग की समृद्धि से करने का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है।

- हनूमान की पूँछ में लगन न पाई आग।
  सिगरी लंका जल गई, गए निशाचर भाग।
  हनुमान की पूँछ में आग लगाने से पूर्व ही सोने की लंका का जलकर राख होने का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है।

- देखि सुदामा की दीन दशा करुना करिके करुना निधि रोए।
  सुदामा की दरिद्रावस्था को देखकर कृष्ण का रोना और उनकी आँखों से इतने आँसू गिरना कि उससे पैर धोने के वर्णन में अतिशयोक्ति है। अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।

5. मानवीकरण अलंकार – जब जड़ पदार्थों और प्रकृति के अंग (नदी, पर्वत, पेड़, लताएँ, झरने, हवा, पत्थर, पक्षी) आदि पर मानवीय क्रियाओं का आरोप लगाया जाता है अर्थात् मनुष्य जैसा कार्य व्यवहार करता हुआ दिखाया जाता है तब वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है; जैसे –
हरषाया ताल लाया पानी परात भरके।
यहाँ मेहमान के आने पर तालाब द्वारा खुश होकर पानी लाने का कार्य करते हुए दिखाया गया है। अतः यहाँ मानवीकरण अलंकार है।

अन्य उदाहरण –

- हैं मसे भीगती गेहूँ की तरुणाई फूटी आती है।
  यहाँ गेहूँ तरुणाई फूटने में मानवीय क्रियाओं का आरोप है।

- यौवन में माती मटरबेलि अलियों से आँख लड़ाती है।
  मटरबेलि का सखियों से आँख लड़ाने में मानवीय क्रियाओं का आरोप है।

- लोने-लोने वे घने चने क्या बने-बने इठलाते हैं, हौले-हौले होली गा-गा धुंघरू पर ताल बजाते हैं।
  यहाँ चने पर होली गाने, सज-धजकर इतराने और ताल बजाने में मानवीय क्रियाओं का आरोप है।

- है वसुंधरा बिखेर देती मोती सबके सोने पर।
  रवि बटोर लेता है उसको सदा सवेरा होने पर।

यहाँ वसुंधरा द्वारा मोती बिखेरने और सूर्य द्वारा उसे सवेरे एकत्र कर लेने में मानवीय क्रियाओं का आरोप है।

अभ्यास-प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में निहित अलंकारों के नाम लिखिए –
(i) आए महंत बसंत।
(ii) सेवक सचिव सुमंत बुलाए।
(iii) मेघ आए बड़े बन-ठनके सँवर के।
(iv) पीपर पात सरिस मन डोला।
(v) निरपख होइके जे भजे सोई संत सुजान।
(vi) फूले फिरते हों फूल स्वयं उड़-उड़ वृंतों से वृंतों पर।
(vii) इस काले संकट सागर पर मरने को क्यों मदमाती?
(viii) या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी। मनहु रंक निधि लूटन लागी।
(ix) मरकत डिब्बे-सा खुला ग्राम।
(x) पानी गए न उबरै मोती, मानुष, चून।
(xi) सुनत जोग लागत है ऐसो ज्यों करुई ककड़ी।
(xii) हिमकर भी निराश कर चला रात भी आली।
(xiii) बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
(xiv) ना जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार।
(xv) कूड़ कपड़ काया का निकस्या।
(xvi) कोटिक ए कलधौत के धाम।
(xvii) तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती हैं।
(xviii) हाथ फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की ढेरी थी।
(xix) धाए काम-धाम सब त्यागी।
(xx) बारे उजियारो करै बढे अँधेरो होय।
(xxi) काली-घटा का घमंड घटा।
(xxii) मखमली पेटियों-सी लटकीं।
उत्तर:
(i) रूपक अलंकार
(ii) अनुप्रास अलंकार

(iii) मानवीकरण अलंकार
(iv) उपमा अलंकार
(v) अनुप्रास अलंकार
(vi) उत्प्रेक्षा अलंकार
(vii) रूपक अलंकार
(viii) श्लेष अलंकार
(ix) उपमा अलंकार
(x) श्लेष अलंकार
(xi) उत्प्रेक्षा अलंकार
(xii) मानवीकरण अलंकार
(xiii) अनुप्रास अलंकार
(xiv) रूपक अलंकार
(xv) अनुप्रास अलंकार
(xvi) अनुप्रास अलंकार
(xvii) यमक अलंकार
(xviii) उपमा अलंकार
(xix) उत्प्रेक्षा अलंकार
(xxx) श्लेष अलंकार
(xxi) यमक अलंकार
(xxii) उपमा अलंकार

2. नीचे कुछ अलंकारों के नाम दिए गए हैं। उनके उदाहरण लिखिए –
(i) उपमा अलंकार
(ii) उत्प्रेक्षा अलंकार
(iii) रूपक अलंकार
(iv) मानवीकरण अलंकार
(v) श्लेष अलंकार
(vi) यमक अलंकार
(vii) मानवीकरण अलंकार
(viii) अतिशयोक्ति अलंकार
(ix) अनुप्रास अलंकार
(x) यमक अलंकार
उत्तर:
(i) तब तो बहता समय शिला-सा जम जाएगा
(ii) सोहत ओढे पीत पट स्याम सलोने गात।
मनहुँ नील मणि शैल पर आतप पर्यो प्रभात॥
(iii) प्रीति-नदी में पाँव न बोरयो
(iv) हैं किनारे कई पत्थर पी रहे चुपचाप पानी। 88
(v) मंगन को देखो पट बार-बार हैं।
(vi) तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती है।
(vii) उषा सुनहले तीर बरसती जय लक्ष्मी-सी उदित हुई।
(viii) पानी परात के हाथ छुयो नहिं नैनन के जलसो पग धोए।
(ix) सठ सुधरहिं सतसँगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई।
(x) कहै कवि बेनी-बेनी व्याल की चुराई लीन्हीं।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए

1. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में निहित अलंकार भेद बताइए
(i) नयन तेरे मीन-से हैं।
(ii) मखमल की झुल पड़ा, हाथी-सा टीला।
(iii) आए महंत वसंत।
(iv) यह देखिए अरविंद से शिशु बंद कैसे सो रहे।
(v) दृग पग पोंछन को करे भूषण पायंदाज।
(vi) दुख है जीवन के तरुफूल।
(vii) एक रम्य उपवन था, नंदन वन-सा सुंदर
(viii) तेरी बरछी में बर छीने है खलन के।
(ix) चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में।
(x) अंबर-पनघट में डूबो रही घट तारा ऊषा नागरी।
(xi) मखमली पेटियाँ-सी लटकी, छीमियाँ छिपाए बीज लड़ी।
(xii) मज़बूत शिला-सी दृढ़ छाती।
(xiii) रघुपति राघव राजाराम।
(xiv) कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर बारौं।
(xv) कढ़त साथ ही ते, ख्यान असि रिपु तन से प्रान
(xvi) खिले हज़ारों चाँद तुम्हारे नयनों के आकाश में।
(xvii) घेर घेर घोर गगन धाराधर ओ।
(xviii) राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।
(xix) पानी गए न ऊबरै मोती मानुष चून
(xx) जो नत हुआ, वह मृत हुआ ज्यों वृंत से झरकर कुसुम।
उत्तर:
(i) उपमा अलंकार
(ii) उपमा अलंकार
(iii) रूपक अलंकार
(iv) उपमा अलंकार
(v) रूपक अलंकार
(vi) रूपक अलंकार
(vii) उपमा अलंकार
(viii) यमक अलंकार
(ix) अनुप्रास अलंकार
(x) रूपक एवं मानवीकरण अलंकार
(xi) उपमा अलंकार
(xii) उपमा अलंकार
(xii) अनुप्रास अलंकार
(xiv) अनुप्रास अलंकार
(xv) अतिशयोक्ति अलंकार
(xvi) रूपक अलंकार
(xvii) अनुप्रास अलंकार
(xviii) अतिशयोक्ति अलंकार
(xix) श्लेष अलंकार
(xx) उत्प्रेक्षा अलंकार

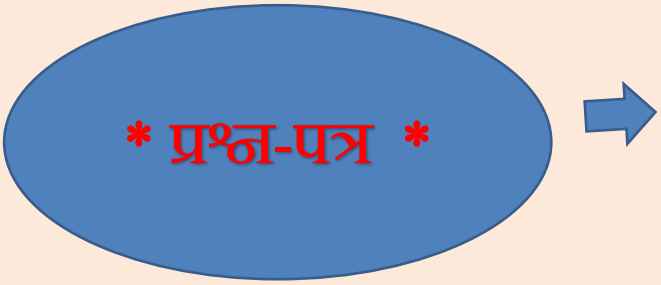
* प्रश्न-पत्र *

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र (2023-24)

कक्षा- 10वीं पूर्णांक- 80

विषय- हिन्दी समय- 3: 00 घंटे

सामान्य निर्देश :

(i) इस प्रश्नपत्र में दो खंड हैं- खंड 'क' और 'ख'। खंड-क में वस्तुपरक/बहुविकल्पीय और खंड-ख में वस्तुनिष्ठ/ वर्णनात्मक प्रश्न दिए गए हैं।

(ii) प्रश्नपत्र के दोनों खंडों में प्रश्नों की संख्या 17 है और सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार लिखिए।

(iii) खंड 'क' में कुल 10 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 49 है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए 40 उपप्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iv) खंड 'ख' में कुल 7 प्रश्न हैं, सभी प्रश्नों के साथ उनके विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार विकल्प का ध्यान रखते हुए सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड – 'क'

1.नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (1x5=5)

सुबुद्ध वक्ता अपार जनसमूह का मन मोह लेता है, मित्रों के बीच सम्मान और प्रेम का केन्द्रबिन्दु बन जाता है। बोलने का विवेक, बोलने की कला और पटुता व्यक्ति की शोभा है, उसका आकर्षण है। जो लोग अपनी बात को राई का पहाड़ बनाकर उपस्थित करते हैं, वे एक ओर जहाँ सुनने वाले के धैर्य की परीक्षा लिया करते है, वहीं अपना और दूसरे का समय भी अकारण नष्ट किया करते हैं। विषय से हटकर बोलने वालों से, अपनी बात को अकारण खींचते चले जाने वालों से तथा ऐसे मुहावरों और कहावतों का प्रयोग करने वालों से, जो उस प्रसंग में ठीक ही न बैठ रहे हों, लोग ऊब जाते हैं। वाणी का अनुशासन, वाणी का संयम और संतुलन तथा वाणी की मिठास ऐसी शक्ति है जो हर कठिन स्थिति में हमारे अनुकूल ही रहती है, तो मरने के पश्चात् भी लोगों को स्मृतियों में हमें अमर बनाए रहती है। हाँ, बहुत कम बोलना या सदैव चुप लगाकर बैठे रहना भी बुरा है। यह हमारी प्रतिभा और तेज को कुंद कर देता है। अतएव कम बोलो, सार्थक और हितकर बोलो। यही वाणी का तप है।

(क) व्यक्ति की शोभा और आकर्षण किसे बताया गया है?

(i) बोलने की पटुता (ii) सुनने की पटुता (iii) पढ़ने की पटुता (iv) कहने की पटुता

(ख) किस प्रकार के व्यक्तियों से लोग ऊब जाते हैं?

(i) अपनी बात अकारण खींचने वाले से (ii) विषय से हटकर बोलने वाले से

(iii) दोनों विकल्प सही हैं (iv) अपनी बात अकारण न खींचने वाले से

(ग) वाणी में अनुशासन और संयम बनाए रखने को क्या कहा गया है?

(i) वाणी का संतुलन (ii) वाणी की मिठास

(iii) वाणी की सार्थकता (iv) वाणी का तप

(घ) बहुत कम बोलने का क्या दुष्परिणाम होता है ?

(i) हमारी प्रतिभा और तेज़ कुंद हो जाता है। (ii) हमारी वाणी असंतुलित हो जाती है।

(iii) वाणी की मिठास अधिक हो जाती है। (iv) व्यक्ति वाचाल हो जाता है।

(ङ) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए—

कथन (A) : बोलने की कला और बोलने का विवेक व्यक्ति की शोभा है।

कारण (R) : जो व्यक्ति सुबुद्ध वक्ता होता है, वही सम्मानित होता है।

(i) कथन (A) गलत है किन्तु कारण (R) सही है

(ii) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं

(ii) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(iv) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

2. नीचे 2 पद्यांश दिए गए हैं। किसी । पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (1 x 5 = 5)

यदि आप इस पद्यांश का चयन करते हैं तो कृपया -पुस्तिका में लिखें कि आप प्रश्न संख्या 2 में दिए गए पद्यांश-1 पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख रहे हैं।

क्या रोकेंगे प्रलय मेघ ये क्या विद्युत घन-नर्तन,

मुझे न साथी रोक सकेंगे, सागर के गर्जन-तर्जन।

मैं अविराम पथिक अलबेला, रुके न मेरे कभी चरण,

शूलों के बदले फूलों का, किया न मैंने मित्र चयन।

मैं विपदाओं में मुस्काता, नव आशा के दीप लिए,

फिर मुझको क्या रोक सकेंगे, जीवन के उत्थान-पतन।

मैं अटका कब-कब विचलित में, सतत डगर मेरी संबल,

रोक सकी पगले कब मुझको, यह युग की प्राचीर निबल।

आंधी हो, ओले वर्षा हो, राह सुपरिचित है मेरी,

फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये जग के खंडन मंडन।

मुझे डरा पाए कब अंधड़, ज्वालामुखियों के कंपन,

मुझे पथिक कब रोक सके हैं, अग्निशिखाओं के नर्तन।

बढ़ता अविराम निरंतर, तन-मन में उन्माद लिए,

फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल-विद्युत नर्तन।

(क) 'क्या रोकेंगे प्रलय मेघ ये' पंक्ति में मेघ किसका प्रतीक है ?

(i) जीवन में आने वाली बाधाओं का (II) जीवन के विघ्नों का

(III) पथ से डिगाने वाली कठिनाइयों का (IV) सागर की गर्जना का

विकल्प

(i) कथन (II) सही है

(ii) कथन (I), (II) व (III) सही हैं।

(iii) कथन (I), (II) व (IV) सही हैं

(iv) कथन (I), (II), (III) व (IV) सही हैं

(ख) पद्यांश के अनुसार कवि ने हमेशा कौन-से रास्ते को चुना ?

(i) आसान रास्ते को (ii) संघर्षशील रास्ते को

(iii) पर्वतीय रास्ते को (iv) रेतीले रास्ते को

(ग) युग की प्राचीर किसे कहा गया है?

(i) युग की दीवारों को (ii) सागर की गर्जना को

(iii) संसार की बाधाओं को (iv) सांसारिक सुखों को

(घ) पद्यांश में कवि की कौन-सी विशेषता पता चलती है ?

(i) कवि साहसी और संघर्षशील है। (ii) कवि बाधाओं से घबरा जाता है।

(iii) कवि मुसीबत से भागता है। (iv) कवि लक्ष्य से भटक जाता है।

(ङ) 'उत्थान-पतन' में कौन-सा समास है?

(i) द्विगु समास (ii) द्वंद्व समास

(iii) अव्ययीभाव समास (iv) तत्पुरुष समास

अथवा

यदि आप इस पद्यांश का चयन करते हैं तो कृपया उत्तर-पुस्तिका में लिखें कि आप प्रश्न संख्या 2 में दिए गए पद्यांश-II पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख रहे हैं।

क्या करोगे अब ?

समय का

जब प्यार नहीं रहा सर्वसहा पृथ्वी का

आधार नहीं रहा

न वाणी साथ है

न पानी साथ है

न कही प्रकाश है स्वच्छ

जब सब कुछ मैला है आसमान

गंदगी बरसाने वाले

एक अछोर फैला है

कही चले जाओ

विनती नहीं है

वायु प्राणप्रद

आदमकद आदमी

सब जग से गायब है

(क) कवि ने धरती को कैसा बताया है?

(i) रत्नगर्भा (ii) आधारशिला

(iii) सर्वसहा (iv) माँ

(ख) 'आदमकद आदमी' से क्या तात्पर्य है ?

(i) मानवीयता से भरपूर आदमी (ii) ऊँचे कद का आदमी

(iii) सम्पूर्ण मनुष्य (iv) सामान्य आदमी

(ग) आसमान की तुलना किससे की गयी है?

(i) समुद्र से (ii) नीली झील से

(iii) पतंग से (iv) गंदगी बरसाने वाले थैले से

(घ) प्राणदान का क्या तात्पर्य है ?

(i) प्राणों को पूर्ण करने वाला (ii) प्राण प्रदान करने वाला

(iii) प्राणों को प्रणाम करने वाला (iv) प्राणों को छीन लेने वाला

(ङ) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए

कथन (A) : आज किसी को प्यार का समय नहीं है।

कथन (R) : ऐसे में व्यक्ति समय से कतराने लगता है|

(i) कथन (A) गलत है किन्तु कारण (R) सही है

(ii) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं

(iii) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है

(iv) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है

3. निम्नलिखित में से किन्ही चार प्रश्नों के लिए उचित विकल्प चुनिए- (1*4=4)

(i) 'न तो तुम वहाँ जा सके, न ही मैं।' इसका सरल वाक्य होगा-

(क) तुम और मैं दोनों ही वहाँ नहीं जा सके|

(ख) तुम भी वहाँ नहीं जा सके और मैं भी वहाँ नहीं सका।

(ग) यद्यपि तुम और मैं वहाँ जा सकते थे, फिर भी नहीं जा सके।

(घ) चूँकि तुम वहाँ नहीं जा सके, इसलिए मैं भी वहाँ नहीं जा सका।

(ii)'उसने कहा कि आज वह नहीं जाएगा।' रेखांकित उपवाक्य का भेद होगा-

(क) संज्ञा उपवाक्य (ख)विशेषण उपवाक्य

(ग) क्रियाविशेषण उपवाक्य (घ) आश्रित उपवाक्य

(iii) 'वर्षा होते ही बिजली चली गई।' वाक्य का मिश्र वाक्य में रूप होगा –

(क) वर्षा शुरु हुई और बिजली चली गई। (ख) बिजली चली गई वर्षा शुरू होते ही।

(ग) जैसे ही वर्षा शुरू हुई वैसे ही बिजली चली गई| (घ) वर्षा शुरू हुई क्योंकि बिजली चली गई|

(iv)निम्न वाक्यों में मिश्र वाक्य पहचानकर नीचे दिए गए सबसे सही विकल्प को चुनें –

कथन

(क)आप कह सकते थे कि यह गलती आपने नहीं की है।

(ख)यदि आप अपना पक्ष रखते,तो अवश्य ही निर्दोष सिद्ध होते ।

(ग)जब आपने गलती की ही नहीं, तो उसका दंड आपको क्यों मिलेगा।

(घ) चूँकि दोषी कोई और है इसलिए आप यह दोष अपने ऊपर मत लीजिए।

विकल्प

(1) केवल कथन (क) सही है।
(2) कथन (क) व (ख) सही है।
(3) कथन (ख) व (ग) सही है।
(4) कथन (क), (ख), (ग) व (घ) सही है|

(v) आश्रित उपवाक्य के कितने भेद हैं-

(क) एक (ख)तीन (ग) चार (घ) दो

(4) निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दें- (1*4=4)

(1) इनमें कर्तृवाच्य का उदाहरण हैं-

(क) चलो, अब घर चलें।

(ख) चलो, अब घर चला जाए|

(ग) कैरम के बाद अब शतरंज खेली जाए|

(घ) हमारे द्वारा शतरंज खेली जा सकती है।

(2) कॉलम 1 कॉलम 2

1) भारत द्वारा मैच जीत लिया गया। (i)कर्तृवाच्य

(2) गेंदबाजों ने मैच में प्रदर्शन किया। (ii)कर्मवाच्य

(3) विपक्षी बल्लेबाजों से क्रीज पर रूका नहीं जा सकता। (iii)भाववाच्य

विकल्प

(क) 1-ii, 2-i, 3-iii

(ख) 1-i, 2-iii, 3-ii

(ग) 1-ii, 2-iii 3-i

(iii) 'उससे रोया नहीं जाता।' वाक्य का कर्तृवाच्य में रूप होगा-

(क) वह नहीं रोता है। (ख) रोता नहीं है वह है|

(ग) रोता है वह| (घ) रोया नहीं जाता उससे|

(iv) वाच्य के कितने भेद हैं

(क) दो (ख) तीन (ग) एक (घ) चार

(v) 'उसके द्वारा कालीन बुना जाता है।' किस वाच्य का उदाहरण है?

(क) भाववाच्य (ख) कर्तृवाच्य (ग) कर्मवाच्य

5. निम्नलिखित में से किन्ही चार पद परिचय के प्रश्नों के लिए उचित विकल्प चुनिए- (1*4=4)

(i) यह पुस्तक मैंने तब खरीदी थी, जब मैं पंद्रह वर्ष का था।

(क) संकेतवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग

(ख)सार्वनामिक विशेषण,विशेष्य पुस्तक

(ग) निपात (घ) परिमाणवाचक विशेषण, विशेष्य-पुस्तक

(ii) वह आज विद्यालय नहीं गया क्योंकि वह बीमार था।

(क) क्रिया विशेषण अव्यय (ख) विस्मयादिबोधक अव्यय

(ग)समुच्चयबोधक अव्यय (घ) संबंधबोधक अव्यय

(iii) रात में देर तक बारिश होती रही-

(क) स्थानवाचक क्रियाविशेषण (ख) रीतिवाचक क्रियाविशेषण

(ग)कालवाचक क्रियाविशेषण (घ) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

(iv) हम उस कस्बे से गुजरे थे।

(क) सर्वनाम, उत्तमपुरुष, बहुवचन (ख) सर्वनाम, मध्यमपुरुष, बहुवचन

(ग) सर्वनाम, अन्यपुरूष, बहुवचन (घ) सर्वनाम, प्रश्नवाचक, बहुवचन

(v) अरे! वह इतना खुश कैसे है|

(क) संबंध बोधक अव्यय (ख) समुच्चयबोधक अव्यय

(ग) क्रियाविशेषण (घ) विस्मयादिबोधक अव्यय

6. अलंकार पर आधारित किन्हीं चार बहुविकल्पीय प्रश्नों के उतर दें- (1*4=4)

(1) "अर्थ बिना कब पूर्ण हैं, शब्द, सकल जग-काज।

अर्थ अगर आ जाए तो, ठाट बाट औ राज।" इस दोहे में प्रस्तुत अलंकार है-

(क) श्लेष (ख) उत्प्रेक्षा (ग) मानवीकरण (घ) अतिशयोक्ति

(ii) "एक दिवस सूरज ने सोची, छुट्टी ले लेने की बात| सोचा कुछ पल सकूँ मिलेगा, चलने दो धरती पर रात" में कौनसा अलंकार है?

(क) यमक (ख) श्लेष(ग) मानवीकरण (घ) उपमा

(iii) "बाण नहीं पहुँचे शरीर तक, शत्रु गिरे ही पहले ही भू पर" पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार हैं-

(क) श्लेष (ख) उत्प्रेक्षा (ग) अतिशयोक्ति (घ) मानवीकरण

(iv) 'कलियाँ दरवाजे खोल-खोल जब झुरमुट में मुस्काती हैं|" पंक्तियों में कौनसा अलंकार है?

(क) उत्प्रेक्षा (ख) मानवीकरण (ग) श्लेष (घ) अतिशयोक्ति

(v)"कैसे कलुषित प्राण हो गए।

मानो मन पाषाण हो गए।" में प्रयुक्त अलंकार हैं?

(क) श्लेष (ख) उत्प्रेक्षा

(ग) मानवीकरण (घ) अतिशयोक्ति

7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प चुनिए । (1 x 5 = 5)

पंद्रह दिन बाद फिर कस्बे से गुज़रे । कस्बे में घुसने से पहले ही ख्याल आया कि कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा। मास्टर बनाना भूल गया। ....क्योंकि . और कैप्टन मर गया। सोचा, आज वहाँ रुकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे ही खा लेंगे। लेकिन आदत से मजबूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ उठ गईं। कुछ ऐसा देखा कि चीखे, रोको ! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे । रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकते-न-रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज़-तेज़ क़दमों से मूर्ति की तरफ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गए। मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। हालदार साहब भावुक हैं। इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आई।

(क) हालदार साहब कितने दिन बाद कस्बे से गुज़रे ?

(i) दस दिन बाद (ii) पंद्रह दिन बाद

(iii) आठ दिन बाद (iv) ग्यारह दिन बाद

(ख) कस्बे में घुसने से पहले हालदार साहब के मन में क्या विचार आया?

(i) सुभाष की मूर्ति तो होगी पर उसकी आँखों पर चश्मा नहीं होगा।

(ii) सुभाष की मूर्ति तो होगी और आँखों चश्मा भी होगा।

(iii) सुभाष की मूर्ति कस्बे के हृदयस्थली पर नहीं होगी।

(iv) कैप्टन मर गया।

(ग) हालदार साहब ने ड्राइवर से क्या कहा ?

(i) आज वहाँ रुकना है। (ii) आज वहाँ पान नहीं खाएँगे।

(iii) आज वहाँ अटेंशन में खड़े हो जाएँगे। (iv) पान के लिए रुकना ।

(घ) हालदार साहब किसे देखकर भावुक हो गए ?

(i) पानवाले को (ii) जीप को

(iii) ड्राइवर को (iv) सरकंडे के चश्मे को

(ङ) नेताजी की मूर्ति कहाँ पर लगी हुई थी ?

(i) कस्बे की हृदयस्थली पर (ii) हालदार साहब के शहर में

(iii) पानवाले के पास (iv) चौक में

8. निम्नलिखित प्रश्नों के लिए उचित विकल्प चुनिए । (1 x 2 = 2)

(क) बालगोबिन भगत का बेटा कैसा था ?

(i) सुस्त और बोदा (ii) परिश्रमी

(iii) आलसी (iv) कामचोर

(ख) नवाब साहब ने कितने खीरे खरीदे थे ?

(i) एक (ii) तीन

(iii) दो (iv) चार

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प चुनिए । (1 x 5 = 5)

छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ?

क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता में मौन रहूँ?

सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म-कथा ?

अभी समय भी नहीं थकी सोई है मेरी मौन व्यथा ।

(क) कवि क्या नहीं लिखना चाहता ?

(i)आत्मकथा (ii) कहानी

(iii) कविता (iv) सन्देश

(ख) अपनी आत्मकथा को कवि ने भोली क्यों कहा है?

(i) क्योंकि उससे किसी का मार्गदर्शन नहीं हो सकता

(ii) क्योंकि वह बहुत छोटी है

(iii) क्योंकि वह दूसरों की बात सुनता है।

(iv) क्योंकि वह लक्ष्यहीन है

(ग) कवि अपनी कथा कहने के बजाय क्या करना चाहता है?

(i) कविता लिखना (ii) दूसरों को प्रेरणा देना

(iii) दूसरों की आत्मकथा सुनना (iv) अपनी आत्मकथा सुनाना

(घ) कवि स्वयं मौन रहना क्यों चाहता है?

(i) क्योंकि उसे बोलना नहीं है

(ii) क्योंकि उसे आत्मकथा नहीं सुनानी है।

(iii) क्योंकि वह अपने कष्टों को कुरेदना नहीं चाहता

(iv) क्योंकि लोगों से उसे बोलने को मना किया है

(ङ) यहाँ किस कवि की ओर संकेत किया गया है ?

(i) जयशंकर प्रसाद की (ii) नागार्जुन की

(iii) मंगलेश डबराल की (iv) ऋतुराज की

10. निम्नलिखित प्रश्नों के लिए उचित विकल्प चुनिए । (1 x 2 = 2)

(क) 'अट नहीं रही है' कविता में किसकी शोभा समा नहीं पा रही है?

(i) फागुन की (ii) फूलों की

(iii) वृक्षों की (iv) पत्तियों की

(ख) परशुराम का क्रोध बढ़ता हुआ देख लक्ष्मण को किसने संकेत से बोलने को मना किया ?

(i) विश्वामित्र ने (ii) जनक ने

(iii) राम ने (iv) सभासद ने

खण्ड – 'ख'

11.गद्य पाठों के आधार पर चार में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2*3=6)

(क) सच्चे अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है? संस्कृति पाठ के आधार तर्क सहित उत्तर दें।

(ख) मंगल ध्वनि किसे कहते हैं? बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

(ग) बाल गोबिन भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

(घ) 'लखनवी अंदाज' पाठ में नवाब साहब के माध्यम से नवाबी परंपरा पर व्यंग्य है। स्पष्ट कीजिए|

12.काव्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए| 2x3=6

(क) आत्मकथा लिखने के लिए किन गुणों की आवश्यकता होती है? कवि के लिए यह कार्य कठिन क्यों था?

(ख) उत्साह कविता में कौन विकल और उन्मन थे और क्यों?

(ग) कवि नागार्जुन ने छोटे बच्चे की मुस्कान को देखकर क्या कल्पना की है?

(घ)'क्रोध से बात और अधिक बिगड़ जाती है।' राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद कविता के आलोक में इस कथन की पुष्टि कीजिए।

13.पूरक पाठ्य-पुस्तक के आधार पर तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नो के उत्तर दें- (4*2=8)

(क) रचनाकार की भीतरी विवशता ही उसे लेखन के लिए मजबूर करती है और लिखकर ही रचनाकार उससे मुक्त हो पाता है। 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

(ख) गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया है?

(ग) लेखक भोलानाथ को उनके पिताजी द्वारा अपने साथ पूजा में बैठाने के पीछे क्या उद्देश्य रहा होगा?

14.निम्न मे से किसी एक विषय पर 120 शब्दों में सारगर्भित अनुच्छेद लिखें। 6

(क) साइबर युग, साइबर ठगी: सावधानियाँ एवं सुरक्षा उपाय

संकेत बिंदु - बढ़ते ऑनलाइन कार्य • साइबर ठगी की बढ़ती घटनाएँ ®सावधानियाँ ®इससे बचने के उपाय

(ख) दिव्यांगों की समस्याएं

संकेत बिंदु - *दिव्यांग कौन है *उनकी समस्याएँ *सरकार के प्रयास *समाज का दायित्व

(ग) दैव-दैव आलसी पुकारा

संकेत बिंदु - *प्रस्तावना *आलस्य का दुष्प्रभाव *कर्म का महत्त्व

15. प्लास्टिक की चीजों से हो रही हानि के बारे में किसी समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखकर अपने सुझाव दीजिए।

अथवा

रचित आपका मित्र है और उसने राष्ट्रीय स्तर पर खेल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त कर देश का नाम रोशन किया है, उसे बधाई देते हुए पत्र लिखिए। (5)

16. आप दुर्गापुर निवासी हेमलता जैन हैं। आंगनबाड़ी में सुपरवाइजर के पद के लिए लगभग 80 शब्दों में स्ववृत्त तैयार कीजिए ।

अथवा

यूनियन बैंक, महावीर नगर, जयपुर में आपका बचत खाता है। आपकी चैक बुक समाप्त हो गई है। बैंक के मैनेजर को नई चैक बुक जारी करने के लिए ई-मेल लिखिए। (5)

17. किसी दर्दनिवारक तेल के लिए लगभग 60 शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए ।

अथवा

सभी प्रदेशवासियों को होली के शुभ अवसर पर लगभग 80 शब्दों में एक शुभकामना सन्देश तैयार कीजिए । (4)

अंक योजना (2023-24)

कक्षा- 10वीं | पूर्णांक- 80

विषय- हिन्दी | समय- 3: 00 घंटे

सामान्य निर्देश:

(1) इस अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। इस प्रश्नपत्र में वस्तुपरक एवं वर्णनात्मक प्रश्न है। अतः अंक योजना में दिए गए वर्णनात्मक प्रश्नों के उत्तर-बिंदु अंतिम नहीं हैं ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं।

(2) यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दें, तो उन्हें अंक दिए जाएँ।

(3) समान त्रुटियों के लिए स्थान-स्थान पर अंक न काटे जाएँ।

(4) गुणवत्तापूर्ण, सटीक उत्तर पर शत प्रतिशत अंक देने में किसी प्रकार का संकोच न किया जाए।

(5) मूल्यांकन में 0 से 100 प्रतिशत अंकों का पैमाना स्वीकार्य है।

(6) मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक योजना में दिए गए निर्देशानुसार ही किया जाए।

खंड- क (वस्तुपरक / बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर)

प्र.क्रम. सं.	उत्तर	अंक विभाजन
प्रश्न 1.	अपठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न	1 x 5 = 5
(क)	i	1 अंक
(ख)	iii	1 अंक
(ग)	iv	1 अंक
(घ)	i	1 अंक
(ड.)	iii	1 अंक
प्रश्न 2.	अपठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न	1 x 5 = 5
(क)	ii	1 अंक
(ख)	ii	1 अंक
(ग)	iii	1 अंक
(घ)	i	1 अंक
(ड.)	ii	1 अंक

अथवा

(क)	iii	1 अंक
(ख)	i	1 अंक
(ग)	iv	1 अंक
(घ)	ii	1 अंक
(ड.)	ii	1 अंक

प्रश्न 3. 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित 1x4=4

(i)	क	1 अंक
(ii)	क	1 अंक
(iii)	ग	1 अंक
(iv)	घ	1 अंक
(v)	ख	1 अंक

प्रश्न 4. 'वाच्य ' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित 1x4=4

(i)	क	1 अंक
(ii)	क	1 अंक
(iii)	क	1 अंक
(iv)	ख	1 अंक
(v)	ग	1 अंक

प्रश्न 5. 'पद परिचय ' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित 1x4=4

(i)	ख	1 अंक
(ii)	ग	1 अंक
(iii)	ग	1 अंक
(iv)	क	1 अंक
(v)	घ	1 अंक

प्रश्न 6. 'अलंकार' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित 1x4=4

(i)	क	1 अंक

(ii)	ग	1 अंक
(iii)	ग	1 अंक
(iv)	ख	1 अंक
(v)	ख	1 अंक

प्रश्न 7.	पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न	1 x 5 = 5
(क)	ii	1 अंक
(ख)	i	1 अंक
(ग)	ii	1 अंक
(घ)	iv	1 अंक
(ड.)	i	1 अंक

प्रश्न 8.	गद्य पाठों पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न	1 x 2 = 2
(क)	i	1 अंक
(ख)	iii	1 अंक

प्रश्न 9.	पठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न	1 x 5 = 5
(क)	i	1 अंक
(ख)	i	1 अंक
(ग)	iii	1 अंक
(घ)	iii	1 अंक
(ड.)	i	1 अंक

प्रश्न 10.	पद्य पाठों पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न	1 x 2 = 2
(क)	i	1 अंक
(ख)	iii	1 अंक

खंड-ख (वर्णनात्मक प्रश्नों के संभावित संकेत एवं रचनात्मक लेखन पर आधारित प्रश्नों के मूल्यांकन बिंदु)

प्रश्न 11. गद्य पाठों पर आधारित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्द प्रति प्रश्न अपेक्षित

(दिए गए बिंदुओं में से शब्द सीमा के अनुरूप दो या तीन बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित) (2X3= 6)

(क) 'संस्कृत व्यक्ति' वह होता है, जिसमें अपनी बुद्धि तथा योग्यता के बल पर कुछ नया करने की क्षमता हो। उदाहरण के लिए न्यूटन। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। इस आधार पर न्यूटन संस्कृत मानव सिद्ध होते हैं क्योंकि उन्होंने कुछ नया सोचा और नवीन खोज कर डाली। 2 अंक

(ख) मांगलिक अवसरों पर वातावरण में पवित्रता व आनंद भरने के लिए वाद्ययंत्रों से बजाई जाने वाली ध्वनि मंगलध्वनि कहलाती है। शहनाई मंगलध्वनि का प्रमुख वाद्य है। बिस्मिल्ला खाँ ने अपनी साधना से शहनाई को साध लिया था। तन्मयता के साथ शहनाई बजाकर वातावरण को मंगलपूरित करने में उन्हें महारथ हासिल थी। इन विशेषताओं के कारण उन्हें मंगलध्वनि का नायक कहा जाता है। 2 अंक

(ग) बालगोबिन भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले नहीं छोड़ना चाहती थी, क्योंकि वह जानती थी कि वे किसी के सामने कभी हाथ नहीं फैलाते। उसे चिन्ता थी कि उसके जाने के बाद कौन उनकी देखभाल करेगा, कौन उन्हें खाना देगा और कौन बीमारी में उनकी सेवा करेगा। 2 अंक

(घ) 'लखनवी अंदाज' पाठ के द्वारा लेखक ने पतनशील सामंती वर्ग पर व्यंग्य किया है। ऐसे लोगों के लिए जीवन की वास्तविकता से दूर रहकर कृत्रिमता को अपनाना बड़े ही गर्व की बात होती है। वास्तव में यह अनुचित है। खीरे की सुगन्ध मात्र से तृप्ति होना दिखावा ही है। इससे उनका सामंती होना नहीं, बल्कि पतनशीलता की ओर अग्रसर होना झलकता है। 2 अंक

प्रश्न 12. पद्य पाठों पर आधारित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्द प्रति प्रश्न अपेक्षित

(दिए गए बिंदुओं में से शब्द सीमा के अनुरूप दो या तीन बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित) (2x3=6)

(क) आत्मकथा लिखने के लिए व्यक्तित्व की विशालता,साहस और ईमानदारी की आवश्यकता होती है|लेखक के अन्दर ये गुण तो हैं लेकिन उन्हें लगता था कि उन्होंने इतने बड़े कार्य नहीं किए कि लोग उनकी आत्मकथा से कुछ प्रेरणा लें| 2 अंक

(ख)उत्साह कविता में अधिक गर्मी से धरती तप्त थी|यहाँ के लोग गर्मी से विकल और अनमने थे|ताप और गर्मी के कारण तप्त,प्यासे जनमानस को बादलों का ही सहारा था| 2 अंक

(ग)कवि ने छोटे बच्चे की मुस्कान को देखकर कल्पना की है कि उसकी मुस्कान मृतक प्राणी में भी जीवन का संचालन कर देती है| 2 अंक

(घ)क्रोध से बात और बिगड़ जाती है|प्रत्युतर में विपक्षी भी कटु व व्यंग्य वचन सुनाता है|पाठ में परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने भी उनकी अवस्था व पद को ध्यान न रखकर उन्हें कठोर उत्तर दिए| 2 अंक

प्रश्न 13. पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्द प्रति प्रश्न अपेक्षित

(दिए गए बिंदुओं में से शब्द सीमा के अनुरूप चार या पाँच बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित) (4x2=8)

(क) भीतरी विवशता लेखन के लिए मजबूर करती है, जो आंतरिक अनुभूति से उत्पन्न होती है। किसी घटना विशेष का अनुभव जब घनीभूत होता है, तब मन में संवेदनशीलता अकुलाती है और यही अकुलाहट अभिव्यक्ति का आधार बनती है। अनुभव, आंतरिक अनुभूति, विवशता, संवेदना के बाद पृष्ठों पर कुछ उतरता है, बाहरी दबाव की अपेक्षा लेखन के लिए आंतरिक अनुभूति कहीं अधिक प्रभावी है। लेखक ने हिरोशिमा की विभीषिका को पत्थर पर उतरी मनुष्य की छाया से महसूस किया और इसी अनुभूति के घनीभूत होते ही हिरोशिमा पर कविता लिख दी। 4 अंक

(ख) गंतोक एक ऐसा पर्वतीय प्रदेश है जिसे मेहनतकश लोगों ने अपनी मेहनत से अधिक सुन्दर और सुरम्य बना दिया है। वहाँ के निवासी बहुत ही परिश्रमी हैं। पुरुषों और महिलाओं के साथ-साथ वहाँ के बच्चे भी मेहनती हैं। विद्यालय से आकर वे भी अपनी माँ के साथ काम करते हैं इसलिए गंगतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा गया है। 4 अंक

(ग) लेखक के अनुसार भोलानाथ के पिताजी धार्मिक प्रवृत्ति वाले थे। वे अपने बेटे में अच्छे संस्कार डालना चाहते थे। उनके मन में ईश्वर के प्रति आस्था, विश्वास और श्रद्धा के भाव वे बचपन से ही जगाना चाहते थे । इसलिए वह उन्हें नहला-धुलाकर अपने साथ पूजा में बिठा लेते थे और फिर उन्हें साथ लेकर मछलियों को दाना डालने ले जाते थे। 4 अंक

प्रश्न 14.दिए गए तीन अनुच्छेदों में से किसी एक विषय पर संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लेखन (अनुच्छेद लेखन हेतु मूल्यांकन बिंदु) 6x1=6

विषयवस्तु	4 अंक
भाषा	1 अंक
प्रस्तुति	1 अंक

प्रश्न 15.दिए गए दो औपचारिक व अनौपचारिक पत्रों में से किसी एक विषय पर 100 शब्दों में पत्र लेखन (औपचारिक व अनौपचारिक पत्र हेतु मूल्यांकन बिंदु) 5x1=5

आरंभ व अंत की औपचारिकताएँ	1 अंक
विषयवस्तु	2 अंक
भाषा	1 अंक
प्रस्तुति	1 अंक

प्रश्न 16.दिए गए स्ववृत्त (बायोडाटा) व औपचारिक ई-मेल लेखन में से किसी एक विषय पर 80 शब्दों में लेखन स्ववृत्त (बायोडाटा) व औपचारिक ई-मेल लेखन हेतु मूल्यांकन बिंदु 5×1=5

प्रारूप	2 अंक
विषयवस्तु	2 अंक
भाषा	1 अंक

प्रश्न 17.दिए गए विज्ञापन लेखन व संदेश लेखन में से किसी एक विषय पर 60 शब्दों में लेखन (विज्ञापन लेखन व संदेश लेखन हेतु मूल्यांकन बिंदु) 4x1=4

विषयवस्तु	2 अंक
भाषा	1 अंक
प्रस्तुति	1 अंक

केन्द्रीय विद्यालय संगठन पटना संभाग

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र (2023-24)

कक्षा- 10वीं पूर्णांक- 80

विषय- हिन्दी समय- 3: 00 घंटे

निर्देशानुसार सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए /

<u>अपठित बोध</u> (10x1=10 अंक)

1. अमृता शेरगिल की आँकी हुई आकृतियों में एक तराश है। उन्हें बड़े प्रेम, बड़ी सावधानी और बड़ी लगन से बनाया गया है और उनमें रंग इस प्रकार से भरे गए हैं कि वे मन की बात भी कह सकें। इसीलिए उनके हर चित्र में, चित्र के आत्मा की आभा—सी है। अमृता शेरगिल हमारे पुराने मिनिएचर चित्रों से भी प्रभावित हुई, खासतौर पर, बसोहली शैली के चित्रों से। बसोहली, पहाड़ी मिनिएचर की चित्रों की एक शाखा है। इन चित्रों में रंगों की एक उजास होती है और उजास क्या है ? वही न, जो बिलकुल सुबह के समय होती है। जब अँधेरा फटने लगता है, सूरज आसमान से झाँकता है और चीजें खिल उठती हैं क्योंकि उन पर रोशनी आकर बैठ जाती हैं। अमृता शेरगिल का एक और प्रसिद्ध चित्र है - 'ब्रह्मचारी'। इसमें दक्षिण भारत के कुछ युवकों को आल्थी–पाल्थी मारकर बैठे हुए दिखाया गया है। उनके चेहरे पर एक तेज़ है और समूचा चित्र एक उजास से भरा हुआ है। अमृता शेरगिल हर चित्र बनाते समय न जाने कितनी चीजों का ध्यान रखती थीं। एक चित्र में उन्हें हाथी का अंकन करना था। वह उसे आँकती, उससे पहले सराया (गोरखपुर) में उन्होंने अपने सामने कई हाथियों को चला-फिराकर कई बार देखा था, ताकि वह हाथी के चलने-फिरने, उठने-बैठने, सूँड़ हिलाने, आदि की हर मुद्रा को भली-भाँति समझ लें। जब वह सराया से शिमला जातीं तो रेल में बैठी हुई, खेतों-मैदानों, किसान-मजदूरों, पेड़-पौधों और गर्मियों में तपती हुई धरती को निहारती हुई जातीं। हमारे यहाँ जब धूप में चीजें तपने लगती हैं तो उनमें बसे हुए रंग भी मानो तप उठते हैं। यह हमारी जलवायु की विशेषता है, जो यूरोप की कुहरीली-बर्फीली जलवायु से कई मामलों में भिन्न है।

(i) अमृता शेरगिल के चित्रों में निहित है- कथन पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए-

कथन: (i) चित्र की आत्मा की आभा (ii) रंगों की एक उजास

(iii) रंगों में विविधता (iv) चित्रों में आत्मा का प्रकट अंकन

विकल्प: (क) कथन (i) सही है। (ख) कथन (i) और (ii) सही हैं।

(ग) कथन (ii) और (iii) सही हैं। (घ) कथन (iii) और (iv) सही हैं।

(ii) भारत आकर अमृता किससे प्रभावित हुई ?

(क) भारत की प्रकृति से (ख) पुराने मिनिएचर चित्रों से

(ग) भारत की संस्कृति से (घ) अपने भारतीय मित्रों से

(iii) बसोहली है-

(क) कश्मीरी मिनिएचर चित्रों की एक शाखा (ख) विदेशी मिनिएचर चित्रों की एक शाखा

(ग) पहाड़ी मिनिएचर चित्रों की एक शाखा (घ) इनमें से कोई नहीं

(iv) हाथियों का चित्र बनाने से पहले उन्होंने क्या किया?

(क) हाथियों को पास से छू कर देखा (ख) हाथियों को खाना खिलाकर देखा

(ग) हाथियों को सुलाकर देखा (घ) हाथियों को कई बार चलाकर देखा

(v) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए-

कथन (A) : अमृता शेरगिल की आँकी हुई आकृतियों में एक तराश है।

कारण (R) : उन्हें बड़े प्रेम, बड़ी सावधानी और बड़ी लगन से बनाया गया है।

(क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।

(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

छिप=छिप अश्रु बहाने वालो !
मोती व्यर्थ लुटाने वालो !
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।
सपना क्या है? नयन-सेज पर
सोया हुआ आँख का पानी,
और टूटना है उसका ज्यों
जागे कच्ची नींद जवानी।
गीली उमर बनाने वालो !
डूबे बिना नहाने वालो !
कुछ पानी के बह जाने से सावन नहीं मरा करता है।
माला बिखर गई तो क्या है?
खुद ही हल हो गई समस्या।
आँसू गर नीलाम हुए तो
समझो पूरी हुई समस्या।
रूठे दिवस मनाने वालो !
फटी कमीज़ सिलाने वालो !
कुछ दीयों के बुझ जाने से आंगन नहीं मरा करता है।
खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी
जैसे रात उतार चाँदनी
पहने सुबह धूप की धोती।
वस्त्र बदलकर आने वालो !
चाल बदलकर जाने वालो !
चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।
कितनी बार गगरियाँ फूटी
शिकन न आई पर पनघट पर
कितनी बार किश्तियों डूबीं
चहल-पहल वैसी है तट पर
तम की उमर बढ़ने वालो !
लौ की आयु घटाने वालो !
लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है।
लूट लिया माली ने उपवन
लुटी न लेकिन गंध फूल की
तूफानों तक ने छेड़ा पर
खिड़की बंद न हुई धूल की।
नफरत गले लगाने वालो !
सब पर धूल उड़ाने वालो !
कुछ मुखड़ों की नाराजी से दर्पण नहीं मरा करता है।

(i) इस कविता के केन्द्रीय भाव है-

(क) कवि ने आलसी लोगों को ललकारा है। (ख)कवि ने असफलता से घबराए लोगों को सांत्वना दिया है |

(ग) कवि ने व्यर्थ मोती लुटाने वालों को ललकारा है। (घ) कवि ने वस्त्र बदलकर आने वालों को ललकारा है।

(ii) कवि ने सपनों के बारे में कहा है कि ..... |

(क) सपने बहुत अच्छे होते हैं। (ख) सपने बहुत डरावने होते हैं।

(ग) सपने आँखों में ही सोए रहते हैं। (घ) सपने आँख खुलते ही नष्ट हो जाते हैं।

(iii) 'दीयों के बुझ जाने' से कवि का तात्पर्य है-

(क) दीयों के बुझने से अँधेरा हो जाता है। (ख) तेज़ हवा से दीए बुझ जाते हैं।

(ग) आशा की किरणों के नष्ट हो जाने से जीवन के रास्ते समाप्त नहीं होते।

(घ) दीयों के बुझने से निराश नहीं होना चाहिए।

(iv) 'खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर, केवल जिल्द बदलती पोथी' इस पंक्ति के माध्यम से कहा गया है-

(क) संसार के सभी पदार्थ नश्वर हैं, लेकिन आत्मा अमर है। (ख) किताबों की जिल्द बदल जाती हैं।

(ग) जिल्दें बदलने से किताबें नहीं फटतीं। (घ) संसार में कुछ भी नष्ट नहीं होता।

(v) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए-

कथन (A) : कवि ने तम और लौ की चर्चा उम्र बढ़ाने के लिए की है।

कारण (R) : क्योंकि मनुष्य आजकल गलत कार्यों में संलिप्त होकर स्वयं का नाश कर रहा है।

(क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत है।

(ग) कथन (A) सही है, और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

अथवा ,

विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं
केवल इतना हो (करुणामय)
कभी न विपदा में पाऊँ भय।
दुःख-ताप से व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही
पर इतना होवे (करुणामय)
दुख को मैं कर सकूँ सदा जय।।

कोई सहायक न मिले
तो अपना बल-पौरुष न हिले
हानि उठानी पड़े जगत में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ क्षय।
मेरा त्राण करो अनुदिन तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं
बस इतना होवे (करुणामय)
तरने की हो शक्ति अनामय।।

मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।
केवल इतना रखना अनुनय
वहन कर सकूँ इसको निर्भय
नतशिर होकर सुख के दिन में
तब मुख पहचानूँ छिन-छिन में।
दुख- रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही
उस दिन ऐसा हो (करुणामय),
तुम पर करूँ नहीं कुछ संशय।।

(i) कवि भगवान से क्या माँग रहे हैं?

(क) बहुत अधिक धन (ख) बहुत सारा सुख (ग) बहुत बड़ा घर (घ) कष्ट को सहने की शक्ति

(ii) 'दुख को मैं कर सकूँ सदा जय' - कथन पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए-

कथन: (i) दुख में स्वयं हार जाऊँ (ii) दुख में विजय प्राप्त कर सकूँ

(iii) दुख पर संशय करना (iv) दुख को सहन कर सकूँ

विकल्प: (क) कथन (i) और (ii) सही हैं। (ख) कथन (ii) और (iii) सही हैं।

(ग) कथन (ii) और (iv) सही हैं। (घ) कथन (i) और (iv) सही हैं।

(iii) सुख के दिनों में भी कवि क्या करना चाहते हैं?

(क) सिर झुकाकर ईश्वर के सामने प्रार्थना (ख) ईश्वर को भूलना

(ग) ईश्वर को याद न करना (घ) ईश्वर को सदा स्मरण रखना

(iv) कवि ईश्वर से कष्टों से बचाने की प्रार्थना नहीं करते क्योंकि ..... दिए गए कथनों को पढ़कर सबसे सही विकल्प चुनिए-

कथन: (i) वे कठोर हैं। (ii) वे निडर हैं।

(iii) वे उनका सामना स्वयं करना चाहते हैं। (iv) वे अपने को लघु मानते हैं।

विकल्प: (क) कथन (i) सही है। (ख) केवल कथन (iii) सही है।

(ग) कथन (i) और (ii) सही हैं। (घ) कथन (ii) और (iv) सही हैं।

(v) कवि दुख में सांत्वना के स्थान पर क्या माँग रहे हैं?

(क) निडरता (ख) धन (ग) आशीर्वाद (घ) सुख-संपत्ति

व्याकरण बोध (16x1=16अंक)

3. निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) वह कहानी ऐसी-वैसी नहीं, बल्कि बहुत रोचक थी। इसका सरल वाक्य होगा-

(क) वह कहानी ऐसी-वैसी नहीं थी, वह तो बहुत रोचक थी।

(ख) वह कहानी ऐसी-वैसी नहीं है, क्योंकि वह बहुत रोचक थी।

(ग) वह कहानी ऐसी-वैसी न होकर बहुत रोचक थी।

(घ) वह कहानी बहुत रोचक थी इसलिए वह ऐसी-वैसी नहीं थी।

(ii) मित्रों के बुलाने पर मैं अपना काम छोड़कर भी खेलने चल देता था। इसका संयुक्त वाक्य होगा-

(क) जब मित्र मुझे बुलाते थे, तब मैं अपना काम छोड़कर खेलने चल देता था।

(ख) मित्र बुलाते थे और मैं अपना काम छोड़कर भी खेलने चल देता था।

(ग) मित्रों के बुलाने पर में अपना काम छोड़कर खेलने चल देता था।

(घ) जब-जब मेरे मित्र मुझे बुलाते, तब-तब में अपना काम छोड़कर खेलने चला गया।

(iii) निम्नलिखित वाक्यों में मिश्र वाक्य पहचानकर नीचे दिए गए सबसे सही विकल्प को चुनिए-

(i) वहाँ एक छोटा-सा गाँव था, जिसके चारों ओर घना जंगल था।

(ii) माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे परिश्रमशील बनें।

(iii) जैसे ही बुद्धन ने किवाड़ खुलने की आवाज़ सुनी, वह चौंका।

(iv) जब चातक थोड़ी देर चुप रहा, तब वह बोला।

विकल्प: (क) केवल कथन (ii) सही है। (ख) कथन (i) तथा (ii) सही हैं।

(ग) कथन (iii) तथा (iv) सही हैं। (घ) कथन (i), (ii), (iii) तथा (iv) सही हैं

(iv) कॉलम-I को कॉलम-II के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम-I	कॉलम-II
1. वह पढ़ने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसका ध्यान नहीं था।	(i) मिश्र वाक्य
2. वार्षिक समारोह में मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में अच्छी-अच्छी बातें बताई।	(ii) संयुक्त वाक्य
3. उसकी मोटर साइकिल ऐसे चलती है, जैसे हवाई जहाज़ |	(iii) सरल वाक्य

विकल्प: (क) 1 – (iii), 2 – (i), 3 – (ii) (ख) 1 – (ii), 2 – (iii), 3 – (i)

(ग) 1 – (i), 2 – (ii), 3 – (iii) (घ) 1 – (ii), 2 –(i), 3 – (iii)

(v) कॉलम-1 को कॉलम-II के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम-I	कॉलम-II
1. मेरा उद्देश्य है कि मैं मनुष्य मात्र की सेवा करूँ।	(i) क्रिया-विशेषण आश्रित उपवाक्य
2. जब वह यहाँ आया, राम सो रहा था।	(ii) विशेषण आश्रित उपवाक्य
3. मैंने एक व्यक्ति को देखा, जो बहुत लंबा था।	(iii) संज्ञा आश्रित उपवाक्य

विकल्प: (क) 1 – (iii), 2 – (ii), 3 – (i) (ख) 1 – (ii), 2 – (iii), 3 – (i)

(ग) 1 – (iii), 2 – (i), 3 – (ii) (घ) 1 – (i), 2 –(ii), 3 – (iii)

(vi) निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य सरल वाक्य नहीं है ?

(क) अंतरा अपने विद्यालय नहीं जाने के बारे में बता रही थी |

(ख) अंतरा विद्यालय न जाने के कारण पर बात कर रही थी |

(ग) अंतरा विद्यालय नहीं गई, पर क्यों, यह पता नहीं |

(घ) अंतरा ने किसी को अपने विद्यालय न जाने के बारे में नहीं बताया |

4. निर्देशानुसार 'वाच्य' पर किन्हीं **चार** आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) आइए खेलते हैं। इसका भाववाच्य होगा-

(क) आइए, खेलेंगे। (ख) आइए, अब खेला जाए।

(ग) आइए, अब खेलेंगे (घ) आइए, खेला जाए।

(ii) चोर के पकड़े जाने पर पुलिस उसे बहुत पीटेंगी। इसका कर्मवाच्य होगा-

(क) चोर पकड़ा जाएगा और पुलिस उसे बहुत पढ़ेगी।

(ख) जब चोर पकड़ा जाएगा, तब पुलिस द्वारा उसे पीटा जाएगा।

(ग) चोर के पकड़ते ही पुलिस उसे बहुत पीटेगी।

(घ) चोर के पकड़े जाने पर पुलिस द्वारा उसे बहुत पीटा जाएगा।

(iii) सचिन द्वारा अनेक शानदार पारियाँ खेलकर क्रिकेट प्रेमियों का दिल जीता गया है। इसका कर्तृवाच्य होगा-

(क) सचिन अनेक शानदार पारियाँ खेलेगा।

(ख) सचिन से अनेक शानदार पारियाँ खेली जाएँगी और क्रिकेट प्रेमियों का दिल जीता जाएगा।

(ग) सचिन ने अनेक शानदार पारियाँ खेलकर क्रिकेट प्रेमियों का दिल जीता है।

(घ) सचिन अनेक शानदार पारियाँ खेलता है फिर क्रिकेट प्रेमियों का दिल जीत लेता है।

(iv) इनमें भाववाच्य का उदाहरण है-

(i) शत्रुघ्न से हँसा नहीं गया। (ii) पक्षी उड़ते हैं।

(iii) घायल चल नहीं सकता। (iv) बच्चे हँसेंगे।

विकल्प: (क) केवल कथन (i) सही है। (ख) कथन (i) तथा (ii) सही हैं।

(ग) कथन (iii) तथा (iv) सही हैं। (घ) कथन (ii), (iii) और (iv) सही हैं।

(v) कॉलम I को कॉलम II के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम-1	कॉलम-II
1. नेताजी द्वारा देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया गया।	(i) कर्तृवाच्य
2. भारत सरकार ने साक्षरता के लिए करोड़ों रुपये खर्च किए।	(ii) कर्मवाच्य
3. पिताजी से बैठा नहीं जा सकता।	(iii) भाववाच्य

विकल्प: (क) 1 – (ii), 2 – (i), 3 – (iii) (ख) 1 – (iii), 2 – (ii), 3 – (i)

(ग) 1 – (i), 2 – (ii), 3 – (iii) (घ) 1 – (iii), 2 –(i), 3 – (ii)

5. निम्नलिखित में किन्हीं **चार** प्रश्नों में वाक्यों के रेखांकित अंशों के पद-परिचय का सही विकल्प चुनिए-

(i) <u>उसने</u> संपूर्ण ग्रंथ पढ़ लिया।

(क) उसने- पुरुषवाचक सर्वनाम, बहुवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक |

(ख) उसने- पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।

(ग) उसने - निजवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।

(घ) उसने - पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक

(ii) वह <u>बाजार से</u> गरम पूड़ियाँ ला रहा है।

(क) बाज़ार से - जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, करण कारक |

(ख) बाजार से - व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, अपादान कारक।

(ग) बाज़ार से - जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, अपादान कारक।

(घ) बाज़ार से -- भाववाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, अपादान कारके।

(iii) आनंद बहुत भाग्यशाली है।

(क) भाग्यशाली - गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, 'आनंद' विशेष्य का विशेषण।

(ख) भाग्यशाली - गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, पुल्लिंग, 'आनंद' विशेष्य का विशेषण।

(ग) भाग्यशाली - गुणवाचक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, 'आनंद' विशेष्य का विशेषण |

(घ) भाग्यशाली - गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, 'बहुत' विशेष्य का विशेषण।

(iv) बच्चा हंस रहा है।

(क) हँस रहा है - अकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग, भूतकाल |

(ख) हँस रहा है - अकर्मक क्रिया, बहुवचन, पुल्लिंग, वर्तमानकाल।

(ग) हंस रहा है - अकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग, वर्तमानकाल |

(घ) हँस रहा है - सकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग, वर्तमानकाल।

(v) बच्चे घर में आराम कर रहे हैं।

(क) बच्चे- जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।

(ख) बच्चे जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।

(ग) बच्चे - जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्म कारक।

(प) बच्चे - जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक |

6. निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच बहुविकल्पीय प्रश्नों में से किन्हीं **चार प्रश्नों** के उत्तर दीजिए-

(i) "एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास " इन काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार है-

(क) उत्प्रेक्षा (ख) मानवीकरण

(ग) श्लेष (घ) अतिशयोक्ति

(ii) "सोहत ओढे पीत पट, स्याम सलोने गात। मनो नीलमीण सैल पर, आप परयौ प्रभात।" इन काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार है-

(क) उत्प्रेक्षा (ख) मानवीकरण

(ग) अतिशयोक्ति (घ) श्लेष

(iii) "एक साथ रघु ने पैरों से चाँपा अविकल। पितृ-दत्त सिंहासन और सकल अरिमंडल ॥" इन काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार है-

(क) मानवीकरण (ख) उत्प्रेक्षा

(ग) अतिशयोक्ति (घ) श्लेष

(iv) "चिरजीवौ जोरी जुरे, क्यों न स्नेह गंभीर। को घटि या वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।" इन काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार है-

(क) अतिशयोक्ति (ख) श्लेष

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) मानवीकरण

(v) "जगी वनस्पतियाँ अलसाई, मुंह धोया शीतल जल से" इन काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार है-

(क) श्लेष (ख) उत्प्रेक्षा

(ग) मानवीकरण (घ) अतिशयोक्ति

साहित्य

7. इन पठित काव्यांशों के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर दिए गए विकल्पों से चुनें -

5x1=5

मिला कहाँ वह सुख जिसका में स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।
जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में |
उसकी स्मृति पाथेय बनी थके पथिक की पंथा की।
सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की ?

(i) कवि की प्रेयसी के कपोलों की क्या विशेषता थी?

(क) अत्यंत गोल तथा कालिमा से भरपूर (ख) अत्यंत सुंदर व लालिमा लिए हुए

(ग) गोरे तथा सुंदर (घ) गुलाबी तथा गोलमटोल

(ii) कवि स्मृति ताज़ा कर रहे हैं?

(क) अपनी माँ की स्मृति को (ख) अपनी पत्नी की स्मृति को

(ग) अपने मित्रों की स्मृति को (घ) अपनी प्रेयसी की स्मृति को

(iii) कवि ने थका पथिक किसे कहा है?

(क) स्वयं को (ख) यात्री को

(ग) प्रेयसी को (घ) अपनी यादों को

(iv) कवि शेष जीवन यात्रा किसके सहारे करना चाहते हैं ?

(क) अपने मित्रों के सहारे (ख) अपने सपनों के सहारे

(ग) प्रेयसी की स्मृतियों के सहारे (घ) अपने सुखों के सहारे

(v) काव्यांश में किस बात को सच्चाई के साथ अभिव्यक्त किया गया है ?

(क) प्रेयसी की सुंदरता को (ख) कवि के सपनों को

(ग) कवि के जीवन के यथार्थ और अभावों को (घ) जीवन की यात्रा को

8. (i) गोपियों ने 'व्याधि' और 'करुई ककरी' किसे कहा है ?

1

(क) उद्धव के ज्ञान और योग के संदेश को। (ख) बीमारी और कड़वी ककड़ी को

(ग) उद्धव को (घ) व्रजवासियों को

(ii) 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' किस ग्रंथ से उद्धृत है ?

1

(क) रामायण (ख) श्रीरामचरितमानस (ग) उत्तररामचरित (घ) कवितावली

9. इस पठित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर दिए गए विकल्पों से चुनें –

5x1=5

भादो की वह अंधेरी अधरतिया। अभी, थोड़ी ही देर पहले मुसलधार वर्षा खत्म हुई है। बादलों की गरज, बिजली की तड़प में आपने कुछ नहीं सुना हो, किंतु अब झिल्ली की अंकार या दादुरों की टर्र-टर्र बालगोविन भगत के संगीत को अपने कोलाहल में डुबो नहीं सकतीं। उनकी खंजड़ी डिमक-डिमक बज रही है और वे गा रहे हैं-'गोदी में पियवा चमक उठे सखिया, चिहुँक उठे ना!' हाँ, पिया तो गोद में ही है, किंतु वह समझती है, वह अकेली है, चमक उठती है, चिहुँक उठती है। उसी भरे बादलों वाले भादो की आधी रात में उनका यह गाना अँधेरे में अकस्मात काँध उठने वाली विजली की तरह किसे न चौंका देता ? अरे, अब सारा संसार निस्तब्धता में सोया है, बालगोविन भगत का संगीत जाग रहा है, जगा रहा है ! – 'तेरी गठरी में लागा चोर, मुसाफ़िर जाग जरा !'

(i) प्रस्तुत अवतरण में किसका वर्णन है ?

(क) ग्रीष्म की आधी रात का (ख) पावस की आधी रात का

(ग) वसंत की आधी रात का (घ) फागुन की आधी रात का

(ii) भगत जी के गीतों की क्या विशेषता थी ?

(क) गीत बच्चों के लिए होते थे। (ख) सभी उन्हें ध्यान से सुनते थे।

(ग) उनके गीत सभी समझ नहीं पाते थे। (घ) उनके गीतों में ईश्वर के प्रति आस्था तथा प्रेम होता था।

(iii) 'गोदी में पियवा चिहुँक उठे ना!'-पंक्ति के माध्यम से लेखक क्या बताना चाहते हैं ?

(क) अज्ञानता के कारण मनुष्य परमात्मा को अपने से दूर समझता है। (ख) ईश्वर हर मनुष्य के पास है।

(ग) भगत जी के गीत उनके भ्रमों को दूर करता है। (घ) उपर्युक्त सभी।

(iv) 'मुसाफ़िर जाग जरा ...' गीत में 'मुसाफ़िर' कौन है ?

(क) यात्री (ख) राही

(ग) सांसारिक मनुष्य (घ) पर्वतारोही

(v) भगत जी मुसाफ़िर को क्यों जगाना चाहते हैं ?

(क) यात्री अपनी यात्रा पूरी कर सके। (ख) मनुष्य ईश्वर का ध्यान कर सके।

(ग) मनुष्य अपना कार्य पूरा कर सके। (घ) मनुष्य धन कमा सके।

10.(i) कैप्टन चश्मेवाला अपने गिने-चुने फ्रेमों में से एक फ्रेम नेताजी की मूर्ति पर क्यों पहनाता था ?

1

(क) उसके फ्रेम बिक सकें | (ख) लोगों को आकर्षित करने के लिए |

(ग) ताकि मूर्ति सुंदर लगे | (घ) नेताजी की बिना चश्मे की मूर्ति उसे आहत करती थी |

(ii) 'लखनवी अंदाज' के लेखक कौन हैं ?

1

(क) आनंद प्रकाश (ख) स्वयं प्रकाश (ग) रामवृक्ष बेनीपुरी

(घ) यशपाल

11. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए- 3x2=6

(क) 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के आधार पर लक्ष्मण की चारित्रिक विशेषताएं लिखिए |

(ख) निराला ने 'उत्साह' कविता के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के क्या संदेश दिए हैं ? तर्कसंगत उत्तर दीजिए |

(ग) कवि ने फ़सल को हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म कहा है। मिट्टी के गुण-धर्म को आप किस तरह परिभाषित करेंगे?

(घ) 'और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है। या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है उसे विफलता नहीं उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।' संगतकार की मनुष्यता किसे कहा गया है? वह मनुष्यता कैसे बनाए रखता है?

12. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए- 3x2=6

(क) कैप्टन के न रहने पर नेता जी की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा बनाकर किसने लगाया ? उनके द्वारा ऐसा किया जाना देश के लिए किस प्रकार शुभ संकेत देता है ? स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'ये हैं नई कहानी के लेखक।' लेखक यशपाल ने यह कथन किसके लिए कहा और क्यों?

(ग) लेखिका मन्नू भंडारी को नए सिरे से अपने वजूद का अहसास कब और कैसे हुआ ?

(घ) 'दादा की मीठी शहनाई उनके हाथ लग चुकी थी' कथन का क्या आशय है? पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

13. पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों के आधार पर निम्नलिखित में से किन्हीं **दो प्रश्नों** के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए- 3x2=6

(क) भोलानाथ अपने मित्रों के साथ घंटों घर से बाहर खेला करता था | आप अपने मित्रों के साथ कौन-कौन से खेल और किस प्रकार खेलना पसंद करेंगे, जो स्वास्थ्य के लिए लाभकर और मित्रता को बढ़ावा देने वाले हों ?

(ख) "ये देश की आम जनता ही नहीं, जीवन के प्रति संतुलन भी हैं। ये 'वेस्ट एट रिपेईंग' (कम लेना और ज्यादा देना) हैं। कितना कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं" -इस कथन के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि आम जनता की देश की प्रगति में क्या भूमिका है ?

(ग) क्या बाह्य दबाब केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित करते हैं या अन्य क्षेत्रों से जुड़े कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं, कैसे ? अपने विचार प्रकट कीजिए |

रचना और अभिव्यक्ति (20 अंक)

14. निम्नलिखित में से कोई एक पत्र सही प्रारूप में लिखिए- 5

विद्युत आपूर्ति अधिकारी, अ ब स नगर को 100 शब्दों में पत्र लिखकर नगर में की जा रही बिजली कटौती एवं इससे होने वाली परेशानियों का उल्लेख कीजिए तथा इसके त्वरित समाधान का अनुरोध भी कीजिए।

अथवा,

आपके मित्र ने राष्ट्रस्तरीय अंतर्विद्यालयी एथलेटिक्स प्रतियोगिता में 3000 मीटर तथा 5000 मीटर की दौड़ में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। उसे बधाई देते हुए लगभग 100 शब्दों में एक पत्र लिखिए।

15. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक **विषय पर** दिए गए संकेत-बिंदुओं की सहायता से लगभग 100 शब्दों में सारगर्भित अनुच्छेद लिखिए- 6

(क) मानवता: सर्वश्रेष्ठ धर्म

(संकेत- बिंदु- • भौतिकवादी युग • बढ़ता स्वार्थ • प्रकृति से सीख • देने से घटता नहीं, बढ़ता है • दूसरों के लिए जीना ही मनुष्यता • जीवन की सार्थकता परोपकार में ही निहित)

(ख) आत्मनिर्भरता

(संकेत-बिंदु : भूमिका - आत्मनिर्भरता उन्नति का मूल मन्त्र - एक सदगुण - सफलतादायक – समापन)

(ग) अंधविश्वास: भारतीय समाज का कोढ़

(संकेत- बिंदु - • मुख्य कारण : शिक्षा की कमी, सही जानकारी का अभाव तथा धर्म का प्रभाव आदि • वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अपनाना • शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार)

16. किसी प्रसिद्ध अखबार में पत्रकार के रिक्त-पद की पूर्ति के लिए स्ववृत्त (biodata) लगभग 80 शब्दों में लिखिए | 5

अथवा,

आप ज्वर से पीड़ित हैं और स्कूल आने में असमर्थ हैं | तीन दिनों की अवकाश प्राप्ति के लिए प्रधानाचार्य को ईमेल लगभग 80 शब्दों में लिखिए |

17. आपके नगर के बहुत से लोग खुले में कूड़ा फेंककर आस-पास के वातावरण को प्रदूषित कर रहें हैं आप 'जनसेवा संस्थान' की ओर से ऐसे लोगों को जागरुक बनाने के लिए ४०-५० शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए | 4

अथवा,

दीपावली की शुभकामनाएँ देते हुए अपने दादा-दादी जी को 40 शब्दों में संदेश लिखिए |

*** शुभम् अस्तु ***

केन्द्रीय विद्यालय संगठन पटना संभाग

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र (2023-24)

कक्षा- 10वीं पूर्णांक- 80 विषय- हिन्दी समय- 3: 00 घंटे

मूल्यांकन योजना

अपठित बोध (10x1=10 अंक)

1. 1x5 = 5

(i) अमृता शेरगिल के चित्रों में निहित है- कथन पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए-

(ख) कथन (i) और (ii) सही हैं।

(ii) भारत आकर अमृता किससे प्रभावित हुईं ?

(ख) पुराने मिनिएचर चित्रों से

(iii) बसोहली है-

(ग) पहाड़ी मिनिएचर चित्रों की एक शाखा

(iv) हाथियों का चित्र बनाने से पहले उन्होंने क्या किया?

(घ) हाथियों को कई बार चलाकर देखा

(v) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए-

(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

2. 1x5 = 5

(i) इस कविता के केन्द्रीय भाव है-

(ख)कवि ने असफलता से घबराए लोगों को सांत्वना दिया है |

(ii) कवि ने सपनों के बारे में कहा है कि ..... |

(घ) सपने आँख खुलते ही नष्ट हो जाते हैं।

(iii) 'दीयों के बुझ जाने' से कवि का तात्पर्य है-

(ग) आशा की किरणों के नष्ट हो जाने से जीवन के रास्ते समाप्त नहीं होते।

(iv) 'खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर, केवल जिल्द बदलती पोथी' इस पंक्ति के माध्यम से कहा गया है-

(घ) संसार में कुछ भी नष्ट नहीं होता।

(v) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए-

(ग) कथन (A) सही है, और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

अथवा ,

(i) कवि भगवान से क्या माँग रहे हैं?

(क) बहुत अधिक धन (ख) बहुत सारा सुख (ग) बहुत बड़ा घर (घ) कष्ट को सहने की शक्ति

(ii) (ग) कथन (ii) और (iv) सही हैं।

(iii) सुख के दिनों में भी कवि क्या करना चाहते हैं?

(क) सिर झुकाकर ईश्वर के सामने प्रार्थना

(iv) कवि ईश्वर से कष्टों से बचाने की प्रार्थना नहीं करते क्योंकि ..... दिए गए कथनों को पढ़कर सबसे सही विकल्प चुनिए-

(ख) केवल कथन (iii) सही है।

(v) कवि दुख में सांत्वना के स्थान पर क्या माँग रहे हैं?

(ग) आशीर्वाद

व्याकरण बोध (16x1=16अंक)

3. निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) वह कहानी ऐसी-वैसी नहीं, बल्कि बहुत रोचक थी। इसका सरल वाक्य होगा-

(ग) वह कहानी ऐसी-वैसी न होकर बहुत रोचक थी।

(ii) मित्रों के बुलाने पर मैं अपना काम छोड़कर भी खेलने चल देता था। इसका संयुक्त वाक्य होगा-

(ख) मित्र बुलाते थे और मैं अपना काम छोड़कर भी खेलने चल देता था।

(iii) निम्नलिखित वाक्यों में मिश्र वाक्य पहचानकर नीचे दिए गए सबसे सही विकल्प को चुनिए-

(घ) कथन (i), (ii), (iii) तथा (iv) सही हैं

(iv) कॉलम-I को कॉलम-II के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

विकल्प: (ख) 1 – (ii), 2 – (iii), 3 – (i)

(v) कॉलम-1 को कॉलम-II के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

विकल्प: (ग) 1 – (iii), 2 – (i), 3 – (ii)

(vi) निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य सरल वाक्य नहीं है ?

(ग) अंतरा विद्यालय नहीं गई, पर क्यों, यह पता नहीं |

4. निर्देशानुसार 'वाच्य' पर किन्हीं **चार** आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) आइए खेलते हैं। इसका भाववाच्य होगा-

(घ) आइए, खेला जाए।

(ii) चोर के पकड़े जाने पर पुलिस उसे बहुत पीटेंगी। इसका कर्मवाच्य होगा-

(घ) चोर के पकड़े जाने पर पुलिस द्वारा उसे बहुत पीटा जाएगा।

(iii) सचिन द्वारा अनेक शानदार पारियाँ खेलकर क्रिकेट प्रेमियों का दिल जीता गया है। इसका कर्तृवाच्य होगा-

(ग) सचिन ने अनेक शानदार पारियाँ खेलकर क्रिकेट प्रेमियों का दिल जीता है।

(iv) इनमें भाववाच्य का उदाहरण है-

विकल्प: (क) केवल कथन (i) सही है।

(v) कॉलम I को कॉलम II के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

विकल्प: (क) 1 – (ii), 2 – (i), 3 – (iii)

5. निम्नलिखित में किन्हीं **चार** प्रश्नों में वाक्यों के रेखांकित अंशों के पद-परिचय का सही विकल्प चुनिए-

(i) उसने संपूर्ण ग्रंथ पढ़ लिया।

(ख) उसने- पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।

(ii) वह बाजार से गरम पूड़ियाँ ला रहा है।

(ग) बाज़ार से - जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, अपादान कारक।

(iii) आनंद बहुत भाग्यशाली है।

(क) भाग्यशाली - गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, 'आनंद' विशेष्य का विशेषण।

(iv) बच्चा हंस रहा है।

(ग) हंस रहा है - अकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग, वर्तमानकाल |

(v) बच्चे घर में आराम कर रहे हैं।

(ख) बच्चे जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।

6. निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच बहुविकल्पीय प्रश्नों में से किन्हीं **चार प्रश्नों** के उत्तर दीजिए-

(i) "एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास" इन काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार है-

(ग) श्लेष

(ii) "सोहत ओढे पीत पट, स्याम सलोने गात। मनो नीलमीण सैल पर, आप परयौ प्रभात।" इन काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार है-

(क) उत्प्रेक्षा

(iii) "एक साथ रघु ने पैरों से चाँपा अविकल। पितृ-दत्त सिंहासन और सकल अरिमंडल॥" इन काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार है-

(ग) अतिशयोक्ति

(iv) "चिरजीवौ जोरी जुरे, क्यों न स्नेह गंभीर। को घटि या वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।" इन काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार है-

(ख) श्लेष

(v) "जगी वनस्पतियाँ अलसाई, मुंह धोया शीतल जल से" इन काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार है-

(ग) मानवीकरण

साहित्य

7. 5x1=5

(i) कवि की प्रेयसी के कपोलों की क्या विशेषता थी?

(ख) अत्यंत सुंदर व लालिमा लिए हुए

(ii) कवि स्मृति ताज़ा कर रहे हैं?

(घ) अपनी प्रेयसी की स्मृति को

(iii) कवि ने थका पथिक किसे कहा है?

(क) स्वयं को

(iv) कवि शेष जीवन यात्रा किसके सहारे करना चाहते हैं ?

(ग) प्रेयसी की स्मृतियों के सहारे

(v) काव्यांश में किस बात को सच्चाई के साथ अभिव्यक्त किया गया है ?

(ग) कवि के जीवन के यथार्थ और अभावों को

8. (i) गोपियों ने 'व्याधि' और 'करुई ककरी' किसे कहा है ? 1

(क) उद्धव के ज्ञान और योग के संदेश को।

(ii) 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' किस ग्रंथ से उद्धृत है ? 1

(ख) श्रीरामचरितमानस

9. 5x1=5

(i) प्रस्तुत अवतरण में किसका वर्णन है ?

(ख) पावस की आधी रात का

(ii) भगत जी के गीतों की क्या विशेषता थी ?

(घ) उनके गीतों में ईश्वर के प्रति आस्था तथा प्रेम होता था।

(iii) 'गोदी में पियवा चिहुँक उठे ना!'-पंक्ति के माध्यम से लेखक क्या बताना चाहते हैं ?

(घ) उपर्युक्त सभी।

(iv) 'मुसाफ़िर जाग जरा ...' गीत में 'मुसाफ़िर' कौन है ?

(ग) सांसारिक मनुष्य

(v) भगत जी मुसाफ़िर को क्यों जगाना चाहते हैं ?

(ख) मनुष्य ईश्वर का ध्यान कर सके।

10. (i) कैप्टन चश्मेवाला अपने गिने-चुने फ्रेमों में से एक फ्रेम नेताजी की मूर्ति पर क्यों पहनाता था ? 1

(घ) नेताजी की बिना चश्मे की मूर्ति उसे आहत करती थी |

(ii) 'लखनवी अंदाज' के लेखक कौन हैं ? 1

(घ) यशपाल

11. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए- 3x2=6

(क) लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ-

- लक्ष्मण उग्र स्वभाव के हैं।
- वे वीर एवं साहसी हैं।
- वे परशुराम के क्रोध और फरसे से नहीं डरते।
- उनकी भाषा व्यंग्यपूर्ण है।
- वे किसी भी प्रकार के अन्याय को सहन नहीं कर पाते।
- वे स्वभाव से तर्कशील हैं।

(ख) 'उत्साह' कविता के माध्यम से 'निराला' समाज में परिवर्तन एवं नवजीवन लाना चाहते हैं। समाज में क्रांति और उत्साह की भावना का संचार करना चाहते हैं। इसके लिए वे बादल को क्रांति का सूत्रधार मानते हैं। उनके माध्यम से वे जोश, उत्साह, पौरुष का संचार करना चाहते हैं। बादल के 'गरजने ' से ही क्रांति का संदेश जन-जन तक पहुँचेगा। बादल का बरसना उसके शांत रूप का प्रतीक है जबकि वे बादल के गरजने से क्रांति की चेतना को जागृत करना चाहते हैं।

(ग) मिट्टी का गुण-धर्म है- उसमें मिले हुए खनिज पदार्थ, प्राकृतिक तत्व, उसकी उपजाऊ शक्ति और उसके वे विशेष गुण, जो मिट्टी को उर्वरा बनाते हैं और फसलें उगाने में सक्षम होते हैं।

(घ) संगतकार की आवाज़ में एक झिझक साफ़ महसूस की जा सकती है। वह लगातार यह भी कोशिश करता है कि उसका स्वर मुख्य गायक के स्वर से कहीं ऊँचा न हो जाए, परंतु यह उसकी असफलता नहीं है, न ही कमज़ोरी और न ही हीनता; अपितु यह तो उसकी मनुष्यता है, जिसके पीछे यही भावना छिपी रहती है कि दूसरे को हीन दिखाकर या दबाकर अपनी महानता प्रदर्शित करना मनुष्यता नहीं है। उसकी स्थिति या उसके स्वार्थहीन साथ का इसी दृष्टि से मूल्यांकन करना चाहिए। मुख्य गायक का प्रभाव बढ़ाने के लिए ही वह ऐसा करता

है, जिससे उसके मानवतावादी विचारों का बोध होता है।

12. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए- 3x2=6

(क) बच्चों द्वारा मूर्ति पर लगाया गया सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि हमारी आनेवाली पीढ़ी में भी देश-प्रेम की भावना अभी जीवित है। इस देश के निर्माण में लोग अपने-अपने तरीके से योगदान देते हैं। बड़े ही नहीं, बच्चे भी इसमें शामिल हैं। देशभक्त कैप्टन मरकर भी उस कस्बे के बच्चों के रूप में जिंदा है।

(ख) लेखक यशपाल ने यह कथन नई कहानी के लेखकों के लिए कहा है | उन्होंने एक तरह से उनको लखनवी नबावों जैसा वायवीय बताकर उनका तिरस्कार किया है | लेखक जमीन से जुड़े यथार्थवादी कहानीकार थे और कहानी कला के पारंपरिक तत्वों को महत्त्व देते थे | इस व्यंग्य के द्वारा उन्होंने नई पीढ़ी के कहानीकारों के साथ अपनी असहमति और अपना विरोध दर्ज किया है |

(ग) सन् 1944 में बड़ी बहन सुशीला के विवाह हो जाने तथा दोनों बड़े भाइयों द्वारा आगे की पढ़ाई के लिए बाहर चले जाने पर लेखिका को नए सिरे से अपने वजूद का अहसास हुआ। उस समय उनके पिता ने पहली बार लेखिका की तरफ अपना ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने मन्नू जी को घर-गृहस्थी के कामों से दूर रखकर उन्हें देश तथा समाज की तत्कालीन घटना चक्रों की जानकारी हासिल करने की सलाह देकर उन्हें प्रबुद्ध नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(घ) बिस्मिल्ला खाँ के नाना बहुत बड़े शहनाईवादक थे। उनके नाना की शहनाई की मीठी तान उन्हें चार साल की उम्र में भी आकर्षित करती और इसलिए जब उनके नाना रियाज़ के बाद उठकर चले जाते, तो वे छोटी-बड़ी शहनाइयों में से नाना की मीठी वाली शहनाई ढूँढ़ने लगते। उन्हें लगता कि उसी शहनाई से मीठी तान निकलती है। बड़े होकर सुलोचना की फिल्म देखने के लिए कमाई हेतु वे बालाजी मंदिर पर रोज़ शहनाई बजाने लगे। रोज़ के रियाज़ ने उनकी शहनाई की तान को भी उतना ही मीठा बना दिया, जितना उनके नाना की शहनाई में था।

13. पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों के आधार पर निम्नलिखित में से किन्हीं **दो प्रश्नों** के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए- 3x2=6

(क) मैं क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, खो-खो, रस्सी कूदना, आदि खुले मैदान में खेले जाने वाले खेल-खेलना पसंद करूंगा, जिनसे स्वास्थ्य वृद्धि होगी। कुछ समय प्रकृति के निकट रहने तथा शुद्ध वायु के सेवन का भी मौका मिलेगा। खेल के सभी नियमों का पालन करूँगा। कभी किसी के प्रति ईर्ष्या या शत्रुता का भाव नहीं रखूँगा। मिलजुलकर तथा सहयोग की भावना से खेल खेलूँगा।

(ख) प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत हो, लेखिका अचानक चौकती हैं, जब वह औरतों को शारीरिक श्रम करते देखती हैं। ये श्रम करने वाले अपने जीवन को संकट में डालते हैं तथा लोगों के लिए सुखों के साधन जुटाते हैं। मजदूर, किसान, बड़ी-बड़ी सड़कें व पुल बनाने वाले, बड़े-बड़े भवन बनाने वाले कितना श्रम करते हैं और बदले में इन्हें कितना कम पैसा मिलता है। यदि ये न हों, तो हम जीवन के सुख से वंचित हो जाएँ। ये श्रम करने वाले दिन-रात एक करके, भूखे रह, सुख-सुविधाओं से वंचित जीवन व्यतीत करते हैं। इनका श्रम देश की आर्थिक प्रगति में भी सहायक होता है। हमारे देश की जनता बहुत कम पारिश्रमिक लेकर देश की प्रगति में अहम भूमिका निभाती है।

(ग) बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित नहीं करते हैं, बल्कि अन्य क्षेत्रों से जुड़े कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं, जैसे-नृत्य करने वाले, गायक, अभिनेता-अभिनेत्रियाँ, हास्य कलाकार आदि दर्शकों, आयोजकों, श्रोताओं और निर्माता-निर्देशकों के कहने पर भी कला-प्रदर्शन करते हैं।

रचना और अभिव्यक्ति (20 अंक)

14. पत्र-लेखन

- आरम्भ और अंत की औपचारिकताएं = 1 अंक
- विषयवस्तु = 2 अंक
- भाषा = 1 अंक
- प्रस्तुति = 1 अंक

15. अनुच्छेद लेखन

- विषयवस्तु = 3 अंक
- भाषा = 1 अंक
- प्रस्तुति = 2 अंक

16. ईमेल लेखन

- प्रारूप = 1 अंक
- विषयवस्तु = 2 अंक
- भाषा = 1 अंक
- प्रस्तुति 1 अंक

स्ववृत्त लेखन

- प्रारूप = 2 अंक
- भाषा = 1 अंक
- प्रस्तुति = 2 अंक

- विषयवस्तु = 2 अंक
- भाषा = 1 अंक
- प्रस्तुति = 1 अंक

17. विज्ञापन या सन्देश लेखन

****